मानव मन्दिर

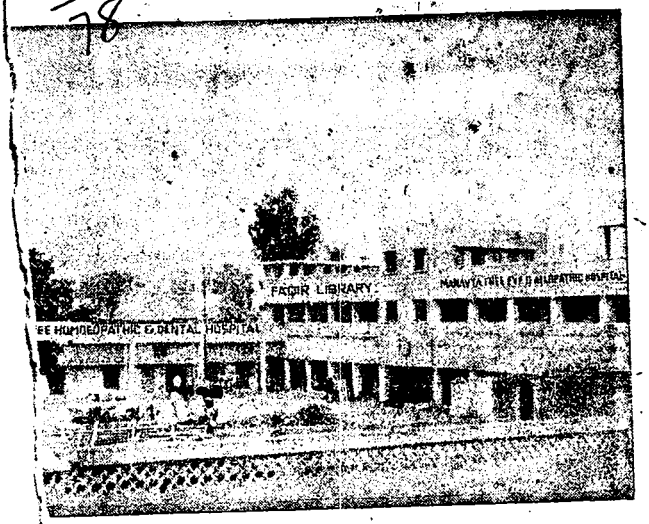

FORM IV

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiar
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshia
Editor's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutheri Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	Faqir Library Chari Trus Hoshiarpur.

I, M. R. Bhagat hereby declare that the part given above are true to the best of my knowled belief,

Signature of Pul

Dated : 20-6-78

Printed and Published by M. R. Bhagat at Sudhakar P Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, H

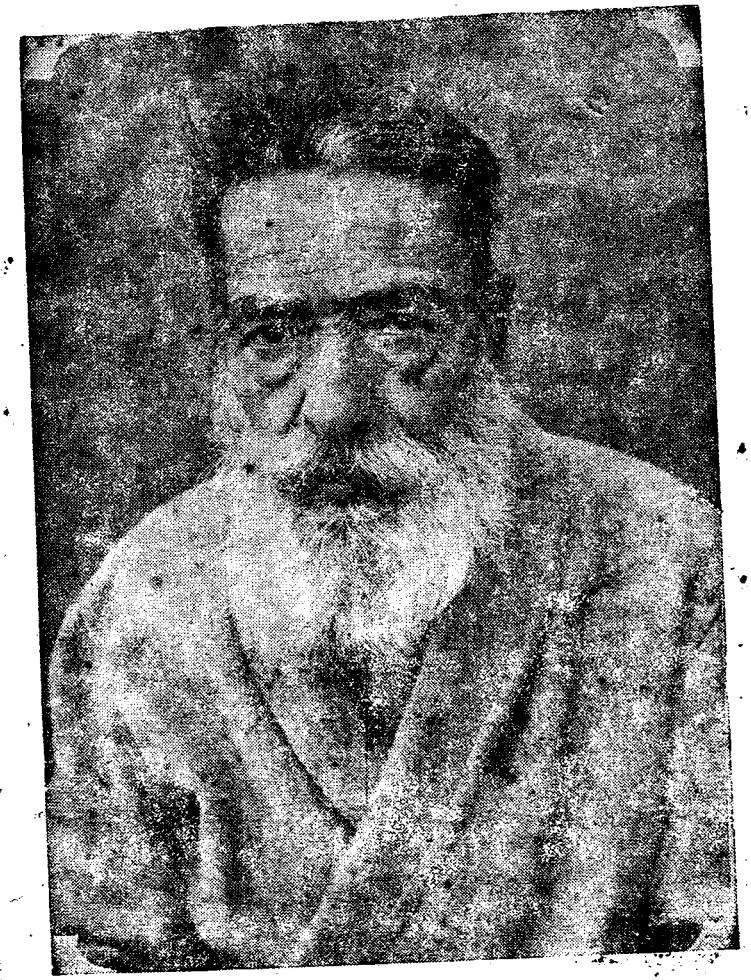

परमसन्त, परमदयाल

श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

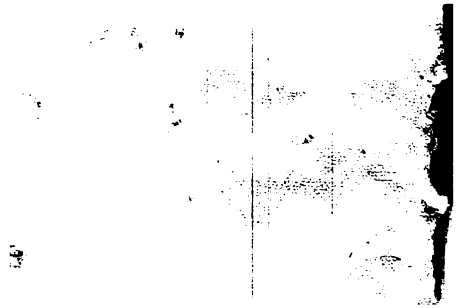

मासिक—

मानव मन्दिर

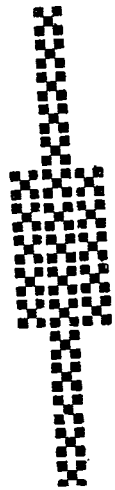

सम्पादक :—M. R. Bhagat
P. S. E (Retd)

वर्ष ५ | सोमवार १० जुलाई १९७८ | संख्या ३

प्रार्थना

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब चन्डीगढ़।

राधास्वामी, प्रार्थना एक बड़ा भारी शस्त्र है। इस शस्त्र मे बड़ी भारी शक्ति है और इस शक्ति में जबरदस्त असर है। प्रार्थना से पत्थर मोम हो जाते हैं और अपराधी झुक जाते हैं। इस शक्ति का अन्दाज़ा लगाना असम्भव है। बहुत कम लोग इस शक्ति से जानकार हैं और जो जानते हैं, इन में से बहुत लोग, इस शक्ति से लाभ उठाते हैं।

हर एक प्राणी प्रार्थना कर सकता है, हर एक को प्रार्थना करने का अधिकार है। जो मालिके कुल को अपना पिता समझता है वह अपने पिता से क्यों न अपनी ज़रूरतों की मांग करेगा और उसका पिता क्यों न उसकी प्रार्थना को मजूंर करेगा। कबीर साहिब फरमाते हैं :—

दास दुखी तो मैं दुखो, आद अन्त तिहों काल।
पलं में प्रकट होय कर, छिन में करूं निहाल॥

देखते हो, कैसे वह आता है, फरमाते हैं एक पल में आ मौजूदा होता है। वह अपने दास को दुखी नहीं देख सकता, इसलिए ऐसे जीव को प्रार्थना करनी चाहिये। जो जीव दुखी है, प्रेमी है, विश्वासी है। ऐसा भक्त जिस के दिल में किसी से घृणा न हो, चोरी न करता हो, किसी को धोखा न देता हो, झूट न बोलता हो, किसी का दिल न सताता हो, किसी के धन पर अपना अधिकार न जिमाता हो, निर्भय हो. दूसरों की ग़लती क्षमा करने वाला हो। इन नियमों का मालिक इस शस्त्र की शक्ति का प्रयोग कर सकता है और वह ज़रूर सफल होगा, कर के देखें।

प्रार्थना उस समय करे, उस समय अपने पिता से सहायता की पुकार करे, जब दुख सहन करने की शक्ति न रहे, दिल बहुत बेचैन हो, संकट में फंसा हुआ हो, लाचार हो, विवश हो, सहायता की आशा न हो, निराश हो चुका हो। उस समय अगर प्रार्थना की जावेगी, उस की प्रार्थना अवश्य स्वीकर होगी और अगर प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई तो समझ लो

कि आप की प्रार्थना में कोई त्रुटि रह गई है, हज़रत ईसा मसीह फरमाते हैं :--"Before they call I will answer while they are yet speaking I will hear" मालिकेकुल फरमाते हैं :--तुम्हारी प्रार्थना अभी खतम भी नहीं हुई कि मैंने तेरी प्रार्थना सुन ली और तेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। आप एक कदम उस की तरफ बढ़ो, वह दो कदम तुम्हारी तरफ आगे आ जायेगा।

प्रार्थना के लिये रिश्वत की जरूरत नहीं भेंट की आवश्यकता नहीं, मालकेकुल तुम्हारी भेंट का भूखा नहीं। हां दान की महिमा भारी है। सुनिये आप को एक कहानी सुनाता हू. याद आ गई। किसी भक्त ने हजरत मसीह को खाने की दावत दी, खाना तैयार कर लिया गया, भक्त जी हज़रत की प्रतीक्षा में बैठे हैं बारह बज गये, एक बज गया, दो बज गये हज़रत न पधारे यह बेचारा भक्त बैठा प्रतीक्षा करता रहा, प्राथना करने लगा इतने में एक फकीर ने आवाज़ दी भूखा हू रोटी दो। भक्त ने सोचा चलो, इस को क्यों

भूखा जाने दूं उस फकीर को पेट भर कर खाना खिला दिया फकीर चला गया। लेकिन हज़रत न पधारे। भक्त ने हज़रत से विनती की मैंने खाना आप के लिये तैयार कर रखा था, मैं आप की पतीक्षा करता रहा, परन्तु आप नहीं आये तो हज़रत ने उत्तर दिया कि आप के घर खाना खा आया था, वह फकीर मैं ही था जिस को तुम ने खाना खिलाया था, किसी ने खूब फरमाया है :—

आह बन किसी की, दी दस्तक तेरे दर पर।
होगा दीदार खुदा का, हमदरद बन के देख ॥

अगर मालिक के दर्शन करना चाहते हो, किसी भूके को खाना खिला कर देख, क्योंकि मालिक ने तेरा दरवाजा खटखटाया है, लेकिन किसी दीन की आह बन कर, किसी दुखी जीव के भेस में आया है, हमारे दरवाजा पर।

प्रात: प्रार्थना किस तरह करनी चाहिये, प्रार्थना प्रात: शाम हर रोज़ करनी चाहिये, नागा बिल्कुल न हो, सच्चे दिल से हो, प्रार्थना करते समय अपने इष्ट देव को अपने सामने समझ लो। यह विश्वास कर लो कि

वह तुम्हारी प्रार्थना सुन रहा है। सच्चाई इतनी हो कि आंखों में प्रेम के आसू आ जाये, गम्भीर वृत्ति से की जावे। कमरा के दरवाज़े बन्द कर लो कोई दूसरा तुम्हारे पास न हो, दिल खोल कर ऊंची ऊंची आवाज़ में प्रार्थना करो, जैसे बच्चा अपनी माता को पुकारता है। प्रार्थना के समय बच्चा बन जाओ। बच्चा दुनियां में सब से अधिक शक्ति शाली अपनी माता को ही समझताहै। बच्चे को डर लगे, कोई सांप आ जाये, कोई आदमी इस को पीटने आये, वह एक दम अपनी माता की गोद में छुप जायेगा, क्योंकि उस ने माना हुआ है, जाना हुआ है कि उस की माता इस संसार में सब से शक्ति शाली है। वही केवल उस की रक्षा कर सकती है। मालिके कुल को ऐसा जान कर प्रार्थना करो, हज़रत मसीह फ़रमाते हैं :—

"Ask and it shall be given to you. Seek and ye shall find Knock and it shall be opened unto you."

मांगो, तुम को मिलेगा, खोजो पाओगे, दरवाज़ा खट खटाओ, दरवाज़ा तुम्हारे लिये खुल जावेगा,

शर्त है आप का इष्ट देव एक हो, इसी एक को मालिके कुल का रूप समझता हो मानता हो, उसके आगे प्रार्थना की जावे। एक समय केवल एक चीज़ माग़ी जाये, वह सब कुछ देता है, धन देता है, पुत्र, संतान देता है, स्वास्थ्य प्रदान करता है, संसार के सब पदार्थ देता है। बीमारी दूर करता है, सब प्रकार की इच्छा पूरी करता है। यदि इच्छा शुभ हो, तो अध्यात्मिकता मिलती है, शान्ति मिलती है, मनो-कामना पूरी होती है, आवागवन से छुटकारा मिलता हैं, दर्शन देता है, आप को और क्या चाहिये। प्रार्थना से मुरदे जाग उठते हैं। बाबर बादशाह की कहानी आप ने सुन रखी होगी, किस तरह से उस ने प्रार्थना की जब हमायूं बच गया और बाबर मर गया। प्रार्थना से वर्षा हो जाती है, मैं अपनी आखो देखी बात लिख रहा हू। यह १९०६ या १९०७ की घटना है जब वर्षा नहीं हो रही थी, एक साधु ने लोगों को इकट्ठा किआ, यज्ञ किया। सब ने मिल कर प्रार्थना की, मालिक की दया हो गई और वर्षा हो गई, परन्तु साधु गायब था, किधर गया कुछ पता नहीं

यह ज़िला जालन्धर के एक गांव की घटना है। मेरी उमर उस समय ६ वर्ष की थी, अथर्व वेद फरमाता है कि मालिक अपने भक्तों की कामनायें पूरी करता है।

समझ की अन्तिम अवस्था

सत्सग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक २६-३-७८

साधो शब्द सभन से न्यारा, जानेगा कोई जाननहारा।
जोगी जती तपी सन्यासी, अंग लगावै छारा।
मूल मंन्त्र सत्गुरु दाया बिनु, कैसे उतरै पारा॥
जोग जज्ञ व्रत नेम साधना, कर्म धर्म व्योपारा।
सो तो मुक्ति सभन से न्यारी, कस छूटै जम द्वारा।
निगम नेति जाके गुन गावै, संकर जोग आधारा।
ब्रह्मा बिस्नु जेहि ध्यान धरतु हैं, सो प्रभु अगम अपारा।
लागा रहै चरण सत्गुरु के, चन्द चकोर की धारा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नष सिष शब्द हमारा।

राधास्वामी। आप लोगों ने यह शब्द सुना। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तू लोगों को उपदेश

करता है तूने क्या समझा ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं। मुझे गुरु बनने की हवस नहीं थी। मैं एक साधारण हिन्दु था। ब्रह्मण के घर पैदा हुआ था। ईश्वर, ब्रह्म, पारब्रह्म को मानने वाला था। मेरा भाग्य मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गया। उन्होंने मुझे यह सन्तमत दिया। कबीर साहिब, नानक साहिब और राधास्वामी दयाल के गुण गाये और कहा कि इनके मार्ग पर चलो तुम मंजल पर पहुंच जाओगे। क्या मैं अपनी आत्मा से पूछने का अधिकार नहीं रखता कि फकीर चन्द ! क्या तू मंज़िल पर पहुंच गया। यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं। आपको कुछ नहीं कहता। मैंने क्या समझा ? मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने शिक्षा को बहुत कुछ बदला है।

कल रात को डाक्टर जगजीतसिंह जो कभी हमारा Finance Minister था ४½ बजे मेरे मकान

पर आया। उसके साथ एक अमरीकन था। मैंने उस अमरीकन को कहा, तू इनके पीछे फिरता है तेरा कितना ब्रह्मचर्य गिरा है? कहने लगा बारह साल मैंने बुरी तरह गिराया है। यह अनुभव मुझे हो गया कि जिन आदमियों के ब्रह्मचर्य गिर चुके हैं उनको जल्दी शान्ति नहीं मिलती। एक तो मेरे अपने जीवन का अनुभव है और मैंने दूसरों की भी यही दशा देखी।

अब रह गया यह शब्दयोग। सब संसार नाम जपता है। कोई मतनाम जपता है और कोई पांच नाम जपता है, कोई सारंग सारंग जपता और कोई कुछ जपता है। मैं आपनी आत्मा से पूछना चाहता हूं फकीर चन्द! मर जायेगा। यह चार दिन का जीवन है तेरे साथ किसी ने नहीं जाना है अगर आज तू लोगों से मान प्रतिष्ठा धन लेगा तो यह तेरे साथ नहीं जायेगा। तूने कौन सा न्यारा शब्द समझा है।

साधो शब्द सबन से न्यारा, जानेगा कोई जाननहारा।

फकीर चन्द! जो कबीर ने कहा है कि "शब्द सबन से न्यारा है" तू इस शब्द को जानता है? तूने इस शब्द को समझा है कि वह क्या है? यह

एक प्रश्न है तो मैं अपनी आत्मा से अपनी ही आत्मा को बताने के लिए करता हूं। आप लोग आते हैं आपका आभारी हूं कि आप लोग मुझे मेरे कर्म काटने में सहायता करते हैं। मैंने बहुत शब्द सुने, घण्टा संख, रारंग सारंग, ये जितने शब्द मैंने सुने, वह शब्द सब से न्यारा है। या तो यहां यह लिखा होता कि वह शब्द राम है, राधास्वामी या घण्टा है तो मैं मान लेता। मगर वे तो कहते हैं कि वह शब्द सबसे न्यारा है वो मुक्ति देता है। वह सबसे न्यारा शब्द ज्ञान और अनुभव है।

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा॥

मैं अपना अनुभव वर्णन करता हूं और चाहता हूं कि इस समय के जितने राधास्वामीए, नानक पंथी या बड़े २ महात्मा जो गुरु बने हुए हैं जो शब्दयोग की शिक्षा देते हैं अगर मैं ग़लत हूं तो मेरा खण्डन करें। मैं कोई दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है यही ठीक है। मेरी समझ में जो आया है अपनी आत्मा को तसल्ली देने के लिए यह बात कहता हूं क्योंकि मैं तो अपने घर जाना चाहता हूं। मैं चाहता हूं मैं फिर जन्म न लूं। तुम लोग संसार

चाहते हो, मैं नहीं चाहता। मुझे विश्वास हो गया कि यह संसार दुख की खान है। यहां तो जन्म लेना ही महापाप है। सन्तान पैदा करना महादोष है। हम तो आप यहां फंसे हुये हैं संतान पैदा करके उनको भी फंसाते हैं। वह शब्द क्या है जो सबन से न्यारा है? हां है, यह वह शब्द है जिसको सुन लेने से हमारे अन्तर ईश्वर को मिलने, गुरु की सेवा करने, नेकी धर्म-कर्म करने की इच्छा नहीं रहती। यह मेरी समझ में आया है। क्यों? कबीर साहिब की जबानी सुनो :-

योगी जती तपी सन्यासी, अंग तगावै छारा।
मूल मंत्र सतगरु दाया बिनु, कैसे उतरै पारा॥

लोग इन शब्दों को पढ़कर गुरुओं के पीछे दौड़ते हैं। गुरु दया करें और हमें वह शब्द लखावें। यह ठीक है कि गुरु दया करता है मगर आजकल के गुरु नहीं करते। क्यों? पहले तो आप लोगों को उस शब्द की आवश्यकता नहीं। तुम लोग मेरे पास आते हो क्या शब्द प्राप्ति के लिए आते हो? यह जवान लड़का आया है, क्या सारशब्द के लिए आया है? यह सांसारिक इच्छाओं के लिए आया है। तुममें से

कोई पुत्र मांगता है कोई धन और कोई कुछ और मांगता है। आप लोगों के लिए यह संतमत नहीं है। संतमत केवल उन लोगों के लिए है तो हकीकत, सच्चाई और असलियत को जानने के इच्छुक हैं और उनको यह अनुभव हो गया है कि इस संसार में दुख ही दुख हैं। हमारा असली घर कहां है ? जो स्थाई (Permanent) शान्ति चाहते हैं उनके लिए यह संतमत है सर्वसाधारण के लिए संतमत नहीं है। सर्वसाधारण के लिए वेदमार्ग है कि जैसा ख्याल है वैसा हाल है, जैसी मति वैसी गति। तुम सारी आयु टकरें मारते रहो तुम्हें वह शब्द प्राप्त नहीं होगा।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द! वह शब्द तुमने देखा है ? सुना है ? गुरु बन गया है, संसार को सत्संग कराता है, किताबें लिखता है। क्या मैं अपनी आत्मा से पूछने का अधिकार नहीं रखता कि क्या मुझे वह शब्द मिल गया ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। इसवास्ते जो कुछ मैंने समझा है वह कहता हूं। जब से तुम लोगों से सुना है कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है। हज़ारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं। मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है उनको दवाई बता जाता है और

उनके कई काम बन जाते हैं लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ उनके अन्तर प्रकट सोता है वह सच्चाई नहीं है। वह उनके अपने ही विश्वास श्रद्धा और विचार का फल है तो फिर मैं आगे तलाश करता हू। किसकी ? जो रूप रंग नहीं रखता। जगजीतसिंह के अन्तर लण्डन और कनेडा में मेरा रूप प्रकट हुआ। यही जगजीतसिंह, जो रात को आया है इसने मुझे दो पत्र लिखे थे। वह लिखता है कि मैं लण्डन में प्रातः $4\frac{1}{2}$ बजे उसके कमरे में दाखिल हुआ और उसने मुझे पूछा कि मैं वहां सिख स्टेट के लिए काम करना चाहता हूं। आप ने कहा कि तू अवश्य सफल हो जायेगा। वैसाखी आई है तुमने कुछ धन नहीं भेजा। उसने लिखा मैंने अपनी स्त्री तारो को गांव टान्डे होशियारपुर को लिख दिया है वह आपको रुपये भेज देगी। उसकी स्त्री यहां आई और एक सौ रुपये दे गई, एक बार उसने फिर लिखा कि आप मानें या न मानें मैं नार्थ केनेडा जा रहा था। रास्ते में वर्फ पड़ी हुई थी। मैं तूफान में घिर गया जिससे हैली कोपटर को तूफान में उतरना पड़ा, हैलीकोपटर छोटा सा था

जिस में हम दो आदमी एक मैं, और दूसरा ड्राइवर था। हमारे पास चाय आदि कुछ भी न था। सरदी लग रही थी। वायु चल रही थी। वर्फ़ पड़ रही थी। सामने एक रोशनी का गोल दृश्य दिखाई दिया जिस में मैं (बाबा फकीर) बैठा हुआ था, मैंने उसको बुलाया और कहा कि यहां से दस बारह गज़ के फासले पर (Red Indians) रहते हैं, वहां चले जाओ, दो घण्टे के बाद आसमान साफ हो जायेगा, आप कहेंगे आप वहां नहीं गये लेकिन हम ने आपको वहां देखा है। जब मैं ऐसी-२ बातें सुनता हूं तो क्योंकि मैं न कहीं जाता हूं और न ही मुझे कुछ पता होता है तो मैं आगे खोज करने के लिए विवश हूं कि नहीं। मैं तो राम को मिलने निकला था। इसलिए मुझे विश्वास होना चाहिए कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह है नहीं ये केवल विचार और सकल्प हैं (Suggessions & Impressions) हैं जब मैं अभ्यास करता हूं तो इन रूप रंगो को छोड़ जाता हूं, फिर क्या रह जाता है, प्रकाश और शब्द, फिर मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और

शब्द को सुनती है, मेरी समझ अनुसार वह चीज़ सबसे न्यारी है :-

साधो शब्द सभन से न्यारा, जानेगा कोइ जाननहारा ।।

मुझे वहां जाकर क्या हो जाता है ? हर रोज़ तो जाया नहीं जाता । जब कभी वहां जाता हूं और उस शब्द को सुनता हुआ देखना चाहता हू जिसमें से शब्द निकलता है तो सब कुछ भूल जाता हूं । न वहां 'मैं; न तू, न राम, न गुरु, न स्वामी और न सेवक है । मेरी 'मैं; ही समाप्त हो जाती है । एक तत्व रह जाता है । मैं इसका नाम शायद मुक्ति,, अंश का पूर्ण होना समझता हूं ? हो सकता है कि मेरी समझ ग़लत हो मगर राधास्वामीमत की आरती की बाणी कहती है :—

सुरत हुई अतिकर मगनानी ।
पुरुष अनामी जाये समानी ।।

अनामी पुरुष में समा जाने का क्या भाव है ? यही कि न उसको शरीर, न प्रीतम, न अपने आप का कि मेरा रंग रूप क्या है, न गुरु न भगवान का पता है । जो मेरा अनुभव है उसकी पुष्टी बाणी द्वारा

होती है और मुझे विश्वास हो जाता है कि मैं ठीक हूं, ग़लती पर नहीं हूं। यही कबीर साहिब ने कहा है :—

सखिया वा घर सब से न्यारा।
जहाँ पूर्ण पुरुष हमारा॥

आगे लिखते हैं :—

जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं कहे कबीर हम जाना।
हमरी सैना जो कोई समझे पावे पद निर्वाना॥

और यही स्वामी जी ने चेत महीने के अन्त में लिखा हुआ है :—

नहीं सतनाम न नाम अनामी।

अन्तिम अवस्था में न सत नाम है, न नाम है और न अनामी है।

मैं आखरी शब्द को क्या समझता हूं :—

जानेगा कोई जाननहारा।
साधो शब्द सभन से न्यारा।

वह शब्द है। कौन सा शब्द ? जो न शरीर, न मन और न आत्मा से जपा जाता है। इसका प्रमाण मुझे केवल इस विचार से मिला कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। इस बात का परदा रख कर इन

धर्म वालों ने हम लोगों को लूटा है और अपना जानवर बनाया हुआ है। मैं इन लोगों को भी दोषी नहीं मानता क्योंकि आप लोग इस शिक्षा के अधिकारी नहीं। मैंने इस बात को जानने के लिए सारी आयु व्यतीत कर दी कि सच्चाई क्या है। कौन हिन्दू सुन सकता है कि राम कृष्ण काल के अवतार थे अमुक धर्म भी आधूरा है, अर्थात सब का खण्डन। आप सिख हो, तुम्हें तनिक भी कोई गुरु ग्रन्थ साहिब या गुर गोबिन्दसिंह साहिब के विरुध कहदे तुम सिर फाड़ने को दौड़ते हो। अगर कोई मुसलमान को कुरानशरीफ के विरुध कहता है तो वह तुरन्त सिर फाड़ने को तैयार हो जाता है। मैंने ये कबीर साहिब के शब्द सुने दिल में दुख होता था। मगर क्योंकि मेरा दाता दयाल पर विश्वास टूटता नहीं था। वाणी से भेद नहीं मिलता था। आज्ञा थी कि गुरु सेवा करो। मुझसे जितनी हो सकी की। मैंने सोने के ताज, चान्दी के हुक्के, रेशमी कपड़े और सिंघासन बनवाये अर्थात पूरी सेवा की मगर बात समझ में नहीं आती थी। मैं रोया करता था कि कहां फस गया। दाता दयाल जी महाराज ने दया की और

काम दिया, "कहा;; तुझे सच्चा गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा, आप लोगों की दया से मुझे पता लग गया कि सार शब्द क्या है जिसको सुनने के बाद मानव की अपनी हस्ती अर्थात (Individuality) समाप्त हो जाती है। अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

सुरत हुई अतिकर मगनानी।
पुरुष अनामी जाये समानी॥

वही कबीर साहिब ने कह दिया :—

जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं।
कहैं कबीर हम जाना।

वही राधास्वामी दयाल ने कह दिया :—

न सत नाम न नाम अनामी।
जोगी जती तपी सन्यासी अंग लगावें छारा।
मूल मन्त्र सतगुरू दाया बिनु कैसे उतरें पारा॥

तुम लाख शब्द अभ्यास करते हो अगर तुम्हें पूरा गुरु, नहीं मिला तो तुम पार नहीं हो सकते। बिल्कुल गलत है। कभी मैं यह सुना करता था। मैं सदैव कहता हूं कि मैंने नई थ्यूरी निकाली है। योरप (अमरीका) के लोगों ने तजुर्बे किये हैं। उन्होंने

मरने वाले को Sensetive scale पर रखा अर्थात ऐसा तराजु जिसमें अगर माशा रत्ती, आध रत्ती का भी अन्तर हो तो वह बता सके। जब जीव मरा, तो जो कुछ अन्तर से निकला उन्होंने सक्रीन पर उसे देखा। मरने वाले का शरीर कोई दस, कोई पन्द्रह और कोई बीस ग्राम कम हुआ। इससे सिद्ध हुआ कि जो चीज़ अन्तर से निकली वह दस. पन्द्रह और पचीस ग्राम भारी थी। जो चीज़ भारी होगी उसे ज़मीन की कशश खींचेगी, कोई रोक नहीं सकता तुमने लाख शब्द अभ्यास किये हुये हैं, कानों में उंगलियां डाली हुई हैं, किसी गुरु या अवतार के के पांव धोकर पिए हैं, लाख दान किये हुये हैं अगर अन्त समय तुम्हारी Attachment किसी भी चीज़ के साथ होगी तो क्योंकि तुम्हारा शरीर भारी होगा तुम पार नहीं जा सकते चाहे कितने भी जोगी जती और सन्यासी बने हुये हो। तुम्हारा आवागवन समाप्त नहीं होगा। तुम्हें फिर आना पड़ेगा क्योंकि ज़मीन की कशश तुम्हें खीचेगी। मैं ३६ साल से काम कर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि अगर मैं ग़लत

हूं तो वर्तमान महात्मा प्रमाण देकर मेरा खण्डन करें मुझे कोई दुख न होगा क्योंकि मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है, मेरा अनुभव है। अगर स्वामी दयानन्द जी को सत्यार्थ प्रकाश, हज़रत मुहम्मद साहिब को कुरान सरीफ, दाता दयाल को पांच हज़ार किताबें और सन्त कृपालसिंह को गुरमत सिद्धान्त लिखने का अधिकार था तो मुझे भी ९२ साल की खोज लिखने का अधिकार है कि मैंने अपने जीवन में क्या देखा ? उन्होंने तो गुरु ग्रन्थ साहिब पहली बादशाही, दूसरी तथा तीसरी बादशाही यह कह गई, गीता ने यह कहा। मेरा दिल उचाट हो गया। क्यों ? क्योंकि जिस अर्जुन ने कृष्ण के मुख से १८ अध्याय सुने, भागवत कहता है वह नर्क में गया। पांचों पाण्डव और सारे कौरव भी नर्क में गये ऐसा भागवत में लिखा है। युधिष्टर, जिसने सारी आयु सच्च कहा, थोडी सी पालोसी के कारण 'अश्वस्थामा हता नः जानति नरो वा कुज़रा' उसको भी धर्मराज ने $2\frac{1}{2}$ घड़ी का नर्क दिया। जब वह $2\frac{1}{2}$ घड़ी का नर्क भोगने के लिए गया तब वह अर्जुन आदि

सबको मिला। यह वह कहते हैं। अब मैं गीता का का हवाला किस लिये दूं जब मैं देखता हूं कि गीता का सुनने वाला भी नर्क में गया और युधिष्टर भी नर्क में गया। आप लोग आते हैं अगर मैं आपको सच्चाई नहीं बताता तो मेरी क्या दशा होगी। जो कुछ मैंने समझा है अगर यह ठीक है और यही कुछ पिछले और मौजूदा गुरुओं के साथ होता है तो ये सब बजाये सतलोक के नर्क में होंगे जैसे कौरव पाण्डव नर्क में गये। हजारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं। मेरा रूप उनको दवाई बताता है। उनकी बीमारी दूर हो जाती है। मेरे बाप को पता नहीं होता कि यह क्या खेल है, मैं नहीं समझ सका। जब कभी सोचता हूं कि बात क्या है तो दिल में उदासी आ जाती है फिर मैं सोचता हूं इन धर्मों में कहां फंस गया। अगर मैं इन धर्मों का पैरोकार न होता, अगर मैं किसी भी धर्म को न मानता तो अच्छा होता। क्या कहू मैं हिन्दु हू। गीता को लिए फिरते हैं। गीता को सुनने वाला तो नर्क में गया। वह गीता हमारा क्या बनायेगी। जो कुछ बनेगा मानव के अपने कर्म और अमल से बनेगा।

इसी प्रकार सुखमनी साहिब में गुरु अर्जुनदेव ने लिखा है :--

प्रभ सुमिरन से दुशमन टरे।

किन्तु गुरु अर्जुनदेव के भाई ने उनके साथ कितनी शत्रुता की। इसलिए मैंने सारे पंथ और धर्म छोड़ दिये। क्या हो गया ? शर्णागतम। आत्मा मानती है कि इस संसार का पैदा करने वाला कोई है। कोई शक्ति है। बस ! Surrender to Him मैं अपने आपको उसके सपुर्द करता हूं कि दाता ! मुझे कुछ नहीं आता। मैं कुछ भी नहीं जानता। जिस ओर तेरी इच्छा है ले चल। इन धर्मों, पंथों ने मेरे मस्तिष्क को पागल बना दिया। मैं किसी धर्म पंथ का पैरोकार नहीं रहा। आपकी इच्छा करे मेरे पास आया करो, न करे न आया करो मैं हाथ बान्धता हूं। मैंने संसार से क्या लेना है। मैं तो एक सच्चाई और मालिक को मिलना चाहता था कि मेरा राम कहां है ? मैं कहां आया हूं ? जहाँ से मैं आया हूं उसका मुझे पता लग गया। वह वह अवस्था है जहाँ 'मैं' ही नहीं रहती। मुझको अपनी होश ही नहीं रहती।

ज सतनाम न नाम अनामी।
जहां पुरुष तहवां कुछ नाहिं ।।

मेरे जीवन का परिणाम क्या होगा, मुझे स्वयं पता नहीं। मैं कैसे मरूंगा, मेरे साथ क्या होगा पता नहीं। जो मैंने पिछले और इस जन्म में खोटे कर्म किये हुये हैं उनका फल भोगने में मैं प्रसन्न रहूंगा। कल यह शब्द निकला था तो विचार आया कि कबीर साहिब ने लिख दिया है। दाता दयाल जी महाराज ने कहा था शिक्षा को बदल जाना। जो कुछ मैंने समझा है कहता हूं। कोई दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं वही ठीक है।

साधो शब्द सभन से न्यारा।

मैं सारी आयु शब्द योग करता मर गया। तलवार की धार पर चला। क्या अब मुझे सोचना नहीं चाहिए कि वह शब्द कौन सा न्यारा है जो कबीर कहता है? वह शब्द, वह न्यारा है जो मैंने समझा है। शायद मैं ग़लती पर हूं। जब से मुझे तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है और मैं नहीं होता तो मैं शरीर, मन और

प्रकाश को भूल जाता हूं। बाकी शब्द रह जाता है। उसमें उस चीज़ की तलाश करता हूं जो शब्द को सुनती है। वहां एक और सुरत शब्द का अनुभव होता है। यही सिद्धान्त है। स्वामी जी ने कहा है।

सुरत शब्द दोउ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा॥

यहां मुझे शान्ति मिली। मैं शायद ग़लत हूं। ऐ मेरे बनाने वाले! ऐ दीनदयाल!! मुझे कुछ पता नहीं। जीवन तेरी तलाश में व्यतीत हो गया पता नहीं जो कुछ मैंने समझा है ठीक है या ग़लत है। जो तेरी मौज हो करलो। मैं कबीर साहिब के साथ अपने अनुभव के आधार पर सहमत होता हूं।

जोगी जती तपी सन्यासी अँग लगावैं छारा।
मूल मन्त्र सतगुरु दाया बिनु, कैसे उतरै पारा॥

पार कब जाओगे? जब अपने मन को संसार से हटा लोगे तभी पार जा सकते हो। इन वाणियों ने मेरे मस्तिष्क को सारी आयु खराब किया। मैं देखना चाहता था कि इन संतों की बाणियों के रहस्य में असली सार है क्या? क्षमा करना, अपने पूर्वजों की

निन्दा कौन सुन सकता है। सन्तों ने राम कृष्ण को काल का अवतार ठहराया इसलाम, वेदान्त और सूफीवाद को अधूरा बताया। मैं दुखी होता था कि कहां फंस गया, सच्चाई और हकीकत क्या है ? मैं कहां से आया और कहां जाऊंगा ? इसी जनून में मैंने सारी आयु व्यतीत कर दी। मेरा अपना प्रण भी था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। बाबा सावन सिंह जी महाराज ने कहा था कि निर्भय होकर काम करो इसलिए मैं काम करता हूं। आप लोग आते हैं। ये तीन मातायें जींद के इलाके से आई हुई हैं। मैं अपनी जिम्मेवारी महसूस करता हूं। ये क्यों आई हैं ? इनकी इच्छा होगी। फिर सोचता हूं फकीर चन्द ! तने मकड़ी का जाल बना लिया है क्या तू किसी को कुछ दे सकता है ? मेरे पास शुभ भावना (Good Wishes) हैं जिस इच्छा को लेकर तुम आई हो वह पूरी हों। इस के सिवाय मेरे पास और कुछ नहीं है। जो कुछ किसी को मिला, मिलता है, मिलेगा उसके अपने ही विश्वास का फल मिलेगा। जो कुछ मैं कहना चाहता हूं उसे तुम लोग सुनने के लिए

तैयार नहीं। तुम लोग तो मेरे पास सांसारिक इच्छायें लेकर आते हो। कोई स्त्री बच्चा चाहती है कोई उन्नति करना चहता है, किसी को स्त्री से कष्ट है, किसी को पति से कष्ट है, और कोई अपने पुत्र से दुखी है। यह संसार जब से बना है तब से ऐसा ही चलता आया है। जोगी, जती, तपी और सन्यासी क्यों नहीं पहुंचे ? क्योंकि जो कुछ भी वे करते थे अपने मन से करते थे। योग. तप करना और अंग विभूति लगाना ये सब मन से ही करते हैं। मन तो नाशवान चीज है। यह तो है नहीं।

योग यज्ञ व्रत नेम साधना, कर्म धर्म ब्योपारा।
सो तो मुक्ति सभन से न्यारी, कस छूटे जम द्वारा॥

कबीर साहिब कहते हैं सब काम मन से किये जाते हैं। ये मुक्ति के दाता नहीं हैं। तो मुक्ति का फिर कौन दाता हुआ ? मैं स्वयं पूछता हूं। वह अवस्था है जहां हम ही नहीं रहते। कोई ऐसा कहता है। कोई कहता है एक तत्व रह जाता है। दोनों का भाव एक ही है। मुझसे अभी मुक्तिपद में ठहरा नहीं जाता। आपसे सच्च कहता हूं झूठ

मुझसे कहा नहीं जाता। मुझ मार्ग मिल गया, कुछ ठहरता भी हूं मगर सदा ठहरा नहीं जाता। यह समझ में आया है कि वह अवस्था है जहां न "मैं" है और न "तू" है।

निगम नेति जाके गुण गावै. संकर योग अधारा।
ब्रह्मा बिस्नु जेहि ध्यान धरतु हैं. सो प्रभु अगम अपारा।

वह प्रभु अगम अपार कैसे हुआ ? प्रभु एक अवस्था है। कबीर ने तो लिख दिया। अगर कबीर साहिब मेरे पास होते तो मैं पूछता, तुम्हें क्या पता है कि ब्रह्मा किसका ध्यान करता हैं ? शिव किसका ध्यान करता है ? कोई उत्तर नहीं देता। बाणी को इस ढंग से बताया जाता है कि हम लोग उलझ जाते हैं। मैं स्वयं उलझा हुआ था। अब भी मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैंने समझा है वह उलझा हुआ नहीं है। मैं अब समझ गया कि वह एक शक्ति है जिस ने संसार बनाया है। अपने आपको उस के सपुर्द करता रहता हूं मगर कभी कभी यह मन मुझे गिरा देता है :—

लागा रहै चरन सतगुरू के, चन्द चकोर की धारा।
कहै कबीर सनो भाई साधो. नष सिष शब्द हमारा॥

आप लोग कहते है सत्गुरु के साथ लगे रहो और चन्द चकोर की तरह ध्यान करते रहो। मैं इस को नहीं मानता, संसार सत्गुरु को बाहर समझता है। सत्गुरु ब्रह्मरूप और पार ब्रह्म है। अपने अन्तर प्रकाश को पकड़ो। बाहर के गुरु का ध्यान करने से उसकी सेवा करने से तुम्हे बाहर मुखी से अन्तर्मुखी होने का अवसर मिल जायेगा। वह भी इस शर्त पर कि बाहर का गुरु मानव हो। अगर हैवान और शैतान है। आप कहोगे तुमने गुरु को शैतान कहा है। अगर मैं आप लोगों को सच्ची बात नहीं बताता और अपने स्वार्थ के लिए हेरा फेरी करके अपने जाल में फंसाना चाहता हूं तो क्या मैं शैतान नहीं हूं। ? मैंने गुरुमत में सफर किया है। मैंने हर जगह धोखा फरेब और चारसोबीस देखी कोई सच्ची बात नहीं बताता। अगर बता भी दे तो आप लोग सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। मेरा रूप मरते समय लोगोंको ले जाता है. मेरे तो बाप को पता नहीं होता। अगर सचमुच दूसरे गुरुओं का रूप भी मरते समय ले जाता है और अगर वे नहीं जाते और पब्लिक को नहीं बताते तो उन जैसा पापी और कौन है। मैं डर

पया। मैंने सन्तों और साधुओं के पिछले जीवन देखे हैं।

They died a miserable death· मुझे स्वयं पता नहीं कि मैं कैसे मरूंगा मगर कम से कम मुझे यह दुख नहीं होगा कि मैंने इस जीवन में कोई धोखे का काम किया है सिवाय चन्द ग़लतियों के जो मैंने सोलह: सत्तरह: साल की आयु में की हैं, और कोई पाप नहीं किया। किसी का हक़ नहीं खाया, कभी झूठ नहीं कहा। अपने कर्तव्य का पालन किया। स्त्री, लड़के और लड़कियों के प्रति पूरा कतव्य निभाया। जितना मुझसे हो सका भगवान को याद किया। किसी समय मेरा मन अवश्य गन्दा हुआ, मैं झूठ नहीं कहता। मगर मैंने शारीरिक रूप से कोई बुरा कर्म नहीं किया। मेरे जिम्मे यह कर्तव्य था। बाबा सावनसिंह जी ने कहा था निभर्य होकर काम कर जाना। मैं यह काम करने के लिए विवश हू। यह जो काम मैं करता हूं इसे विवशता समझता हू। मेरे अपने कर्मों का फल है।

आप लोग आये हैं। मैं आपको क्या कहू ? अपना अनुभव बताता हु कि ऐ मानव ! जो कुछ तुझे

मिलेगा यह तेरी अपनी ही नियत और अपने ही कर्म का फल है। अगर यह नहीं मानता तो यह मान कि जिसने यह संसार बनाया हुआ है वह बड़ा ज़ालम है। उसने हमें खाह मुखाह फंसा दिया। न हमने कोई ग़लती और न कोई बुरा कर्म किया। जब बच्चा पैदा होता है अन्धा होता है, किसी को Polio हो जाता है। इसबार बाहर बच्चों के बड़े २ सिर देखे हैं। उनकी शक्ल को देखकर डर लगता था। संसार में संत आकर कहते हैं कि यह संसार ऐसा ही है इससे निकल जाओ। यह पता नहीं कि संत आप निकले या नहीं निकले इसका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं कि संतों का आवागवन समाप्त हो गया था कि नहीं।

आप लोग आते हैं मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। I feel the greatest responsibility on my head मेरे पास दुखी लोग आते हैं मैं सोचता हूं मैं इनके लिए क्या कर सकता हूं? शुभ भावना देता हूं, जो लोग विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं। जितना खेल है सब तुम्हारे विश्वास का है। गुरु नानक साहिब की बाणी सुनो।

मन्ने की गत कही न जाये।

तुम्हारा विश्वाश काम करता है। सदा आशावादी रहो बुरी बात मत सोचो। तुम्हारा ही ख्याल तुम्हें मार देता है *Always be optimistic* सदा अच्छे विचार रखो।

मैंने आज तुम्हें सत्संग करा दिया। तुम लोग आते हो सच्चे दिल से चाहता हूं दाता! इनकी कामनायें पूर्ण हों। मेरा कोई मान नहीं। अपने काम की लाज आप रख। जो संसार के दुखी प्राणी आते हैं उनको शान्ति मिले।

सब को राधास्वामी!

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज

(स्थान हमीरपुर हि० प्र०)

१२ जुलाई १९७७

हंसा सुधि कर अपनो देसा।
इहां आई तोरी सुधि बुधि विसरी।
आन फंसे परदेसा।
अबहू चेतु हेतु करु पिउ से।
सतगुरु के उपदेसा।
जौन देश से आये हंसा।
कबहुं न कीन्ह अंदेसा।
आई फंसे तुम मोह फंद में।
काल गह्यो तेरो कैसा।
लाओ सुरत अस्थान अलख पर।
जाको रटत महेसा।
जुगन २ की संसय छूटै।
छूटै काल कलेसा।
का कहि आयो काह करतु हो।

कहां भूले प्रदेसा।
कहै कबीर वहां चल हंसा।
जन्म ना होवे हमेसा।
हंसा सुध कर अपनों देसा।

राधास्वामी-ऐ मेरे मन-ऐ मेरी आत्मा-तू ही बता तूने उस देश की सुध की ? दूसरों को उपदेश करने की वजाए तू अपने अन्दर में सोच ! दुनियां वालो, मैंने प्रण किया था कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा। किसी के ऊपर कोई एहसान नहीं। अपना कर्म भोगता हूं। आयु बीत गई उस देश को ढूंडते हुए। दाता ने भी कहा था।

"यह तो तेरा देश नहीं देश है बेगाना।
यहां सब बिगाने बसें कोई नहीं यगाना।

दूसरे शब्द में लिखते हैं।

"सोच समझ कर यत्न फकीरवा।
छिन २ उमर घटत दिन राती।
कभी सांझ कभी प्रभाती।
माया, मोह, महां उत्पाति।
इन से लगा मत लगन फकीरवा"

रात को मैंने यह शब्द सुना था। रात के १२ बजे के बाद मुझे नींद नहीं आई। उस देश को ढूंडता रहा। उस देश को ढूंडने के लिए सन्तों ने यह साधन अभ्यास बताया है। हिन्दुओं ने कहा ॐ भूर्भवः स्वः महः जनः, तपः सत्यम" के परे जो सावित्री है उसके दर्शन करो। सन्तमत वाले कहते हैं सहस दल कंवल, त्रिकुटि, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा सतलोक के पार जाओ। मुसलमान जबरून, हूत हूतलहूत लाहूत का ज़िक्र करते हैं। मैंने इस लाईन में सफर किया है। वह कहते हैं पहले इस मन को इकट्ठा करो उस देश में जाने के लिये। उस देश में कब जाओगे, अपनी आत्मा की *Satisfication* के लिए प्रश्न करता हूं। यह मेरा शरीर, आपका शरीर. विटामिनज़ और खाद्य पदार्थों से बना है। यह खाद्य पदार्थ विटामिनज़ बाहिर से आए हैं। अच्छा, हमारा प्रकाश रूपी आत्मा जो है यह बड़े प्रकाश से आया है। जो चीज़ हमारे अन्दर प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह हम हैं। वह भी कहीं उपर से आई है। हमारा देश वहाँ है. वहीं हम ने जाना है। जिस रास्ते से आए हैं। उसी रास्ते से

जायेंगे। तो पहले वह कहते हैं कि सहस दल कंवल है। उसमें घन्टा बजता है। मैंने यह सुना है। अब मैं लाख यत्न करता हूं। मुझसे यह सुना नहीं जाता। यह एक मेरी ज़िन्दगी का अनुभव है। अब मैं लाख यत्न करता हूं घन्टा मुझे सुनाई दे यह मुझे सुनाई नहीं देता। सोचता हूं क्यों! यह घन्टा बजता कैसे है। कोई घड़याल है हमारे अन्तर में? हम बाहिर की चीज़ों से धातु को इकट्ठा करके घड़याल बनाते हैं। उस पर जब ठोकर मारते हैं तो घन्टा बजता है। हमारे तीन शरीर हैं। कारण शरीर, स्थूल तथा सूक्ष्म, इनमें पांच तत्व हैं। जैसे दुनियां में आग, पानी मिट्टी हवा है। ऐसे ही हमारे मन के विचारों में आग, मिट्टी, पानी, हवा हैं। अगर हमारे मन में पृथ्वी तत्व नहीं है। तो हम किसी की शक्ल नहीं बना सकते। जब तुम देखते हो वृक्ष बनता है। वृक्ष की जगह फिर पहाड़ आ जाता है। पहाड़ की जगह फिर एक आदमी आ जाता है। ऐसे रूप बनते हैं आपके अन्तर। वह जो शक्लें बनती हैं। वह तुम्हारे सूक्षम शरीर में तुम्हारे मन के अन्तर पृथ्वी तत्व है। जब वह पृथ्वी तत्व के स्थान पर एक दम खत्म

होकर दूसरी चीज़ आ जाती है। वह पानी का तत्व है। ख्याल तुम्हारे यहां से उड़कर वहां चले जाते हैं क्योंकि अन्तर हवा का तत्व है। तुम्हारे ख्याल के अन्तर जोश आ जाता है यह अग्नि का तत्व है। तो यह तुम्हारे अन्तर जब तुम साधन करने बैठते हो, मन के चित्त की वृति को एकाग्र करते हो तो तुम्हारी सूक्षम प्रकृति के अन्तर जो वासनाऐं स्थूल माद्दा की हैं, वह इकट्ठी होती हैं। उनके इकट्ठे होने से तुम्हारे अन्तर में घड़ियाल घन्टा बजता हैं। जिस आदमी को दुनियां की आशाऐं नहीं हैं व किसी Gross Matter से प्रेम नहीं है। बाप से, भाई से, पुत्र से, गुरु की देह से वह लाख प्रयत्न करे, उसे घन्टा नहीं सुनाई देगा। यह मेरा अनुभव है। आखिर घण्टा बजने का कोई कारण होना चाहिए यूं तो नहीं घण्टा बज जाता। जज साहिब आए हुए हैं। बैठे हुए हैं। अगर घण्टा बजेगा, तो उसका कारण होगा यह स्थूल पदार्थ की चाह, वासना, जो तुम्हारे अन्तर में है। वह जब इक्ट्ठी होगी जिस तरह बाहिर की धातुयें इकट्ठी होती हैं तब घन्टा बजता हैं। इसी प्रकार तुम्हारी वासनाऐं इकट्ठी होने

पर अन्तर में घन्टा बजता है। अब में लाख यत्न करता हूं। घन्टा नहीं बजता है। यह मेरी जिन्दगी की *Research* है। इसके आगे है 'त्रिकुटि' उसको कहते हैं 'ॐ' का स्थान। लाल रंग वहां होता है। गुरु का स्वरूप लाल रंग में वहां दिखाई देता है। ऊषा! मैंने अभ्यास किया, देखा, अब में लाख यत्न करता हूं मेरे सामने लाल रंग का सूर्य नहीं आता। वह क्यों नहीं आता है। देखो। मैं इस चीज़ को ज़बरदस्ती पकड़ता हूं ज़ोर से। मेरे खून में हरकत आती है मेरा मुंह लाल होता है कि नहीं होता। ऐसे ही जब तुम मूरत बनाते हो। किसी चीज़ की तस्वीर बनाते हो गुरु की, राम की, तुम्हारा जो मन है। उस में जोश पैदा होता है। इकट्ठा होता है। उसके इकट्ठा होने से लाली नज़र आती है। खून का दौरा होता है लाल रंग का। समझ जाए मेरी बात को कि मैंने क्या कहा। अब मुझे लाल रंग क्यों नहीं दिखाई देता। क्योंकि मैं मन के चक्कर से निकल गया। मेरा साधन अब मन का रहा ही नहीं, तो मैं सहस-दल कंवल को क्या करूंगा त्रिकुटि को क्या करूंगा, सुन्न महासुन को क्या करूंगा। सोचो मेरी बात को

यह मेरी ज़िन्दगी का अनुभव है। बारह २ घण्टे मैंने अभ्यास किया। सुनाम में था, सारा दिन डयूटी करता, रात को ज़मीन पर सोता, रज़ाई लेकर बैठे रहना, औरत दुःखी, एक दिन मेरे पास आकर बैठ गई। कहने लगी, तुझे क्या हो गया है। क्या करता है। सारा दिन नौकरी करता है। रात को अभ्यास करता है। मैंने कहा दुनियां को भूल जाता हूं। कहने लगी, बड़ी अच्छी बात है। सारा दिन मैं भी काम करती हू। तेरे बच्चे पालती हूं। तेरे भाई के बच्चे पालती हू। रात को सुख की नींद सो जाती हूं। मैं भी दुनियां को भूल जाती हूं। मेरे पास कोई जबाव नहीं था। क्यों? मैंने प्रण किया था दुनियां को अपना अनुभव बतला जाऊंगा। यह मैं क्यों कहता हूं? अभ्यासी अभ्यास करते हैं। तुम भी अभ्यास करते हो। अब बताओ तुम इतने ऊंचे चढ़ जाते हो। तुम घन्टा सुन सकते हो, सच्ची बात कहना तुम सुन सकते हो? तो 'त्रिकुटी' में लाल रंग क्यों पैदा होता है तथा बादल की गरज या 'ॐ' की धुन क्यों होती है। जिस तरह समुद्र से सूर्य की किरणें पानी को खींचकर भाप बना लेती हैं और बादल बन जाते हैं। तो आपस में रगड़ खाते है

वहां आवाज़ आती है बिजली सी। ऐसे ही मन के ख्यालात, विचार स्थूल मादा को छोड़कर सूक्ष्म मादा, प्रेम से, स्थूल मादा का प्रेम है स्थूल चीज़ों का, प्रभु से प्रेम, परमात्मा से प्रेम, ज्ञान से प्रेम, गुरु के अनुभव से प्रेम। उस प्रेम से जब हमारी धारें इकठ्ठी हो जाती हैं, इकठ्ठी होने के कारण जो आवाज़ पैदा होती है उस आवाज़ को कोई ओम् कहता है, कोई बम २ कहता है, कोई "अल्ला हूं कहता है कोई "वाहगुरु" कहता है। उसके अनेक नाम हैं, उसका कोई नाम नहीं। हमने अपने २ फर्ज़ी नाम रखे हुए हैं। यह 'त्रिकुटी' का मुकाम है। इस मुकाम में मैं लाख कोशिश करता हूं मगर आगे निकल जाता हू। यह मुझे क्यों स्वाल पैदा हुए, मैं *Researcher* हूं। मैं अभ्यास करता २ मर गया। अब बेशक मैं अपना पूरा ज़ोर लगा लूं, अब में वहां ठहरूं, मैं वहां नहीं ठहर सकता। अब और ही 'शब्द' सुनाई देता हैं। तो ऐसे ही जब हमारी चित्त की वृतियां तन जाती हैं प्रेम के रंग में, इशक में, जो आदमी सूरत बनाएगा ऊपर चढ़ने के लिए, प्रेम से जाऐंगा ना। अगर तुम में जज्वा हकीकी है तो आप उपर चढ़

जाऐंगे। अगर आप दिखावे के लिए और आप में जज्वा नहीं है तो आप कानों में 1½ २ घन्टा उंगलियां डालकर बेशक बैठे रहो, तुम को कुछ नहीं होगा। यह तो लगन और जज्वा की बात है। तो जब इन्सान जज्वा में आकर खिच जाता है फिर क्या होता है। जिस तरह सरंगी की तारें सब खिची होती हैं उसपर जब गज़ फिरता है तो रारंग सारंग जैसी आवाज़ पैदा होती है। क्योंकि तुम्हारे मन की वृतियां खिची होती हैं वहां भी ऐसे ही रारंग सारंग की आवाज़ पैदा होती है। मैं क्योंकि अब साधन मन का करता ही नहीं। सीधा प्रकाश शब्द में चला जाता हूं। इसलिए अब मुझे इन साधनों की जरूरत ही नहीं है। अगर मैं चाहूं भी तो कर नहीं सकता तब इसके आगे दसवां द्वार आ जाता है। वह निर्विकल्प समाधि होती है। वहां कोई आवाज़ नहीं। वहां कोई शक्ल नहीं। अन्धेरा ही अन्धेरा। यह वह अन्धेरा नहीं जो हम आखें खोल कर देखते है। अन्धेरे का मतलव वहां, मन, चित, बुद्ध, अंहकार चारों *Function* नहीं करते। इसके आगे जैसे कल मैंने कहा था, इससे आगे "रूहानियत"

है। यह जो ओम् का बिन्दु है यह जो है 'दसवां-द्वार' यह ओं के ऊपर एक बिन्दु लिखा होता है। यह निर्विकल्प समाधि है। बिन्दु से क्या निकलता है ? संकल्प उठते हैं। तो ओं ही रचना करता हैं ओं का मतलब समझ गये होंगे। ओं से उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय जैसे ज़ज्बात निकलते हैं। उस अवस्था का नाम ओकार है। दुनियां और इस सृष्टि की रचना सब ओंकार से होती है। एक ओंकार तुम्हारे अन्तर है। एक ओंकार ऊपर ब्रह्माड में है। ओं ही तूम को दुनियां में लाभ दे सकता है तथा ओं ही तुमको आगे ले जा सकता है। इसके क्या अर्थ हैं ? वह जो बिन्दु है, जिस प्रकार की वासना लेकर तुम अभ्यास करोगे, जिस प्रकार की चाह लेकर तुम अभ्यास करोगे वह तुम्हारी वासना, (चाह) पूरी होगी। यह मैंने आज़माया हुआ है कर देखो। कोई किसी गर्ज़ को लेकर अभ्यास करो। जो बेगर्ज़ अभ्यास करते हैं उनको कुछ नहीं मिलता। जो यूंही फिरते हैं बाज़ार में आवारागर्द उनको पोलीस पकड़ लेती हैं। और चालान कर देती है। ऐसे ही जो आदमी बगैर किसी गर्ज़ के अभ्यास करते हैं। बगैर किसी aim & object

के vaga bond यावासहीन हैं, मैंने क्या कहा आपको सोचो मेरी बात को, दाता दयाल फरमाया करते थे। Eat to the purpose, talk to the purpose, walk to the purpose" हर काम किसी object का लेकर किया करो। मैं सतसंग कराता हू मेरा भी मकसद है। आप समझते हैं मेरा मतलब कि नहीं ? ऊट पिटांग अगर बोलता तो पागल हो जाता, बावला हो जाता। किसी गर्ज़ को लेकर काम करो। तो आप लोग आ जाते हैं। आप को मैंने Stages बताई हैं इसके आगे है "सोहं गति" प्रकाश और शब्द, यहां तक तो यह शब्द हैं। यह शब्द कैसे खुलते हैं। क्यों आवाज़ें आती हैं ? हमारे हां बोलते हैं "भंवर गुफा" भंवर कहते है जब दरिया का पानी चक्कर लगाता है एक जगह पर। जब आदमी को ज्ञान हो जाता है, कि मेरे अपने ही मन के संकल्प हैं। तो उसके मन से संकल्प उठते हैं क्योंकि वह उन्हें जानता है, उनको फैलने नहीं देता। फिर वापिस ले आता है। समझ गए, समाधि लग गई। आत्मपद में चले गए। वहां से फिर फुरना होती है। क्योंकि तुम को पता है यह मन है। तुम उस को मोड़कर फिर ले आते हो। जो यह चक्कर है ना, इसको

बोलते हैं 'भंवर गुफा' मन के विचारों का चक्कर 'घुम्नघेर' दरिया का पानी तो यूं घूमता है (हाथ से इशारा करते हुए), तो यह जो वेदान्ति हैं ना अहम् ब्रह्म कहने वाले यह जब वहाँ जाते हैं कहते हैं हमारे सिवा वहां कोई नहीं। जो उनको वहां फुरना फुरती है ना, वह इस को मोड़कर फिर वहां वापिस ले आते हैं। मन जाता है, उसको फिर वहाँ वापिस ले आते हैं। इसका नाम है भंवर गुफा' इसका नाम है सोहंग। समझ गए। सोहंग में सब वृतियां नीचे चली जाती हैं। सिर्फ दो तारें Positive तथा Negative रह जाती हैं। पोज़ेटिव तथा नेगेटिब के जितने ख्यालात निकलते हैं यानि पुरुष और प्रकृति दो चीज़ें रह जाती हैं (पाज़टिव और नेगेटिव) जब सुरत वहां जाती है जो दो होते हैं, उनके बीच में खाली जगह होती है। वह सुषुम्ना नाड़ी है सुषुम्ना में जब आदमी की सुरत वहां जाती है तो उसको ऐसा मालूम होता है जैसे बंसी बज रही है। इसका मतलब क्या है? कि जितने विचार तुम्हारे अन्तर आते हैं, अगर कोई यह चाहे कि मेरे उपर सब दर्जे (Stages) खुल जाऐं वह ग़लत है। क्यों? यह

Stages तो खुलती हैं, जिस प्रकार की Quality of Nature जिस प्रकार की तुम्हारे अन्तर प्रकृति भरी हुई है उस प्रकार के शब्द और प्रकाश खुलेंगे। आज जो तुम्हारा साधन और अभ्यास है। वह दो दिन तथा चार दिन के बाद बदलेगा। क्यों ? हम झूठ बोलते हैं। सच्च बोलते हैं। तुम अभ्यासी हो अभ्यास करते हो, एक हालत नहीं रहती। तुम्हारी प्रकृति बदलती है। सतसंगियों को यह मुसीबत है कि उन्होंने किताबें पढ़ी हुई हैं। हाय, आज घण्टा नहीं बजा, आज यह नहीं हुआ. आज वह नहीं हुआ। इस बात में रो २ कर सारी ज़िंदगी उनकी बरबाद हो जाती हैं। इस लिए बार २ यह कहा जाता है कि अपने अभ्यास की हालत को किसी गुरु को, किसी कामिल इन्सान को बताओ। सतसंगियों को क्या पता। वह तो एक किताब के लकीर के फकीर होते हैं। तुम्हारे बाबा सावन सिंह थे। उनके पास सतसंगी जाते थे और कहते कि हमको महाराज यह तकलीफ होती है तो वह कहते ("काको तेरा अभ्यास में करूंगा. तू ना कीता कर") तेरा अभ्यास में करांगा, तू ना कीया कर। जो आदमी जरूरत से ज्यादा अभ्यास

करते है। वह भी पागल हो जाते हैं। मैं बता देता हूं आपको। मेरे पास कई आदमी आते हैं। कहते हैं हाय सावना। ऐसे २ कई सत्संगी नीम पागल हुए। समझे मेरा मतलब कि नहीं। यह शब्द अभ्यास है। मन की वृतियां छूट करके एक अवस्था में आ जाऐं। तुम्हारा शब्द कोई खुला है या नहीं खुला. इसकी कोई परवाह नहीं। मन को दसवें द्वार तक ले जाने के लिए कोई ज़रूरी है कि शब्द अभ्यास ही किया जाए। कर्मयोग से भी इन्सान दसवें द्वार में जा सकता है। प्रेम योग से भी जा सकता है। अगर किसी ने आत्मपद सोहं पद से आगे जाना है तो उसके लिए शब्द योग जरूरी है। क्योंकि मानसिक योग सारे का सारा दसवें द्वार में समाप्त हो जाता है। आगे केवल शब्द योग रह जाता हैं। जाना हमने वहाँ है जहा निर्विकल्प समाधि है। मकसद तो मन के तब्के का यही है या कोई और है। तो यह जरूरी नहीं है। कि वहां पहुंचने के लिए तुम इस बात की कोशिश करो कि हमारे अन्तर यह भी खुल जाए

यह भी खुल जाए। समझ गए हो, मैंने आप सन्यासी हैं। अगर मैं ग़लत हूं तो आप मेरे कान पकड़िये। मेरी बात को वही समझेगा, जिस ने २०/२५ साल कानों में ऊंगलियां देकर अपना समय खोया हुआ है। मकसद क्या है जीवन का? हम ने अपने घर जाना है। हम को घर जाने के लिए क्या चाहिए। जब तक शब्द सुनेत रहोगे, तुम घर नहीं जा सकते। मेरा सत्संग वर्तमान गुरुओं के लिये है अगर मैं ग़लत कहता हूं, तो मेरा खंडन करें। जब तक इन शब्दों के पीछे या इन रोशनियों के पीछे पड़े हुए हो, तुम घर नहीं जा सकते। हां, यह शब्द और यह रोशनियां अगर आप को कोई कामिल गुरु मिल गया तो घर पहुंचाने में मददगार है। यह चीज़ें जो आप के अभ्यास में अन्तर में पैदा होती हैं, तुम को मंज़ल पर नहीं पहुंचाएंगी। मैं क्यों कह रहा हूं। सुनो, मैं १२ साल बसरे बगदाद में रहा। मैंने बीनें सुनी। प्रकाश मैं इतना देखता था कि रात को मेरे ऊपर अगर रज़ाई होती, जिस कमरे में मैं सोता था, उस रज़ाई में से इतनी रोशनी निकलती थी कि में छत की कड़ियां गिन लेता था। उस वक्त

जब मैं वापिस आया उस वक्त की मेरी फोटो आपने देखी होगी, मानवता मन्दिर में लगी है, जो देखता है खिच जाता है। जब मैं घर वापिस आया, मेरे सन्तान नहीं थी। दाता ने कहा फकीर, सन्तान पैदा करो। अगर मैं तो सन्तान के लिए औरत के पास जाता तो शायद मुझे तक्लीफ न होती। मैं तो विषयों में फंस गया। तो मेरी सुनी हुई बीनों ने या देखे हुए प्रकाश ने क्या मूझे काम अंग से बचाया ? सुनो क्या कह रहा हूं। स्टाफ मेरा ग़लती करता था। मैं उन पर करोद्ध भी करता था। मैंने बेशक अनुचित पैसा नहीं कमाया, रिश्वत एक दमड़े पैसे की नहीं ली, सरकार का काग़ज नहीं बरता लेकिन क्या मेरे दिल में यह इच्छा नहीं होती थी कि मेरी उन्नती हो जावे। तो केवल शब्द से ही तुम्हारा बेड़ा पार तो नहीं होगा। यस है जो दुनियां को मैं कहना चाहता हूं और इन शब्द अभ्यसियों को। किताबों की लकीरों के फकीर बने हुए हो। मैं आपको बताता हूं यह सारे दर्जे उसके खुलते हैं जो कुदरत की तरफ से तमाम किस्म की प्रकृति अपने जिस्म में लाता है। समझ गए मेरी बात को। जो Born Personality होती है।

स्म में एक हर किस्म की प्रकृति मुनासिब होती है। उन आदमियों को परिपूर्ण आदमी कहत ह। उनके साधन में यह सब कुछ नज़र आता है। मगर इसका मतलव यह नहीं है कि जिन की प्रकृति ऐसी नहीं है वह वहां नहीं पहुंच सकते। समझ गए मेरी बात को कि नहीं। इसलिए सन्त हमेशा यह कहा करते हैं। स्वामी जी की बाणी में यह लिखा हुआ है कि सन्त इन्सान को बन्द गाड़ी में ले जाते हैं। ऐसा लिखा हुआ है। खिड़कीयां बन्द होती हैं। स्टेशन गुज़र जाते हैं मन्ज़ल पर पहुचा देते है। इसका क्या मतलब कि अगर कोई सत्गुरु मिल जाए तो बगैर इतने दृश्य देखे ही वह मन्ज़ल तक पहुंचा सकता है। हमारी मन्ज़ल तो कुछ और है, यह है जो मैं ब्यान कर रहा हूं। मन्ज़ले मक्सूद क्या है अभ्यास का ? मैं जब इस अवस्था में था बीने सुनी हुई थी। मैं मस्ती के आलिम मे था छुटी आया बसरे बुगदाद से। समझता था कि मैंने मैदान मार लिया। दाता को मत्था टेका। उन्होंने कहा चल बाहिर में देखूं तू ने क्या कमाई की हुई है। बाहिर देखा, कहते हैं योगी बन गए। ऋद्धि

सिद्धि आ गई मगर अभी सन्त नहीं, फकीर नहीं बने, अब मेरा सारा मद चर हो गया। जितना अहंकार था मेरा वह टूट गया। मुझे कहने लगे अच्छा कल तेरी परीक्षा लूंगा। मैंने कहा बहुत अच्छा। सेवा मैं करता था। दो चार सत्संगी होते थे। उन का खाना आदि मैं बनाया करता था। मैं यह सोचता था कि दाता पूछेंगे, सहसदज कंवल में क्या देखा, त्रिकुटि में क्या देखा। महासुन्न में क्या देखा, भंवर गुफा में क्या देखा। ऐसी-२ बातें मैं सोचता था कि वह यह कहेंगे। समझ में आती है ? तो मैं उन के लिए जवाब देने को तैयार था। मैं चौके में बैठा, कद्दू मैं ने चीरा और देगेचे में घी डाला। दाता अन्दर से आवाज़ देते हैं। ठहरो, फकीर सब्जी मैं बनाऊंगा। ऐसे वह बैठ गए। देगचे के नीचे आग जल रही थी। ऊपर देगचा था। उन्होंने एक मिन्ट में पचास हुकम दिए। हल्दी लाओ, नमक लाओ, मिर्च लाओ, कड़छी लाओ, मसाला लाओ, यह लाओ, वह लाओ, वह हल्दी को कहें, मैं हल्दी लाऊं वह चार और आर्डर देदें। मैं घबरा गया, कोई चीज़ ना दे सका। देगचे को आग लग गई। वह ढक्कन देकर

उठ कर चले गए। मैं इन्तज़ार कर रहा था कि मेरी परीक्षा लेंगे। शाम को गया, सेवा कर रहा था। मैंने कहा महाराज ! मेरी तो आज परीक्षा लेनी थी। कहने लगे तेरी परीक्षा ली तू फेल हो गया। मैंने कई चीज़ें लाने को कहा तुम एक भी न दे सके। मैंने कहा जी, क्या हुआ ? तो कहा कि मैंने सुबह तुम को कई चीजें लाने को कहा तुम एक भी न दे सके मैंने कहा जी, आपने इतनी जल्दी हुकम दिए, मैं घबरा गया। उन्होंने कहा सन्तपना या फकीरी नाम न घबराने का है अभ्यास ध्येय नहीं है। समझ गए। अभ्यास साधन है। (It means to an end) साधन is not an end इसके अर्थ समझ गए। साधन जो है वह लक्ष्य स्थान नहीं है। यह तो लक्ष्य को प्राप्त करने का उपाय है। (aim) क्या है ? निर्भय निर्वैर, अकाल मूरत, अजूनी से भंग। मन का निर्भय हो जाना, मन का निर्वैर हो जाना, मन का शान्त हो जाना, मन का अडोल रहना, यह है हमारा अन्तिम ध्येय। हम ने इस चीज़ को हासिल करना है। जिस तरीके से जो कर सके, वह उस तरीके से करे। कोई राधास्वामियों ने ठेका उठाया हुआ है ? मुस्लमानों ने ठेका उठाया

हुआ है ! समझ गए मेरी बात को ! मैंने अभ्यास किया, बीनें तक सुनीं । जब वापिस आया, यह मेरी परीक्षा ली और मैं फेल हो गया । मेरा अज्ञान बिल--कुल नहीं जाता था । तो जब से मैंने यह सुना, मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होता है और मैं नहीं होता ! उस वक्त से मेरा ज़िन्दगी बन गई । क्यों, जितना मेरा मन का चक्कर था उस को तो मैं छोड़ जाता हू, मैं परवाह नहीं करता । बात मेरी समझ में आ गई । ना मैं सहसदल कंवल की परवाह करता हू । ना त्रिकुटि की परवाह, ना सोहंग की परवाह । किसी चीज़ की परवाह नहीं करना । आगे क्या है ! मेरा घर कहां है? आगे है । जब सब कुछ भूल जाता हूं । तो मेरा (Self) रह जाता है । वह प्रकाश में या शब्द में लय हो कर जब अपनी असलीयत खोने लगता है तो अलख यानी लखा नहीं जाता । वह क्या है । "It is some thing, it is what it is" जहां से कोई चीज़ लखी नहीं जाती, तो यही कबीर कहता है ।

हंसा सुधि कर अपनो देसा ।
इहां आई तोरी सुधि बुधि बिसरी ॥
आनि फसे परदेसा ।

अबहूं चेतु हेतु करु पिंड से ॥
सतगुरु के उपदेसा ।
हंसा सुधि कर अपनो देसा ॥

तो सतगरु ने उपदेश दिया है मुझे कि इस तरह से चल । एक परीक्षा ऊन्होंने मेरी और ली थी । इस परीक्षा से पहले वह अमरीका से आए । मेरा बड़ा प्रेम था उन के साथ. दो चार हम आदमी थे । कहने लगे कि आज तुम्हारी परीक्षा लेंगे । कहने लगे मैं एक कहानी डालूंगा, जो नहीं हंसेगा वह सन्त है । महाराज, उन्होंने कहानी कही । मैंने अपने आप को बहुत जोर लगाया हंसने से न रुह सका । हंसता ज्यादा कौन है ? रोता ज्यादा कौन है ? जो अपने रूप को नहीं जानता और मन को काबू नहीं रखता, यह है (Practical) जीवन । समझते हो ! दाता के साथ मेरे प्रेम का यह हाल था । अमरीका से वापिस आए । उन्होंने लिखा कि मैं सूर्य नारायण के घर फलां २ तिथि को मिलूंगा । तुम वहां आकर मिलो, मैं ASM था । मैंने छुट्टी ली. वहां आया । आगे दाता दयाल नहीं थे । सूर्य नारायण महर से मैंने पूछा कि दाता दयाल जी महाराज कहां हैं । वह कहने लगे कि

उन्होंने आना था आऐ नहीं। मुझ को इतना दुःख हुआ कि मैंने अपना सिर दीवार के साथ मारा। मेरा खून बह गया। मेरा इतना प्रेम था कि मैंने इस ग़म में अपना सर फोड़ लिया। खून निकल गया बेहोश हो गया। सूर्य नारायण ने मेरी पट्टी की। मैंने पूछा उनका घर कहां है। उन्होंने कहा पुर कानूनगो। मेरे Pass की Date आगे थी। उस Pass से मैं वापिस नहीं जा सकता था। बाबूराम स्टेशन मास्टर म्यानी मैं था। उसको तार दी। उसने मुझे ४० रुपये का TMO भेजा। तब वह लेकर मैं वापिस आया! यह मेरे प्रेम का हाल था। तुमको Practical जीवन गुज़ारने का रास्ता बता रहा हूं। जो दो चार आदमी समझदार हैं उनको मैं सत्संग दिए जा रहा हूं। यह बेचारे क्या समझेंगे मेरी बात को। तुम्हारा मन्ज़ले मक्सूद क्या है। निर्भय निर्वैर, अकाल मूरत, मन का अडोल हो जाना, बेफिक्र रहना, बेग़म रहना, बेचिन्त रहना। बेचिन्त, बेग़म्मी और सन्तों को कैसे आई? मुझे कैसे आई, मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। मुझे आई केवल एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। जो कुछ मेरे अन्तर

फुरता है यह माया है और है नहीं। तो अब जो कुछ भी होता है मेरे साथ जाग्रत में, मेरे ऊपर उसका कुछ असर नहीं पड़ता। मगर स्वप्न में अब तक भी फंस जाता हूं सच्ची बात आपको कहता हूं। लोगों का मुझे पता नहीं। मैंने तीन रजिस्ट्रयां बाबा सावन सिंह जी को लिखीं कि मुझे आप बताईये कि आपको भी स्वप्न आते हैं। अगर आते हैं तो किस किस्म के आते हैं? एक रजिस्ट्री का भी उत्तर नहीं आया। मुझे आप पता नहीं मेरी ज़िन्दगी का परिणाम क्या होगा। दोस्तो। जब मैं स्वप्न में चला जाता हूं उस समय मुझे याद नहीं रहता मैं स्वप्न देख रहा हूं। स्वप्न क्या आते हैं मुझे, वही रेल गाड़ीऔर तार। रेलगाड़ी का महकमा तथा तार का महकमा। तार लिए हुए गाड़ी में सफ़र कर रहा हूं। गाड़ीयां क्रास कर रही हैं। आप को मैं कुछ कह जाना चाहता हूं। अगर आप समझ सकते हैं तो जिस किस्म का Suggestion तुम्हारे दिमाग़ पर पड़ा हुआ हैं वह Suggestion जब तुम स्वप्न मैं जाओगे उस किस्म के Suggestion तुम्हे स्वप्न में आऐगे। डर की वजह से कोई Suggestion पड़ा हुआ है। या खुशी की

वजह से कोई Suggestion पड़ा हुआ है तो वह Suggestion शायद तुम्हारे धुल गये हों मुझे पता नहीं। मेरा तो धुला नहीं आज तक, किसी और का धुला हो मुझे पता नहीं। दाता दयाल का धुला हो मुझे पता नहीं। मैं तो अपनी बाबत जानता हूं। बाबा सावन सिंह जी का धुला हो, मुझे नहीं पता। मैंने हजार कोशिश की। जब स्वप्न मुझे आता है वही रेलगाड़ी और तार जरूरी आती है। अब सोचता हूं कई बार, क्या पता जब मैं मरने लगूं तो बेहोशी में चला जाऊं। इसलिए मैं 'शरणागत' हो गया हूं कोई अहंकार नहीं करता। "नथ खसम दे हथ" जहां वह रखे वहां रहना। मेरा अपना अनुभव यह है। तो आज जो शब्द मैंने रात को सुना, रात १२ बजे के बाद मुझे नींद नहीं आई, अपने देश को ढूंडता रहा। क्या देश है मेरा। देश वह है जहां मैं मन, शरीर, सत, चित, आनन्द को भूल जाता हूं। सच्चिदानन्द कहते हैं सत हैं Physical Feelings, चित हैं Mental Feelings, आनन्द हैं Spiritual Feelings, अथवा जो Physical Feelings, Mental Feelings और Spiritual Feelings की साक्षी है वह हम हैं। वह

तुम हो, वह तुम हो वह तुम हो। वह फंसी हुई है यहां आकर के। हमें जाना कहां है? सत चित आनन्द से परे। जब तक हम इस से परे नहीं जाएंगे यह जो काल का चक्कर है यह खत्म नहीं होगा। काल का चक्कर क्या है याद रखना जहां हरकत है वहां Light होगी और Sound होगी। तुम सुनो या ना सुनो। यह साइन्स का नियम है। Where there is a motion, there is a Light & Sound. जहां हरकत है, वहां प्रकाश भी है शब्द भी। तो जिस प्रकार का संस्कार तुम्हारे अन्तर है उस प्रकार का शब्द और उस प्रकार की रोशनी पैदा होगी, दूसरी प्रकार की नहीं होगी। एक बात बताता हू आपको। जिस किस्म का Suggestion इन्सान के दिमाग़ पर पड़ा होता है उसी किस्म को रोशनी और शब्द पैदा होता है। मैं फरीदकोट में स्टेशन मास्टर था। वहां एक भेड़कुट जाती का व्यक्ति था बकरी भड़ वह चराते हैं। उनमें एक दो दयाल बाग के सतसंगी थे। वह मेरे पास आए और मुझ अपने घर ले गए। मेरे साथ एक सन्ता सिंह था। वह भी मेरे साथ गया। वहां उनके हाथ से कोई खाता नहीं। उन्होंने

खाना बनाया, मेरे सामने लाए मैंने खा लिया। उनमें से एक बूढ़ा आदमी था। वह मुझे बोला, बाबा जी ! एक बात बताओ। मैंने बोला क्या ? कबीर पंथी साधु आया था। उसने मुझे एक मन्त्र बताया था। मैंने उस मन्त्र के जाप का चिला काटा। १५ दिन मेरी यह हालत रही। रात को रजाई ले कर सोता था। रजाई से रोशनी इतनी निकलती थी कि मैं आसमान तक देख सकता था। एक बार जब मैं अभ्यास में बैठा तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि आंख बैठ रही है। मैं एक हरे रंग की रोशनी में चला गया। हरे रंग की रोशनी में मैं डर गया मैंने अभ्यास छोड़ दिया। आप बताइये कि वह हरे रंग की रोशनी क्या थी : सुनो, मैं क्या कह रहा हूं। किसी सन्तमत की बाणी में क्या लिखा हुआ है कि हरे रंग की रोशनी होती है। क्या कबीर ने कहीं लिखा है। स्वामी जी ने कहीं लिखा है। सुनना मेरी बात को। सन्ता सिंह मेरे साथ था। वह भी बड़ा अभ्यासी था। मैंने पूछा, तू बता भाई, तू अभ्यास करता है। तू ने कभी देखी है हरे रंग की रोशनी ? मैंने कहा, जो मन्त्र तुम को दे गए हैं, वह पढ़ कर सुनाओ। उसने

जो मन्त्र पढ़ कर सुनाया, उस में चार, पांच वार 'हरे' का शब्द आया। वह जिसको मन्त्र दिया गया था वह बिल्कुल मूढ़ तथा अज्ञानी था। अब समझगऐ मेरी बात को, मगर उस को हरे रंग का पता था तो जब उसकी सुरत समाधि में गई तो वह जो 'हरे' शब्द का संस्कार उसके अन्तर था उस ने उस के अन्तर हरे रंग की रोशनी पैदा करदी। मास्टर मोहन लालू सुन रहा है। समझ गए क्या कहा मैंने ? यह जो कुछ तुम देखते हो अपने अन्तर में, जिस किस्म का *Impression & Suggestion* आपके दिमाग़ पर पड़ा हुआ है वह तुम को नज़र आएगा। तुम देखते नहीं हो, जो मिस्मरिज़म वाले तमाशा करने वाले लड़के को बैठा देते हैं। कहते हैं आंख बन्द कर भाई। देख झाड़ू देने वाला आ गया ? वह देखता है अपनी आंख से झाड़ू वाला आ गया। वह बाहिर से ख्याल दे रहा है। वह उसको ख्याल दे रहा है। माशकी आ गया ? आ गया। वह बाहिर से ख्याल देने वाले के विचारों का अपने अन्तर में दृश्य देखता है। इस लिए कभी किसी को मत कहो कि तू गन्दा है, तू बुरा है। वह संस्कार उनके

दिमाग़ पर बैठ जाता है। समझ गए। कभी मत रोओ मेरे अन्तर यह नहीं खुला, वह नहीं खुला। इस लिए मैं सतसंग दिए जा रहा हूं सतसंगियों के के लिए कि इस बात की तुम चिन्ता मत करो कि तुम्हारे अन्तर आज यह शब्द नहीं खुला या वह नहीं खुला। सिर्फ तुम ने जाना कहां है। जहां बेगमी, बेफिक्री, बेचिन्तपना है। यह कब आएगा ? यह अभ्यास से नहीं आएगा। जब तक कि तुम किसी कामिल गुरु के सतसंग में नहीं बैठोगे। यही बात बाबा सावन सिंह जी कहते चले गये। नाम भक्ति और गुरु भक्ति। दुनियां ने ना नाम भक्ति को ना गुरु भक्ति को समझा है। गुरु भक्ति यह है जो इस समय तुम कर रहे हो व नाम भक्ति वह है अपने अन्तर में बैठ कर अपना इष्ट वह रखो जहां आपने सच्चिानन्द से परे जाना है। फिर चलो अपने अन्तर में। यह सब दर्जे आपने आप (Automatically) पूरे खुल जाएंगे। मगर किन के, जो वहां जाना चाहते हैं। गृहस्थियों के लिए अपना-२ काम हासिल करने के लिए यहां आँखों के दोनों भोंओं के सैंटर में ठहरना चाहिए। यहाँ ठहरोगे, घन्टा सुनते रहोगे।

ज्योति स्वरूप के दर्शन करने रहोगे। आपके दुनियां के कारोबार सभी होते रहेंगे। यह बता देता हूं। जो ज्योति स्वरूप के दर्शन करता है, शब्द सुनता है उस में यह ताकत होनी चाहिए कि उसकी मनो कामनाऐं पूरी हो। उसके दुनियां कारोबार सभी पूर्ण होने चाहिए। अगर नहीं होते तो उस का अभ्यास ग़लत है। मैं तो किसी को कुछ देता नहीं, मैं तो बाहिर जाता हूं, लोग कहते हैं बाबा जी, यह चाहिये। मैं कहता हू अच्छा भाई तुम ध्यान करो तुम्हारा काम हो जायेगा। जिनका रूप बन जाता है, ज्योति चमक जाती है वह कहते हैं बाबा जी, हमारा कार्य बन गया। मगर जिनका ध्यान नहीं बनता उनके काम नहीं बनते। गृहस्थी हैं। गृहस्थियों के लिए दुनियांदारों के लिए यह रूहानियत नहीं है; आपको क्या ज़रूरत, वहां तो वह जाएगा जिसने दुनियां की ठोकरें खाई हैं। तुम सारा दिन काम करते थके हुए होते हो, जब थक जाते हो, तब क्या चाहते हो। जो कुछ किया होता है उस को भूल जाना चाहते हो। ऐसे ही दुनियाँ में पहले फंसो। जो आदमी दुनियावी जिन्दगी में कामयाब नहीं

है। वह रुहानी ज़िन्दगी में भी कामयाब नहीं हो सकता, तुम को बताए देता हूं। क्योंकि उस के मन की Struggle है ना। दाता ने मेरे छोटे भाई राय साहिब को सातवीं जमात में नाम दिया। वह घर से भाग गया जाकर नाम ले आया। उन्होंने कहा, नाम तो तुम्हें दे देता हू मगर जपना नहीं। क्या करना, तेरे लिए।

"Life means work and work means life"

उस को यह उपदेश था, मेरे छोटे भाई को।

"Life means work and work means life"

और फिर २४ घण्टे में से १६ घण्टे काम करो। ६ घण्टे नींद लो, एक घण्टा सुबह तथा एक घण्टा शाम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए रखो, फिर पिछली उमर मैं मेरी गोद में आ जाओगे। दूसरे यह कहा था। हाथ ऐसे नहीं ऐसे करना (हज़ूर ने हाथ से इशारा करते हुए फरमाया कि मांगना नहीं परन्तु देना)। इसका परिणाम यह हुआ कि नान-मेट्रिक लड़का था, अढ़ाई हजार रुपये वेतन पाया, ट्रफिक मैनेजर हो कर रीटायर हुआ तथा पिछली उमर में बैरागी हो गया। मेरी औरत को उपदेश

दिया कि जो तुम को एक ताना दे उसको १६ ताने सुनाओ, चाहे वह फकीर चन्द भी क्यों ना हो। दुनियां ने गुरुमत को समझा ही नहीं। मक्सदे जिन्दगी है Peace of mind (शांति), निर्भयता, निर्वैता, हमने इस चीज़ को हासिल करना है। इसके तरीके कई हैं। प्रकृति अलग २ है, स्वभाव भिन्न २ है इसलिए यह गुरुमत है। तुमको यह कतावें नहीं बता सकती। मैंने आपको बोला ना, मैं आप हैरान था। क्योंकि मैं १२ साल बसरे बग़दाद में रहा, लापरवाह ज्यादा, जिस औरत की कदर घर में नहीं लोग इसकी इज्जत नहीं करते। अब मैं आपको एक और बात बताता हूं। दाता दयाल जी महाराज कशमीर गए उन्होंने सत्संग देते हुए कहा "हिन्सा परमोधर्मा" है तो पं० भास्कर नाथ ने कहा। महाराज, "अहिन्सा परमोधर्मा" है "हिन्सा-परमोधर्मा" नहीं। दाता दयाल ने कहा नहीं, आपके लिए हिन्सा परमोधर्मा है। क्या करें। इकट्ठे हो जाओ मुकाबला करो। जब वक्त आए मुकावला करो। औरतें आई बुर्के उतार दो। जेंवर मत पहनो। कृपानें रखो। एक महीना वहां रहे। लोगों ने कहा,

महाराज यहां रहो। कहने लगे मुझे बचाओगे या अपने आपको बचाओगे। महाराज जो आ गए। उनके पीछे हिन्दु, मसलमानों का झगड़ा हुआ। सब के लिए एक हुक्म नहीं है। यह गुरुमत है। मैं आपको बता रहा हूं कि सब के लिए एक आर्डर नहीं है। दूसरे की प्रकृति को Study करके उसको उपदेश करना चाहिए। एक ही लाठी से हांकना सब को ठीक नहीं है। घोड़े के लिए लगाम, हाथी के लिए अंकुश की जरूरत है। सब के लिए एक मत नहीं है। मैं आप लोगों को सतसंग दे रहा हूं। हमारा मक्सदे जिन्दगी क्या है? अपना देश। अपने देश में है क्या? वहां है बेफिक्री, बेग़मी, बेचिन्तपना, खुशी तथा आनन्द, परम शान्ति, वह है हमारा देश। हमने किस चीज़ को हासिल करना है? परम शांति को। वह कैसे हासिल होगी? गुरु के द्वारा। गुरु की बात को आदमी समझ नहीं सकता जब तक कि उसको चित की वृति निरोध ना हो जाए। इस लिए साधन कराया जाता है। साधन मन्जले मक्सूद नहीं है। यह जगत माया का जाल है। इस लिए मैं कहना चाहता हूं कि किसी कामिल इन्सान के अधीन रहो।

ज़रूरी नहीं, उसको गुरु मानो। बाप मानो, भाई मानो, यार मानो, दोस्त मानो, *advice* लो। उसकी सलाह लेकर चलो। तुम्हारी यह जीवन यात्रा अच्छी गुज़र जायेगी। पंडित दौलत राम, समझ गए मेरी बात को। नहीं समझे, समबन्धी छोड़ो। आप मेरे मित्र हैं। मैं आप से प्रेम करता हूं। जो आदमी जिस चीज़ को प्यार करता है वही दूसरे को देना चाहता है। मैं चूंकि इस लाईन का आदमी हूं इस लाईन को प्यार करता हूं। जो मेरे मिलने वाले हैं मैं उन को भी वही मार्ग दिखाना चाहता हूं। आप समझ गए मेरा मतलब, तो अपना देश क्या है। मैं सारी रात इसी खोज में रहा। हमारा देश वह है जहां हमारा Self सब कुछ भूल करके अपने आप में रहता हुआ, बेग़म, बेफिक्र और बेचिन्त रहता है। यही निभय पद वेद मार्ग का है। यही वेदान्त का ध्येय है। यही सनातन धर्म है। यही जैनधर्म है। यही बुद्धमत है। हर एक पन्थ वाला जब उठता है, अपने आप को बड़ा साबत करने के लिए दूसरों का खण्डन करता है ताकि लोग उनकी बात को सुन

लें। मैं किसी का खण्डन नहीं करता। सुनो कबीर दास क्या बताते है। ध्येय पद क्या है।

हंसा सुधि कर अपनो देसा।

कौन सा देश। हमारी वह अवस्था जहां हम शान्त थे। हम अपने आप में थे। अपनी ज़ात में थे। वहां से हम आए हैं इस संसार में। अपनी ज़ात को भूल गए। मगर क़ुदरत भुलानी नहीं है हम को दु:ख देती है इसी लिए देती है। मुसीबतें आती हैं इसी लिए आती हैं। सारा दिन जब तुम काम करके थक जाते हो मज़बूर हो जाते हो सोने के लिए, चाहते हो नींद आ जाए। अगर नहीं आती तो तुम रोते हो। ऐसे ही सब कुछ भूल करके अपनी अवस्था में आ जाना। यह हमारा आखरी मक्सद है। मैंने यह समझा। हो सकता है मैंने जो कुछ समझा हो वह ग़लत हो। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं वह ठीक है।

S. P. Sahib. I may be wrong, whatever I have realised"

हो सकता है मैंने जो कुछ समझा हो, वह ग़लत हो। मैं दावा नहीं करता। मेरा जीवन सच्चाई की

खोज में गुजर गया। वह कौनसा देश है ? मर गया सारी जिन्दगी उसको ढूंडता-२। रात को भी इसी खोज में रहा। एक Condition आ जाती है जहां मैं सब कुछ भूल जाता हूं।

"It is a state of statelessness, Condition of conditionlessness.

दिमाग़ के अन्दर एक ऐसी चीज़ आ जाती है जहां ना यादे खुदा रहती है ना यादे गुरु रहती है, ना परमात्मा रहता है, ना धर्म रहता है. न कर्म रहता है। एक ऐसी Condition आ जाती है जहां मैं सब कुछ भूल जाता हूं। वहां क्या होता है वहां Peace मिलती है। जब वहां से उठता हूं चूंकि ज्ञान है, संसार को देखता हू इसमें रहता हूं, इस में बैठता हूं, उठता हूं, मगर इस में फंसता नहीं। मगर जब स्वप्न आता है तो फंस जाता हू। किसी वक्त याद आ जाती है कि मैं स्वप्न देख रहा हूं। मुझे कोई पता नहीं। मेरा परिणाम क्या होगा। आप लोगों ने बुलाया। मेरे पास जो कुछ था मैंने चार सतसंगों में आप को बता दिया। जैसे औरत अपने आप को पति के हवाले कर देती है मैंने जो कुछ अनुभव

किया या समझा, बच्चो, सब कुछ आपके हवाले कर दिया। यह दावा नहीं करता, मैं जो कुछ कहता हू, ठीक कहता हूं। मुझे जहां शान्ति मिली, मैं वह बात कहता हूं।

"हंसा सुधि कर अपनो देसा।
इहां आई तोरी सुधि बुधि विसरी॥
आन फंसे परदेसा।
अबहु चेतु हेतु करु पिड से।
सतगुरु के उपदेसा।

पिंड हमारा क्या है। जून १९०५ में दृश्य आया मेरे सामने, मैं दाता दयाल को १० मास चिट्ठी लिखता रहा, एक हफ्ता एक चिट्ठी। नाम लिख देता मालिक का और पता उन का लिख देता कोई जवाब नहीं आया। १० मास बाद मुझे जवाब आया। फ़कीर! खत मिलते हैं, मैं तेरे ख्यालात का मान करता हूं। मैंने हकीकत, असलीयत, सच्चाई और शान्ति, (यह चार शब्द थे हकीकत, असलीयत, सच्चाई व शान्ति) राधास्वामी मत में हजूर राये बहादुर सालिग राम से पाई हैं। अगर तुम को इस मार्ग में चलने से इन्कार ना हो तो मुझे लाहौर आ

कर मिल सकते हो। उस वक्त मैंने समझा राधा-राधका स्वामी-कृष्ण, अगर उस वक्त मैं इस बानी को समझता राधास्वामी मत की तो कभी ना जाता। इतफाक से जिस दिन चिट्ठी आई उस दिन छुट्टी के लिए मैंने अरज़ी दी हुई थी। स्टेशन मास्टर आ गए। छुटी मिली मैं वहां पहुचा। आगे उन्होंने सार वचन नज़म मुझे दे दी जिसमें माया स्वांद में सब का खण्डन था। सब का खण्डन पढ़कर मैं चिल्लाया और रो पड़ा। कहते हैं क्यों! मैंने कहा खण्डन है महाराज, समझ नहीं आता। बोले छोड़ो, जब तक मैं न कहूं किताब को हाथ नहीं लगाना। मैंने १९१६ तक किताब को हाथ नहीं लगाया। अभ्यास करता रहा। जब बगदाद जाने लगा तो कहने लगे अब जाओ और पढ़ों। अब मैं समझता हूं। सन्तों का क्या मतलब है। मैं नहीं कहता दूसरे सन्तों का कोई और मक़सद हो। उनका सतलोक कोई ओर हो। मुझे नहीं पता। आग लगे ऐसी गुरुयाई को मुझे नहीं चाहिए। मैं सच्चाई पसन्द इन्सान हूं और इस में मेरी जिन्दगी गुज़र गई। मैंने क्या समझा, यह समझा। क्योंकि मेरे जिम्मे यह

डयूटी थी। दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। यही बात कबीर ने कही है। यही बात हिन्दु शास्त्र कहते है। यही बात गुरु नानक ने कही है। निर्भय, निर्वैर, अकाल मूरत, अजूनी से भंग। मतलब यह कि तुम्हें शान्ति प्राप्त हो। मगर यह कब होगी, केवल अभ्यास से नहीं, सतसंग से। अभ्यास तथा सत्संग दोनों साथ २ चलेंगे समझ गए मेरी बात को। अभ्यास और सत्संग दोनों साथ २ चलेंगे। अब खुद अपने दिल से पूछो जब तुम्हारा लड़का बीमार था तुम्हारे दिल की क्या हालत थी। (मेजर बृज लाल को इशारा करते हुए) जब तुम्हारी औरत पागल हो गई तो तुम्हारे मन की क्या हालत थी। (दुर्गादास 'चमन' के इशारा करते हुए) अगर उस समय तुम नहीं डोले, तो तुम सन्त हो। पहचान सिर्फ इतनी है कि लड़के देने वाला सन्त नहीं बन सकता। बहुत लेक्चर देता हूं। तोते को 'जै सीता राम' पढ़ा दिया जै सीता राम करता रहा, जब बिल्ली आई तो फिर 'जै सीता राम भूल गया टें टें करने लगा। यह हमारा हाल है। S. P. Sahib वेदान्ति हैं। अपने आप को देखें। जज साहिब हैं सोचो, अपने मन को देखो

कि आपके मन की क्या हालत है। अगर दुःख के वक्त आप का मन नहीं डोलता तो आपको किसी अभ्यास की ज़रूरत नहीं। आप मन्ज़ले मक़सूद पर हैं। हमने इस चीज़ को हासिल करना है। नहीं समझ में आती है ? जो intelectual brain रखते हैं, वह इस बात को सोचें।

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपारा।

'दूर गवन' जहां हमने जाना है। वह क्या घर है ? मैं सन्त मत का Critic हूं। नुक्ताचीन हूं। मैंने तब तक किसी को नहीं माना जब तक मेरा अनुभव साथ नहीं होता। क्योंकि मेरे अनुभव के साथ बानियां मिलती हैं इस लिए मैं इनको मानता हूं। अब आखरी मन्ज़ल है ना। वहां क्या होता है ? मैं कह नहीं सकता वहां मेरा Self होता है जिसे ब्यान नहीं किया जा सकता।

"It is a state of state lessness, a condition of conditionless ness.

क्योंकि यह बानियां कहती हैं जेठ मास में :-

नाहिं खालिक, मखलूक न खिलकत
कर्ता कादन, काज न दिक्कत

राम रहीम करीम न केशो

"कुछ नाहिं कुछ नाहिं कुछ नाहिं था सो

इस लिए मैं मानता हूं कि मैं ग़लती पर नहीं हूं। मगर आप लोगों को वहाँ की ज़रूरत नहीं। आप लोगों को अपने कष्ट किसी भेद ज्ञाता को ब्यान करने चाहिएं, जो वह कहता है उस पर अमल करो। मैं आपको अपनी औरत के बारे में बताता हूं। उसके पिछले कर्म बहुत खराब थे। वह जब अभ्यास करने बठती, उसको सांप, बिछु, शेर नज़र आते थे। वह डर जाती थी। मैंने दाता दयाल को लिखा। उन्होंने लिखा, इस के पिछले कर्म हैं। इसको बोलो, अभ्यास ना करे। देखो मैं बताता हूं। उन्होंने लिखा, भाग वन्ती को बोलो, अभ्यास बिल्कुल छोड़ दे। तेरी संगत में रह कर इसका अन्जाम बिस्कुल ठीक हो जाएगा। अब वह मरी कैसे, तुम हैरान हो जाओगे। किसी को पता नहीं लगा। दाईं ओर सोई हुई थी रात को, वहीं सोई रह गई, न तड़पी, ना शरीर हिला, ना कोई और बात हुई, वहीं सोई की सोई रह गई। सब के लिए यह अभ्यास ठीक नहीं है।

अगर आप ने गद्दी बनानी है तो फिर सब को नाम देते जाओ। हर आदमी के लिए अलग-२ तालीम है।

दूर गवन तेरो हंसा हो घर अगम अपार।
नहिं वहं काया नहिं वहं माया नहिं वहां त्रिगुन पसार॥
चार बरन उहवां हैं नाहीं ना है कुल व्योबार।
नौ, छ चौदह विद्या नाहिं. नहिं प्रेम विचार॥
जप, तप, संजम, तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार।
पांच तत्व नहिं उत्पति भईलं, सो परलय के पार॥
तीन देव ना तेंतिस कोटी, नाहिं दसों अवतार।
सोरह संख के आगे होई, समरथ का दरबार।
सेत सिंघासन आसन बैठे, जहां सबद झनकार॥
ओ घर अगभ अपार।

पार ब्रह्म तथा शब्द ब्रह्म, चार ब्रह्म होते हैं, यूं तो ब्रह्म कई हैं। शरीर में एक सबल ब्रह्म, एक शुद्ध ब्रह्म एक पार ब्रह्म, एक शब्द ब्रह्म। सबल ब्रह्म वह रोशनी है जो हमारे शरीर को Physical ताकत देती है। शुद्ध ब्रह्म हमारे मन के अन्दर जो ताकत काम करती है, पार ब्रह्म जो हमारी आत्मा के अन्दर काम करती है और शब्द ब्रह्म जो हमारा

Self जो है उसमें काम करती है। वह हमारा देश है।

"पुरुष रूप कहा बरनौं महिमा, तिन गति अपरमपार।
कोटि भानु की सोमा, जिन्ह के, इक इक रोम ऊजार॥

साइन्स साबत करती है कि सूर्य के परे एक और सूर्य है जिसकी रोशनी इस से $2\frac{1}{2}$ करोड़ गुना ज्यादा है। कितने सूर्य आगे हैं। एक किताब इस बार छपी है "हिदायत नामा" उस में मैंने साबत किया है कि सूर्य कितने योजन है। यह कैसे ठीक है। हर कुर्रा की लम्बाई ज्यादा है। जैसे ज़मीन है। ज़मीन से पानी का कुर्रा ज्यादा है। पानी के कुर्रे के रकबे से हवा का कुर्रा ज्यादा है। हवा के कुर्रे से रोशनी का कुर्रा ज्यादा है। यह स्थूल है। ऐसे ही हमारा मन जो है यह ऊपर लोक हैं। बड़े-२ हमारे कुर्रे हैं। उसमें हम एक अंश रूप हैं। वहां से हम आए हैं। यहां फंसे हुए हैं। वहीं हम ने जाना है। गुरु मिल जाता है। भेद दे देता है।

छर अच्छर दोनो से न्यारा, सोई नाम हमार।

तुम्हारा नाम, हम कबीर हैं तुम भी कबीर हो बशर्तेकि तुम वहां पहुंचो। क्षर कहते हैं स्थूल मादा

को, Changeable को, अक्षर कहते हैं, सूक्ष्म मादा को, मन को, न: अक्षर कारण चीज़ को बोलते हैं। इन तीनों से परे जो चीज़ है वह हमारी ज़ात है। वह असल में तुम हो। मगर हम यहां फंसे हुए हैं हम को पता नहीं, दुख सुख भोगते हैं।

सार सबद को लैंड के आयो, मिरतू लोक मंझार।
चार गुरु मिलि थापल हो. जग के हैं कड़िहार॥

कौन से चार गुरु. गुरु ब्रह्म, गुरु विष्णु, गुरु देव महेश्वर:।
गुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:।

गरु के यह चार रूप हैं अर्थात ज्ञान गुरु के। उत्पति कैसे होती है. स्थति कैसे होती है. इसका ज्ञान। फिर पार ब्रह्म का ज्ञान, फिर जो उन की शरण में जाता है वह वहां पहुंचता है।

उन कर बहिया पकरि रहे हो. हंसा उतरो पार।
जम्बू दोप के तुम सब हंसा. गहि लो सबद हमार।
"दास कबीरा" अब की दीहल. निर्गुन के टकसार॥

कल शाम को मैंने यह शब्द सुना सतसंग में। ख्याल आया फ़कीर चन्द! तू सतसंग कराता है सच्चा हो के चल। तूने वह घर देखा है? मैंने यह देखा कि जब से तुम्हारी दया से मैंने यह सुना

कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होता है मगर मैं नहीं होता, तो मैं प्रकाश और शब्द जाता हूं। क्योंकि मुझे यह सावत हो गया कि मेरे अन्तर जितने रंग रूप नज़र आते हैं यह हैं नहीं, मगर भासते हैं। प्रकाश और शब्द में मैं उस चीज़ को तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है तथा शब्द को सुनती है। क्योंकि वह अलख है लखी नहीं जाती, वह अगम है उसका थाह नहीं मिलता मुझे समझ में आ गया, मेरी आद अवस्था वह है। वहां से Evolution के सिलसिले में मैं नीचे उतरा इस शरीर में आया। गुरु मिल गया। अब पता नहीं मैं वहां जाऊंगा कि नहीं जाऊंगा। यह स्वप्न जो हैं मेरे लिए दुख का कारण बने हुये हैं। सच्ची बात बताता हूं। मैं Feel करता हूं। बुरे स्वप्न मुझे नहीं आते मगर वह तार का महकमा व रेलगाड़ी नहीं छोड़ते। नहीं समझ में आती है, पीछा नहीं छोड़ते, हैरान होता हूं। आप लाग कभी स्वप्न में नहीं आते। यह सुशमना कभी स्वप्न में नहीं आती। क्रान्ति व तुम लोग सब यह मेरे मिलने वाले कभी स्वप्न में नहीं आते। मगर वह रेलगाड़ी व तार क्यों नहीं छूटती ? जब मैं बैठता हूं,

तो सोचता हूं। देखो मैं आपको एक Idea दिए जाता हूं। मैं कुन्दियां स्टेशन पर ASM था। रात के दो बजे १० DN पैसेन्जर आती थी, एन्जिन facing में शन्ट करता था। मैंने लाईन कलीयर दे दिया हालांकि मेरा facing point जाम था। कानून के विरुद्ध था। मुझे असूल के मुताबिक गाड़ी को इजाज़त नहीं देनी चाहिए थी जब तक एंजिन अन्दर ना आ जाता। मैंने सोचा एंजिन अन्दर आ जाएगा। एन्जिन ने खींच मारा। गाड़ियां कान्टे के ऊपर अड़ गईं। मैं घबराया गाड़ी आने वाली थी। मैं डर गया, *accident* हो जायेगा और मर जाऊंगा। उस समय मैंने शोर मचाया। डाका पड़ गया, लुट गए उठो, उठो, बचाओ, बचाओ। साथ वाले मकान वाले आ गए, इक्ट्ठे हो गए, उन्होंने बड़ी कठिनता से धक्का लगा कर काँटे से अन्दर किया। वह जो उस वक्त का ड़र मेरे दिमाग़ पर पड़ा हुआ था। वह ड़र मुझे अब तक भी स्वप्न में कि गाड़ियां गाड़यों से टक्कर खा जाएंगी यह टक्कर खा गई, अब तक भी नहीं छोड़ता। समझ गए मेरी बात को, मैंने क्या कहा। हमारे एक पुलिस का थानेदार था। क्योंकि

उसने डाकुओं को सोटियां मारी हुई थीं तो बैठा हुआ भी कहता था पकड़ लो मार दिया, मार दिया, वह जो संस्कार उसके दिमाग पर पड़े हुये थे वह दिमाग के उपर ही रहे। मेरी बात को आपने समझा, यह रेल गाड़ियां मेरे को क्यों आती हैं तुम अपने स्वप्न को देखा करो। मैं आपको एक बात बताता हूं। एक बार एक आदमी स्वप्न में मेरे लिए खाना लाया। जब मैं खाने अगा तो मैंने कहा, यह तो मास है। जब आंख खुली तो सोचा कि वह गोशत का स्वप्न मुझे क्यों आया। पहली बड़ी लड़ाई में जब मैं जा रहा था बसरे बगदाद को, तो मैं सैकन्ड क्लास का पसैन्जर था। मैंने खानसामां को बोला मैं *Vegetarian* हूं खाना लाओ। वह मेरे लिए खाना लाया। जब खाना खाने लगा तो ज़रा २ से मुझे मांस के टुकड़े मालूम हुए। मैंने कहा, मैंने तुम्हें बोला था *Vegetarian* खाना लाओ। मुझे गुस्सा आया मैंने थाली फैंक कर उसके मुंह पर मारी। मैंने कहा, मैंने तुमको बोला था कि मैं *Vegetarian* हूं। वह बोला, मछली *Vegetarian* होती है। उस वक्त का जो गुस्सा था

वह इतने साल के बाद मेरे सामने आया। भूल जाओ कि जो तुमने कर्म अच्छे या बुरे किए हैं उनका संस्कार तुम्हारे दिमाग़ पर नहीं पड़ेगा बच नहीं सकते। मगर हां, मैं अपना मुंह काला करके आपको बताता हू। मैं बसरे बग़दाद गया हमीदिया स्टेशन पर। रात को मैंने स्वप्न में एक ब्रह्मण खानदान की स्त्री से भोग किया, जब उठा तो सर मारा मैंने मेज़ के साथ कि मैंने क्या किया। एक चिठ्ठी लिखी मैंने अपने बाप को कि मैंने ऐसा २ स्वप्न में किया है मेरे ग्रह देखो। एक चिठ्ठी मैंने दाता दयाल को लिखी। मेरा बाप लिखता है तेरा वर्ष फल निकाला है यह नीच ग्रह पड़ना था। यह काम तुम से होना था। दाता दयाल ने लिखा यह तुम्हारा पिछला कर्म था। चूंकि तुम भक्ति करते हो यह तुम्हारे स्वप्न में भुगत गया। तुम भूल जाओ कि जो कर्म तुमने किए उनका असर तुम पर नहीं होगा। बिल्कुल ग़लत है। अगर नेक हो, तो स्वप्न में भुगत जायेंगे। डर लगेगा बाज़ू कटेंगे या और कुछ होगा। अगर तुम बुरे हो तो जो काम तुमने अच्छे किए हैं उनका फल तुम स्वप्न में भुगतोगे। समझते हो, मेरी बात को।

इस वक्त आप आए हैं। आपको दाता दयाल का शब्द सुनाता हूं। भूल जाओ तुमने खोटे कर्म किए हैं तो बच जाओगे।

"ऐ मेरे प्यारे भाई, देखो संभल कर चलना खोटे कर्म न करना, खोटी न बात कहना।

खोटे कर्म न करना खोटी न बात कहना।
दुख दोगे दुख मिलेगा॥
सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर गम पड़ेगा सहना॥

यह गुरु लोग आप नहीं,बचे, तुम्हें कैसे बचाएँगे। भूल जाओ तुम ने खोटे कर्म जो किए हैं, तो बच जाओगे।

"ऐ मेरे प्यारे भाई। देखो संभल के चलना खोटे कर्म न करना, खोटी ना बात कहना"

कौल और ख्याल करतब।
दरया से हैं मुशाहवा॥
तुम देखना न इनकी, लहरों में पड़के बहना।

देखो न्यूटन की थ्यूरी कहती है। तुम हाथ हिलाओ तुम्हारे हाथ की हरकत आसमान तक जाएगी। इस वक्त चनावों में क्या कुछ होता है। घरों में क्या कुछ होता है। तुम्हारे दिलों में कितनी नफरत है।

"matter never destroyed" जो हम आवाज़ देते हैं वह ज़ाया नहीं जाती यह आकाश तक जाती है फिर वहां से आती है। इस वक्त में जो मौजूदा Political behaviour है यह अमन नहीं लाएगा। घरों में शांति रखा करो बेटियो! बस तुम को बताए देता हूं। जिस घर में कलह है वहां कुछ नहीं।

जिस घर कलह कलन्तर वसे।
उस घर घड़ियों पानी नसे॥

किस्मत एक गड़वी है जो कुछ किसी को मिलना है मिलता है। मैं जो कुछ कहता हूं आप लोगों को सच्चो और अज़माई हुई बात कहता हूं। इस लिए तुम घरों में शान्ति रखा करो। अच्छी औलाद पैदा किया करो। बच्चे पेट में हों तो जिस किस्म के ख्यालात हांगे तुम्हारे उस किस्म के तुम्हारे बच्चे बनेंगे। मैंने दूसरी जमात में हवालदार के लड़के की कलम दवात चुराई। उसने हवालदार को बोला। हवालदार ने मेरे बाप को बोला। मेरे बाप ने मुझे थपड़ मारा। फिर नहीं चोरी की। अब बताओ, छ साल के बच्चे को कोई सिखाता है चोरी करना? नहीं। मैं अपने आप को भाग्यवान समझता हूं कि

मैं गरीब सिपाही का लड़का था। मेरी मां कहा करती थी बच्चा! तुम्हारा बाप वाहिर से कुछ पैसे लाता था। मैं उसकी जेब से पैसे चुरा लाती थी। उनको इकट्ठे करती थी। क्या करती थी? जोड़ती थी। एक बार तेरा बाप बीमार हो गया। पैसा पास नहीं था। तो मैंने वह जोड़े हुए चालीस रुपये उनकी कमर में बांध दिए। मैं उस वक्त मां के पेट में था। गो वह चोरी नहीं है मगर मां ने जो कुछ किया उसका असर मेरे उपर आया सोचो मैं क्या कह रहा हूं। मैं अपना मुंह काला करके अपने घर की बदनामी करके तुम लोगों को मत देता हूं कि यह मेरे साथ बीती। अपनी औलाद ठीक पैदा करो।

"We are responsible for our miseries"

मैंने एक लड़का पैदा किया है। मुझे आज दिन तक उसकी कोई शिकायत नहीं आई। मुझे कोई दुःख नहीं आज तक। दुनियांदारों को तुम सतसंग कराते हो उनको क्या सतलोक की ज़रूरत है? तुम सतसंग कराते हो इनको वह तालीम दो, जो इनको चाहिए-बस शब्द पूरा करो।

"मन इन्द्रियों पै भाई।
ज़बत रखना तुम बराबर॥
ज़ावत बने रहोगे, खुशहाल हो के रहना।
अपनी निशिस्त रखना।
तुम आत्मा पे हर दम।
आत्म सरूप रहकर, संसार में विचरना॥

दाता! ऐ मेरे बनाने वाले! जीवन मिला, तलाश शुरू की, तुमने यह खेल खिलाया, मैंने यह खेल ठीक खेला या ग़लत खेला, भूल चूक मुआफ। तेरी रज़ा में राज़ी हूं। दोस्तो। आपने मुझे बुलाया मैंने अपनी साफ नीयत रखकर जो कुछ समझा, आपको बता दिया। सच्चे दिल से चाहता हूं। आपको सेहत मिले, दौलत मिले और मन को शान्ति मिले।

सबको राधास्वामी!

सत्संग परम दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

१९-३-७८

राधास्वामी !

मैं एक महीना १८ दिन दौरे पर लगा कर आया हूं। पहला प्रश्न तो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तू यह काम क्यों करता है ? तेरी वृद्धावस्था है, ९२ वर्ष की आयु है, तेरा मतलब क्या है और तेरा स्वार्थ क्या है ? मित्रो ! यह बात है कि छोटी आयू में अथवा सात वर्ष की ही आयु में मैं पिछले कर्मों के अनुसार या कुदरत का खेल समझ लो, जिस ने यह दुनियां बनाई है, उसको मिलने वा जानने का विचार था। भिन्न भिन्न धर्मों खासकर भागवत वा रामायण के संस्कारों से उसको पूजता था। जैसा कि मैं कहा करता हूं एक दृश्य द्वारा मैं दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के पास चला गया

उन्होंने संतमत दिया। जब इस संतमत की बाणियां पड़ीं उन्होंने इस दुनियां के पैदा करने वाले को जिस ने यह संसार बनाया है उस को ज़ालम और निर्दयी कहा है और यह कहा है कि जो इस ईश्वर की पूजा करता है वह कभो सुखी नहीं रह सकता और असल स्थान पर नहीं पहुंच सकता ऐसी ऐसी बाणियां मैंने पड़ी हैं। उन्होंने यह भी लिख दिया कि राम और कृष्ण भी नहीं पहुंचे, मुसलमान भी नहीं पहुंचे, हिन्दू भी नहीं पहुंचे, बुद्ध भी नहीं पहुंचा. जैन भी नहीं पहुचा बेद और पुराण भी ग़लत। मेरे लिये यह शब्द एक दुख का कारण थे। मगर मेरा विश्वास दाता दयाल जी महाराज पर से नहीं गया क्योंकि उन्होंने यह संत मत दिया था तो मैं यह समझता था कि मैं ही नहीं समझ सकता। मेरे ही में कोई दोष है। कोई इस में सच्चाई ज़रूर है। इस विचार को लेकर मैंने अपना सारा जीवन व्यतीत किया और यह प्रण किया था कि मैं इस पंथ पर सच्चा हो चलूंगा। जो कुछ मिलेगा मुझ को वह मैं बता जाऊंगा। जो कुछ मैं कर रहा हूं यह मेरा अपना कर्म भोग है। मेरा किसी पर कोई अहसान नहीं है।

मैं यह काम करता हूं अपनी बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता हूं क्या कहना चाहता हूं। अपना अनुभव ! कि जो कुछ संतों ने कहा है यह ठीक है। इस संसार के पैदा करने बाला वास्तव में बड़ा ज़ालम है इस में कोई झूठ नहीं। तुम देखो कि हरी सब्ज़ी पैदा होती है उस को कीड़े खाते हैं उनमें भी जान है। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है, दूसरा कीड़ा तीसरे कीड़े को खाता है, बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है, इसी तरह से हर चीज़ एक दूसरे को हड़प कर रही है। जीवन की स्थितियां व प्रस्थितियाँ कैसी हैं। पाकिस्तान में वही भुट्टो जो किसी समय देश में राज्य करता था आज उस को फांसी की सज़ा मिली हुई है। वही 'इन्द्रा' जो भारत की प्रधान मन्त्री थी आज उसका क्या हाल है? वही मैं था चालीस साल पहले कितना जवान था अब चलना भी कठिन हो गया है। मैंने चूंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, अब मैं बड़े हौसले से कहना चाहता हूं कि जिस शक्ति ने यह संसार बनाया है वह सचमुच बड़ी ज़ालम है। उस ने हम को संसार में पैदा करके दुख में डाल दिया। बच्चा

पैदा होता है उस में होश नहीं होती। बीमारी कुछ होती है किन्तु माता पिता इलाज कुछ करते हैं। जब वह जरा बड़ा होता है वह खेलना चाहता है। माता, पिता उस को पकड़ कर मारते हैं। भई पढ़ो! जवानी आ जाती है बुरे कामों में फंस जाता है। औरत उसको काबू कर लेती है फिर वह बच्चे पैदा करता है। फिर उन बच्चों की देख-भाल करता है। सारी उमर रोने धोने में ही गुज़रती है तो यह दुनियां है क्या? शोक और सन्ताप की जगह है। तुम ज़माने के हालात को देखो कैसे बदलते हैं। क्या किसी का एक रस जीवन रहता है? हम लोग यत्न ज़रूर करते हैं 'यह करो जी-वह करो जी-मगर उस का कोई लाभ नहीं होता। आज़ जो जवान हैं वह कल बूढ़ा है।

मैं उसे जानना चाहता था जिस को संतमत सब से बड़ा परमात्मा अथवा कुल मालिक मानता है और साथ ही देखना चाहता था कि क्या वो जगह है जहाँ सुख दुःख नहीं है। मेरी सारी उमर इसी खोज में गुज़र गई। जगह का तो मुझे पता लग गया है।

एक ऐसी जगह है जहां यह कर्ता पुरुष नहीं है, जहां यह खुदा नहीं रहता, जिस ने यह दुनियां बनाई है, वह एक जगह है, एक हालत है मगर मुझ से अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता यह नहीं पता कि क्यों ? जिस ने यह दुनियां बनाई है उसकी इच्छा या मेरे कर्म हैं इसका मुझे पता नहीं। मैं इस बार बाहर गया हूं क्या कह के आया हूं ? यही कह के आया हूं कि जिस दुनियां में हम रहते हैं इस दुनियां का बनाने वाला ज़ालम है। दुनियां ईश्वर को पूजा करती है अरे ! किस को पूजा करें ! क्या हमें जो पैदा करके हमारी जान को मुसीबत में डालता है उस को पूजा करें ? अगर कोई भक्त राम का हुआ, गुरु का हुआ, अभ्यासी हुआ, अगर वह दुख न उठाता तो मैं मान जाता कि इस इश्वर की भक्ति करने से कुछ हमें मिल जायेगा। मैंने गुरुओं के हाल देखे इतिहास पढ़ लो। गुरु अर्जुन देव जी जिन्होंने लिखा।

प्रभु सिमरन से दुशमन टरे।

किन्तु उनके भाई ने उन के साथ दुशमनी की। तो प्रभु सिमरन से क्या लाभ? दुशमनी के भाव को टाल

न सके। यही एक प्रश्न है जिसका उत्तर किसी के पास नहीं। अच्छा, अर्जुन ने गीता के १८ अध्याय श्री कृष्ण जी के मुखसे सुने मगर भागवत तो कहता है कि पांचों पांडव नर्क में गये। तो फिर कृष्ण जी को पूजा करने से क्या बना ? मैं यह प्रश्न अपनी आत्मा से किसी पक्षपात, खण्डन अथवा समालोचना की दृष्टि से नहीं कर रहा किन्तु सच्चाई की खोज करना चाहता हू कि What is the reality and what is the truth ? श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को आशीर्वाद दिया था कि तू मुझे सबसे अधिक प्यारा है मगर जब श्री कृष्ण जी का देहावसान हुआ तो उनकी कुल के सदस्य आपस में लड़ कर मर गए। स्त्रीयां रह गई अर्जुन गया उनको ले आया, रासते में भीलों ने औरतें छीन ली तो अर्जुन का धनुष वान किदर गया ? स्वामी राम कृष्ण परम हंस जी इश्वर के भक्त कहलाते थे उनके साथ क्या हुआ ? मेरी बुद्धि काम नहीं करती, मैं हार गया। मैं उस स्थान की तलाश करता हू जहां जाकर मुझे कोई दुख न व्यापे और ना यह संसार ही मेरे सामने आये। इस जगह का पता तो मुझे लग गया मगर मैं वहां ठहर नहीं

सकता। आज यत्न बहुत किया मगर खांसी थी, छाती में घरड़, घरड़ होती थी।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या शिक्षा बदलूं। पहली शिक्षा तो यह बदलना चाहता हूं कि जिस मालिक ने इस संसार को पैदा किया, उसने हमें अपने रूप का और अपनी इच्छा से पैदा किया। उसने पेड़ चान्द,-सूर्य अर्थात सब संसार बनाया। जैसे वह ज़ालम है वैसे हम भी ज़ालम हैं। हम संतान अपने स्वाद, सुख और आराम के लिए पैदा करते हैं। किसी को क्या पता कि वे T B. से मरेंगे या केद काटेंगे। अगर कोई सोचता है तो मुझे बताओ। मैं चाहता हूं कि जो अनुभव मैंने किया है उसका निर्णय बड़े-२, संत करें, शायद मैं ग़लती पर हूं। मुझे इस बात का दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूं वही ठीक है। मैं स्वयं सोचता हूं कि क्या मैंने जुलम नहीं किये। मेरी बड़ी लड़की पैदा हुई। मैं चाहता था कि मेरे हां ऐसा बच्चा पैदा हो जो कामी, क्रोधी, लोभी, मोही और मानी न हो। वैसी ही लड़की पैदा हुई।

वह नीमउन्मत है। क्या मैं सुखी हूं ? क्या मैं दोषी नहीं हूं ? मैं दोषी हूं। इस वास्ते मैं कहे जाता हूं कि इस समय सन्तान का पैदा करना महान पाप है। जो ये बच्चे पैदा होते हैं ये *Uncalled for Children* हैं। संसार को विपत्ति में डालना है। आप स्वयं सोचो विपत्ति में हो या कि नहीं, अगर मेरे माँ बाप होते तो मैं पूछता कि मुझे क्यों पैदा किया। बुढ़ापा है, बानवे साल की आयु में कभी खांसो, कभी पेट दर्द, कभी खुजली और कभी कुछ है। यह संसार क्या है? सन्तों ने इस संसार से बचने के लिए जो इलाज बताया शायद वह ग़लत है या ठीक है। इसका निर्णय मैं अभी नहीं कर सकता इसका निर्णय मेरे मरने के बाद होगा। मैंने देखा राधास्वामी दयाल जिन्होंने ये शब्द कहे हैं पिछली आयु में दो साल बहुत बीमार रहे। चेलों ने कहा कि स्वामी जी ने ऐसी बीमारी लगाली कि डाक्टरों और वैद्यों को पता न लगा। उनकी बुद्धि को चक्कर में डाल दिया आखिर आरती कराकर सतधाम चले गये। मैं कैसे मानूं ? कौन ऐसा आदमी है जो अपने अन्दर बीमारी पैदा करके

संसार को चकित करे ? ये जितनी बातें हैं तुम लोगों को मूर्ख बनाने के लिए घड़ी हैं।

मेरी तो आंखें खुल गईं। इस बार जब मैं भूदेव के गांव में गया तो एक आदमी ने बताया कि बाबा। आप ने मुझे फांसी से बचा दिया। मैं उसकी बात को सुनकर चकित हो गया। मैंने पूछा भाई ! क्या बात है, तूने क्या कहा ? उससे कहा मुझ पर कतल का मुकद्मा था। किसी ने आपका नाम बताया था। मैं आपका ध्यान करता रहा। आप मुझे कहते रहे कि तू बच जायेगा। मैं बरी हो गया। अब जब मैं ऐसी बातें सुनता हूं तो मैं अपनी आत्मा से पूछने का अधिकार नहीं रखता कि क्या तू उसके अन्तर गया था और उसे कहा कि तू बरी हो गया ? मैं नहीं गया। अगर सचमुच जो कुछ मेरे साथ गुरु बनके बाती अगर इन पिछले और वर्तमान गुरुओं के साथ भी ऐसा ही हुआ तो मैं निर्भय होकर कहे जाता हूं कि इन गुरु जनों ने संसार के भोले भाले जीवों के अज्ञान का अनुचित लाभ उठाया है

मैं अगर शब्द का प्रयोग करता हूं। मुझे पता नहीं, ये जाते होंगे। मैं कहीं नहीं जाता न ही मुझे पता होता है। जो कुछ किसी को इस संसार में मिलना है वह उसका इस जन्म और पिछले जन्म का कर्म है।

नागी साहिब का तीसरा लड़का है जिसने दो वार परीक्षा दी और असफल रहा। मैं अपनी आत्मा मे पूछता हूं कि तू गुरु बना हुआ है तू चाहता था कि यह पास हो जाये। क्या तेरे विचार ने इसे पास कर दिया ? यह एक प्रश्न है। ये लोग मेरा मान करते हैं। नागी साहिब ने आरती उतारी तो मेरे सिर पर कोई जिम्मेदारी है कि नहीं। मैं वह ज़िम्मेदारी पूरी कर जाना चाहता हूं। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा संसार को बता जाऊंगा। दाता दयाल ने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। पता नहीं उन्होंने मेरे दिल को रखने के लिए सच्ची या झूठी आज्ञा दी, यह वह जानते होंगे, मुझे पता नहीं। मगर मैंने देखा कि दाता दयाल की धाम उजड़ गई। अगर वह सचमुच ही चौथे पद या काल से परे रहते ये तो वह धाम को क्यों न वचा सके ?

आप लोग आते हैं मैं चाहता हूं कि मेरे ये भाषण बड़े-२ महापूरुष पढ़ें और बतायें कि मैं ग़लत हूं या ठीक हूं। जब मैं बड़े बड़े सन्तों के हाल देखता हूं तो कांप जाता हूं। मैंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस की दशा पढ़ी, जिनमें बड़ी शक्ति थी, और उनके बड़े-२ चेले स्वामी विवेकानन्द जैसे थे, वह कैंसर Cancer मे मरे और उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। लोग कहते हैं कि संतों को कष्ट नहीं होता। यह सब बकवास और बहाना करते हैं। कौन कहता है कि सन्तों को कष्ट नहीं होता ? मैं भी यही समझता था। किताब में लिखा है कि जब बाबा सावनसिंह जी बीमार हुये और उन्हें टीका लगाया गया तो कहने लगे,हाय मुझे तुमने ज़हर दे दिया! अगर इन्हें कष्ट न होता तो हाय क्यों कहते। जब मैं बीमार होता हूं तो क्या मुझे कष्ट नहीं होता? होता है। जब मैं एक वार धाम गया तो दाता दयाल कपड़ा लिए हुये लेटे थे। मैंने प्रेमवश उनके पांव पर सिर रखा।उन्होंने हाय कहकर टांग पीछे खींचली। मैंने पूछा महाराज ! क्या हुआ। कहने लगे मैं ईन्टें ले जा रहा था। ईन्ट मेरे पांव पर पड़ गई और घाव हो गया। ऐसी रोचक और भयानक बातें कहकर हम

गरीब गृहस्थियों को इन महात्माओं, धर्मबालों, पंथवालों, गुरुओं, मंदिरवालों, ब्रह्मणों और मौलबियों ने अपने पीछे लगाया। हम कुछ नहीं जानते। हमारी तो यह बात है :—

जिस नाल करां गल्लां।
उस नाल ऊठ चलां॥

कहावत है कि जिससे बात करो उसके साथ चल पड़ो।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। अगर मैं ग़लत हूं तो मैं संसार के गुरुओं को कहता हूं कि मेरा खण्डन करो। मैंने सारी आयु खोज में व्यतीत करदी अपना सारा जीवन सच्चाई ढूंडने के लिए लगा दिया कि हकीकत क्या है ? मातव को कहां शांन्ति है ? अगर संतों को मरते समय शांन्ति मिल जाती और उन्हें कोई कष्ट न होता तो मैं मान लेता कि ईश्वर की भक्ति करने से कुछ लाभ हो सकता है। मैंने सुना है कि नामदेव के सिर को मुसलमानों ने गाये के चमड़े के बीच दे दिया। बड़े-२ महात्माओं को कितने दुख हुये तो फिर क्या करना

चाहिए । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं । आपको कुछ नहीं कहता । दोस्तो ! इस गुरुआई को आग लगे, मैंने इससे क्या लेना है । आप लोगों को कहना चाहता हूं कि मैंने यह समझा है । आप अपने-२ गुरुओं और महात्माओं को पूछो कि एक बूढ़ा आदमी अपने जीवन के सघर्ष के बाद यह कहता है। तुम बताओ कि सच है या झूठ है । कबीर साहिब जिन्होंने इतने ऊंचे ऊंचे शब्द लिखे मैंने उनका जीवन चरित्र पढ़ा है । पिछली आयु में वह साढ़े दस साल दर्द गुर्दा से बीमार रहे तो मैं क्या कहूं । ऐसा कोई उपाय है जिससे हम इस संसार चकर से बच जायें ?

पहला उपाय यह है कि ऐ मानव ! तू संतान पैदा मत कर अगर संतान चाहता है तो उन सिधान्तों के अनुसार पैदा कर जो तेरे लिए लाभदायक हों, एक आदमी T.B. आतशिक या किसी और बीमारी में ग्रस्त है । वह स्त्री के पास जाता है और बच्चा पेट में आ जाता है तो क्या वह बच्चा स्वस्थ रहेगा ? नहीं । वह बीमार रहेगा । मैंने किसी जगह बड़े सिरों वाले छोटे छोटे बच्चे देखे । उन्हें देखकर डर लगता था । डाक्टरों ने उनके औपरेशन भी

किये लेकिन कुछ न बना। यह काम का अंग इतना प्रबल है कि जिसने सारे संसार को बरबाद कर दिया। हम दुखी हैं। मैं बाहर जाता हूं कोई आदमी भी मैंने ऐसा नहीं देखा जो दुखी न हो। किसी को लड़के का दुख, किसी को भाई का दुख और किसी को स्त्री का दुख। मैं खोजी *Researcher* हूं मैं देखना चाहता हूं कि सच्चाई है कहां? सुख और शान्ति कहां मिलती है? कोई बताता नहीं। लोग सन्यासी और साधु हो जाते हैं। इनसे पूछो कि क्या उन्हें शान्ति मिल गई है? मैं भाषण देता हूं। संसार वाले मेरे भाषण को सुन कर चकित हो जाते हैं लेकिन जब मेरे शरीर को कष्ट होता है तो नानी याद आ जाती है। लोगों को उपदेश करना आसान है लेकिन अमल करना कठिन है। यही बात स्वामी जी ने कही है। इस संसार के बनाने वाले यहां तक कि ब्रह्म और पारब्रह्म का भी खण्डन किया है। मैं एक साधारण ब्राह्मण के घर पैदा हुआ, अगर मैं स्वामी जी, कबीर साहिब की किताबें न पढ़ता तो कभी भी संतमत में न आता। कौन आदमी अपने पूर्वजों की बुराई सुन सकता है। अगर किसी सिख

को गुरु नानक साहिब के विरुद्ध कुछ कहा जाये तो वह कृपान निकाल कर सिर उतार देगा । अगर किसी मुसलमान को कुरानशरीफ या मुहम्मद साहिब के विरुद्ध कहा जाये तो देखो ।

मैं स्वयं देखना चाहता था कि जो कुछ संतों ने अन्तिम अवस्था बताई है, क्या वह है या कि नहीं ? या उन्होंने भी हमारे साथ चार सौ बीस की है ? अब मैं महसूस करता हूं कि ये महात्मा जो कुछ कहते हैं मैंने इससे उलट सगझा यद्यपि पांच उगलिएं बराबर नहीं होती, हर जगह *Exception* है । लोग कहते हैं नाम लेलो गुरु तुम्हें अन्त समय ले जायेगा । अरे दिवानों ! हम लोगों के साथ इन गुरुओं ने इतना अन्याय किया है और मजबर होकर हम फंस गये । हम लोगों ने अपने बच्चों के पेट काट कर इन गुरुओं के मंदिर आश्रम और डेरे वनाये केवल इस विचार से कि गुरु अन्त समय ले जाता है या हमारा गुरु बाबा फकीर ले जायेगा यह बिल्कुल झूठ है । लोग मरते हैं, कोई कहता है घोड़ा लेकर आया, कोई कहता है पालकी और कोई हवाई जहाज बताता है लेकिन मेरे तो बाप को पता नहीं होता

कि कौन मर गया। यह मैं जानता हूं कि गुरु ले जाता है लेकिन वह बाहर का गुरु बाबा फकीर या कोई आदमी नहीं है, वह गुरु ज्ञान, समझ और विवेक है। जिस प्रकार की श्रद्धा, विश्वास और विचार तुम्हारे मस्तिष्क पर बैठा है वह तुम्हें ले जायेगा। लेकिन हमें इसके उलट बताया गया कि नाम लेलो अन्त समय तुम्हें बाबा फकीर या और कोई गुरु ले जायेगा। अब हर महीने आकर बाबे फकीर के मंदिर को देते रहो, बाबे फकीर को मोटर गाड़ियों पर चढाते रहो। यह जुल्म और अनर्थ देखकर प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया और में स्पष्ट वर्णन करने के लिए विवश हो गया। अगर मैं ग़लत हूं तो दूसरे बतायें। आज दिन तक यह काम करते हुये छत्तीस साल हो गये किसी ने भी मुझे यह नहीं कहा कि मैं जो कुछ कहता हूं यह ग़लत है। गुरु ले जाता है लेकिन वह गुरु बाहर बैठा बाबा फकीर चन्द नहीं है ऐसी गुरुआई को आग लगे। अगर मैं आपको सच्ची बात नहीं बताता तो आपका दिया हुआ पैसा मन्दिर को खा जायेगा। जो इस धन को खायेगा उसका सत्यानाश हो जायेगा क्योंकि उसमें धोखा फरेब और झूठ होगा।

इस संसार के बनाने वाले को सन्त ज़ालम और निंदई कहते हैं । मैंने इस बात की खोज करने में आयु व्यतीत कर दी कि क्या सचमुच जो इन्होंने कहा वह ठीक है और सन्तों का कोई ऐसा भगवान है जिसे यह सर्वाधार कहते हैं। तुम सन्तों की वाणी को पढ़ो उसमें लिखा है मालके कुल, मालके कुल। मालकेकुल है भी या नहीं या कबीर, राधास्वामी दयाल और सन्त केवल बड़ाई करवाने के लिए ही दूसरों का खण्डन कर गये ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। आज स्वामी जी की बाणी द्वारा उसका उत्तर देता हूं।

चार खान चौपड़ जग रची,
अण्ड जेर सेदज उदभिजी,
माया ब्रह्म पुरुष पिरकिरती.
मन इच्छा खेलें शिव शक्ति,
सुरत नर्द ता में बहुपची,
धुम खेल की अति कर मची,
तीन गुनन का पासा लीन्हा,
रजगुन, तमगुन सतगुन चीन्हा,

मैं आप लोगों को कुछ नहीं कह रहा। ऐसा क्यों कहता हूं ? आप लोगों का मैं आभारी हूं क्योंकि आप के आने से मुझे अपने कर्म काटने का अवसर

मिल जाता है। क्या मैं किसी पर एहसान करता हूं ? बिल्कुल नहीं। मैं अपने आपसे पूछता हूं फकीरचन्द ! दाढ़ी बढ़ा ली है और लोगों को उपदेश करता है तू बता, क्या तुझे माया का पता लग गया कि माया और ब्रह्म क्या चीज़ है ? जितनी बुद्धि मुझे मिली हुई है उसके अनुसार कहता हूं, दावा कोई नहीं। उदाहरण द्वारा समझाता हूं। जिस प्रकार ज़मीन में नमी है, उसमें बीज डालो, उस पर सूर्य की किरणें पड़ने से उसमें से अंकुर पत्ते फूल और फल पैदा हो जाते हैं उसी प्रकार जब प्रकाश शरीर में आता है तो बैसे ही बोधभान पैदा हो जाते हैं। वेल मच्छली के और बोधभान, सांप के और बोधभान, बिछु और मानव के और बोधभान। वे जो बोधभान Feelings पैदा होती हैं Physical mental and spiritual feelings सब की सब माया हैं। मा का अर्थ मापना और या अर्थात यन्त्र। जिससे कोई चीज़ मापी जाती है। वह हमारे अन्तर हमारी बुद्धि है। प्रकाश, आद माया है यह चार प्रकार की सृष्टि अर्थात बनस्पति, पशु, पक्षी और मानव को बनाती हैं और अकल मानती है। मैं यह कहूं कि प्रकाश न हो तो संसार

नहीं बन सकता यह ठीक है। अगर कोई चाहे कि वह प्रकाश में सदा रहे और फिर इस रचना से बच जाये तो यह असम्भव है। क्योंकि प्रकाश, ब्रह्म, पुरुष और प्रकृति का यही काम है। प्रकाश फैलता है, बत्ती जलाओ और रोशनी होगी। इस लिए जो आदमी सारी आयु प्रकाश को देखते रहते हैं और प्रकाश या ब्रह्म को अपना इष्ट मानते हैं अगर वे चाहें कि वे सदा के लिये संसार से बच जायें वे बच नहीं सकते। रामायण और भागवत में लिखा है कि जब कृष्ण अवतार हुआ तो वह ब्रह्म लोक से आया और वहां जो रूहें थी वह कोई गोप बना, कोई हनुमान और कोई कुछ बना। सच है या झूठ यह हमें पता नहीं। तुम प्रकाश का साधन करते हो तुम प्रकाश में चले जाओगे। जब उसकी मौज होगी तो तुम्हें फिर आना पड़ेगा। इस बात को मेरी बुद्धि मानती है। इसलिए प्रकाश संतों के मार्ग में अन्तिम अवस्था नहीं है अर्थात ब्रह्म या ईश्वर जो संसार को पैदा करता है यह अन्तिम अवस्था नहीं है। प्रकाश तो ईश्वर ही है जो संसार को पैदा करता है। अगर तुम ईश्वर के साथ लगे रहोगे तो कुछ समय के लिए तुम्हें मुक्ति मिल

जायेगी लेकिन जब उसकी इच्छा होगी तो तुम्हें फिर वापिस आना पड़ेगा।

सुरत नर्द ता में बहु पची,
धूम खेल की अति कर मची।

इस बात को समझने के लिए कि सुरत क्या है मैंने सारी आयु खोदी। कई बर्ष बीत गये, पता नहीं, लगता था। क्यों ? मैं तो दाता दयाल के मुखड़े, ईश्वर या परमात्मा से प्रेम करता था। जो चीज प्रेम करती है वह सुरत है। मेरी दृष्टी अपनी ओर तो जाती नहीं थी। मेरा ध्यान गुरु के स्वरूप प्रकाश शब्द दृश्यों या सिद्धि शक्ति की ओर जाता था तो मुझ सुरत का कैसे पता लगता। यह असम्भव था। यह पता मुझको दाता दयाल और आप लोगों की दया से लगा। मैं दाता दयाल को तंग किया करता था कि मुझे वह जगह बताओ जिसे राधास्वामी या कबीरमत बताता है। वह कौन सी जगह है ? उन्होंने १९१८ में मेरी गोद में पांच पैसे और नारीयल डाल कर मुझे मत्था टेककर कहा था कि तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा जो तुम्हें उस मंजल पर पहुंचा देगा। अब वह मिल गया। जब से

मुझे पता चला कि मेरा रूप तुम लोगों के अन्तर प्रकट होता है मगर मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि जो उनके अन्तर बाबा फकीर, बाबा सावनसिंह, राम या कृष्ण आया वह उनका अपना ही मन और माया थी। अरे! कभी आप ने सुना कि किसी हिन्दु को अभ्यास में मुहम्मद साहिब दिखाई दिए या ईसा मसीह दिखाई दिए या किसी मुसलमान को राम, कृष्ण सीता या हनुमान दिखाई दिये? नहीं! नहीं!! नहीं!!! क्या किसी स्त्री को ऐसा स्वप्न आया है कि वह पुरुष बन गई, उसने विवाह किया और बच्चे पैदा किये? क्या आप को कभी ऐसा स्वप्न आया कि आप स्त्री बन गये? जिस२ प्रकार का संस्कार तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़ा हुआ होता है वही दिखाई देता है। मैंने जो कुछ समझा है शायद ग़लत हो लेकिन मेरी नीयत साफ है। यह दावा करना किसी आदमी का कि उसे सारे संसार की हालत का पता है, ग़लत है। मैं तो यह कहता हूं कि न कबीर साहिब को, न स्वामी जी को और न मेरे जैसे फकीर को पता लगा। प्रकृति के भेद को कोई नहीं जान सकता। जितना जितना किसी को

अनुभव हुआ उसने लिख दिया । क्या चार खान चोपड़ है ? यह बनाने वाला प्रकाश है । जब तक कोई आदमी प्रकाश में रहता हुआ मरता है उसे अच्छी जगह मिलेगी और अच्छे देश में जायेगा । क्या वह देश है । हां है । मैं क्यों कहता हूं ? जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है, मैं तो होता नहीं तो मेरे अन्तर जितने रंगरूप वा शक्लें पैदा होती हैं उनको छोड़ जाता हूं क्योंकि मुझे विश्वास हो गया कि जब मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता तो कोई दूसरा गुरु भी नहीं जाता है । मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? क्योंकि बाबा चरणसिंह, सन्त कृपाल सिंह और तीन चार महात्माओं ने मेरे सामने माना कि वे नहीं जाते तो मुझे विश्वास हो गया । मगर वे पब्लिक को नहीं बताते । अगर यह ठीक है कि पिछले महात्मा नहीं गये और इस राज को छुपा गये तो तुम लाख कहो वे सतलोक चले गये, मैं तो कहता हूं कहीं नर्क कुण्ड में होंगे । कितना धोखा हमें दिया गया । हम गृहस्तियो को मूर्ख बनाकर लूटा जा रहा है । अपनी मान प्रतिष्ठा, धन धान्य के

लिए कोई सच्ची बात नहीं बताता। स्वामी जी ने ठीक कहा है।

सुरत नदी ता में बहु पचो।
धूम खेल की अति कर मची।

एक तो बाहर के संसार का खेल है दूसरे हमारे अन्तर का खेल है अर्थात चान्द सितारे बाहर का संसार और हमारे मन के संकल्प विकल्प अन्तर का खेल है। आपके चरणों की मिट्टी सिर पर रखने से मुझे पता लग गया कि जो कुछ भी मेरे अन्तर प्रकट होता है असल में यह है नहीं केवल माया है Impressions and suggestions हैं। हम उनको सच मानकर उनमें फंस जाते हैं। एक भगवान का खेल बाहर का है और दूसरा भगवान हमारे अन्तर हमारा मन है। वह खेल खेलता रहता है। जो कुछ मैं कह रहा हूं यह भी तो खेल ही है। सुरत क्या है? इसका पता आप लोगों की दया से लगा। जब से पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। मन को छोड़ने के बाद आगे प्रकाश और शब्द है। जो चीज़ प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह सुरत है। वह तुम और

हम हैं। इसका मुझे पता नहीं लगता था। में तो सारी आयु दाता दयाल के रूप को ही पूजता रहा। पहले बचपन में राम को पूजता रहा फिर गुरु के रूप को पूजता रहा मगर सुरत का पता नहीं लगता था। दाता दयाल ने कहा था कि तुझे सच्चा सत्गुरु, सत्संगियों के रूप में मिलेगा। तुम लोगों की दया से मुझे सुरत के रूप का पता लग गया। अब मैं कोशिश करता रहता हूं कि सुरत को जो कुछ भी मेरे अन्तर है उस से अलग करलूं। कभी दो या तीन महीने में जब सुरत अलग हो जाती है तो फिर क्या होता है ? क्या कहूं क्या होता है। जो कुछ संत कह गये वह होता है :-

जेठ महीनां जेसा भारी,
जीवन हिरदे तपन करारी।
संत दयाल जीव हितकारी,
भेद कहें अब निज कर भारी।
नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत,
करता कारन काज न दिक्कत।
राम रहीम करीम न केशो,
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो.

जब वह चीज़ अपने आद में चली जायेगी फिर वह जात हो जायेगी अर्थात अपनी हस्ती Individuality

अपना आप गुम कर देगी। यह उपाय इस संसार से बचने का है। इस लिए संत कहते हैं Know thyself by thyself.

आप आप का आप पहचानो ।
कहा और का नेक न मानो ॥

गुरु नानक साहिब कहते है :—

कहे नानक बिन आया चीने मिटे न भरम की काई ।

मुझे पता नहीं कि राधास्वामी, दाता दयाल या गुरु नानक साहिब ने अपने आपको क्या पहचाना। मैंने क्या पहचाना ? सत्संगियों की दया से जब यह पता लगा कि मेरा रूप उन की सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मैं मन को छोड़ जाता हूं मगर जब कभी कोई कष्ट होता है तो मुझे नानी याद आ जाती है। मैं सुरत को अलग नहीं कर सकता, बहुत कोशिश करनी पड़ती है। सांसारिक दुख की मैं शायद इसलिए परवाह चिन्ता, नहीं करता क्योंकि प्रकृति ने मेरा प्रबन्ध किया हुआ है : मेरी सेवा होती है। अढ़ाई सौ मेरा लड़का भेज देता है. दो सौ कटनी वाले भज देते हैं एक सौ दुर्गा दास चण्डीगढ़ वाला भेज देता है इससे मेरे घर का खर्च चलता है। अगर मुझे ये रुपये न आते और फिर मैं

इस अवस्था में होता तो मेरी बहादुरी थी। इस वास्ते मैं संसार को धार्मिक शिक्षा नहीं देता। मैंने सबसे पहले 'मनुष्य बनो' की आवाज उठाई है। सब से पहले रोटी का प्रबन्ध करो। जिसके पेट में रोटी नहीं उसे ईश्वर से क्या मतलब। सब झूठ है।

प्रागन्दा रोज़ो प्रागन्दा दिल।

जिसका रोटी का प्रवन्ध नहीं है वह भगवान को याद नहीं कर सकता और न संतमत का अधिकारी हो सकता है। स्वामी जी को क्या पता कि जिसके घर प्रात: के लिए रोटी का प्रबन्ध नहीं है उसकी क्या दशा होती है। वह कुछ नहीं जानते थे क्योंकि वह अमीरों के घर पैदा हुये थे। भाइ ऐसा मिला था कि वह सेवक था। राय साहिब जैसे चेले जो कन्धों पर उठाये फिरते थे। इस लिए मैंने शिक्षा को वदल दिया। दाता ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मैं बदले जा रहा हूं सबसे पहले रोटी का प्रबन्ध होना चाहिए पीछे सब काम। कई सन्यास धारण कर लेते हैं। वे ठूठा हाथ में लेकर दूसरों के घरों का टुकड़ा मांगते हैं। यह क्या है ? वे काम नहीं करते, बेकार बैठ जाते हैं। वे समझते हैं कि ऐसा करने से

हमें मालिक मिल जायेगा यह सब बकवास है। पिछला समय और था। उस समय जब लोग सन्यासी हो जाते थे तो गृहस्थियों के सिर पर एक जिम्मेदारी होती थी। उस समय यह नियम था कि अगर कोई सन्यासी, साधु या महात्मा किसी गांव में चला जाये तो उस गांव के लोग उसका प्रबन्ध करें फिर उसे आज्ञा थी कि तीन दिन से अधिक वह एक जगह न रहे ताकि गृहिस्थयों पर बोझ न पड़े। अब जमाना बदल गया। अब ऐसी बात नहीं है। स्वामी जी कहते हैं :—

चार खान चौपड जग रची,
अन्ड जेर सेदज उदभिजी।
माया ब्रह्म पुरुष पिरकिरती,
मन इच्छा खेलें शिव शक्ति।
सुरत नर्द ता में बहु पची,
धूम खेल की अति कर मची।

ठीक है, यह संसार खेल है और हमारे अन्तर हमारा मन भी खेल करता है :—

तीन गुनन का पासा लोन्हा,
रजगुन तमगुन सतगुन चीन्हा।

यह क्या है ? ये *feelings of mind* हैं । ये मन के वोधमान की अवस्थायें हैं, तमोगुण, रजोगुण और सतोगुण । जिनका मन शान्त रहता है वे सतोगुण हैं, जिनका मन चंचल है अर्थात तरह तरह के विचार उठाता रहता है बे रजोगुन हैं और जिनका मन आलसी, कुछ हिम्मत नहीं करता वे तमोगुण हैं । यह हमारे मन की दशा है । यह किसने बनाया ? यह प्रकाश और ब्रह्म ने वनाया क्योंकि उसका यही काम है ।

कर्म हाथ से पासे डारे,
भोग अंक ता में विस्तारे ।

हम वासना करते हैं । वासना से कर्म और इच्छा पैदा होती है जिससे हम कर्म करते हैं । इससे यह सारा क्रम चलता है ।

झूठी बाजी जानी सच्ची, कोई पक्की कोई मारे कच्ची

यह बाणी मेरी समझ में नहीं आती थी । मैं मालिक के आगे रोया करता था कि ऐ मालिक ! मैं तुझे मिलने निकला था, मैं कहां फंस गया । झूठी और सच्ची बाजी क्या है ? जब आप कहते हैं कि मैं

आपके अन्तर प्रकट हुआ मैं तो होता नहीं आप मुझे समझते हो, क्या वह झूठी बाज़ी नहीं है ? तुम समझते हो तुम्हारे अन्दर राम आ गया। बड़े हंसते और प्रसन्न होते हो हालांकि वह राम नहीं है। अगर तुलसीदास, रामायण के लिखने वाले को सचमुच असल राम दिखाई देता तो वह पिछली आयु में तीन साल क्यों बीमार रहते, जो लिखते हैं।

चित्रकूट के घाट पर पड़ी संतन की भीड़।
तुलसीदास चन्दन घिसें तिलक देत रघुवीर॥

वह असली राम नहीं था, वह उसका अपना ही मन था। उसने झूठी बाज़ी सच्ची समझी। इसलिए उनको कष्ट हुआ। मेरे साथ क्या हो मुझे पता नहीं I dont know how I will die मुझे इतनी प्रसन्नता अवश्य होगी कि मैंने इस जन्म में कोई धोखा फरेब और चार-सो-बीस नहीं की सिवाय काम अंग के, क्योंकि मेरा छोटी आयु में विवाह हो गया था जिसमें मेरा कोई दोष नहीं था।

नर्द सुरत चौरासी घर में।
भरमत फिरे दुक्ख और सुख में।

वो जो सुरत इस ज्ञान के बिना जो हमारे अन्तर प्रकट होता है उसे सच मानती है चौरासी के घर में फिरना है। दुख और सुख उठाना है। फिर मुक्ति कौन देता है? गुरु का ज्ञान। गुरु मुक्ति नहीं देता गुरु का ज्ञान मुक्ति देता है। यही स्वामी जी ने कहा है।

गुरु ज्ञान न पाओ री सखी तेरी यूंहि उमर विहानी।

शास्त्र भी यही कहते हैं कि ज्ञान विना मुक्ति नहीं। वह ज्ञान यह नहीं कि मैं खुदा या ब्रह्म हूं। अहं सत्यं बल्कि यह कि मैं हूं कौन? मैंने यह समझा कि मैं सुरत हूं, वह न प्रकाश न शब्द न मन और न शरीर है। वह सब की साक्षी है। मगर यह भूल जाती है कि जो कुछ वह देख रही है यह झूठी बाज़ी है। वह अन्तर में जसको सच्ची समझती है। इस सच्चाई को बताने के लिए सन्तों का प्राकट्य होता है और वे जीव को ज्ञान और सार बताकर इस चक्कर से निकालने का यत्न करते हैं। स्वामी जी ने यही कहा है :—

गुरु ने अब दीना भेद अगम का।
सुरत चली तज देश भरम का।

भटकन छूटा देहरा हरम का।
संशय भागा जनम मरन का।

ऐसे शब्द स्वामी जी ने लिखे हैं।

झूठी बाज़ी जानी सच्ची, कोई पक्को कोई मारे कच्ची।

यह क्या है ? स्वामी जी को पता होगा कि उनका क्या भाव था। मैं तो जानता नहीं मगर यह समझता हूं कि जो पाशा खेलते हैं, उसमें चौरासी घर होते है। जब हम गोट को पका लेते हैं तो उसे बीच में रख लेते हैं जब चाहें उसे निकाल कर खेल में ले आते हैं। आपकी गोट आगे पड़ी है। मैं पीछे से गया, मैंने गोट पकड़ी, बढ़ी हुई गीट को ढ़क मारा और बाहर निकाल दिया। कई बार ऐसा होता है कि पौ पूरा पड़ा हुआ होता है। गोट प्रकाश में लीन हुई होती है। उसे खिलाड़ी वहां से लेकर उससे दूसरी को निकाल कर उसे कच्ची कर देता है। इस प्रकार ब्रह्म जो काल पुरुष है यह रचना करता रहता है और इसमें सुरत रूपी अंश फंसी रहती है और दुख सुख भोगती है।

नर्द सुरत चौरासी घर में।
भरमत फिरे दुःख और सुख में।

हारे ब्रह्म जीती माया।
जीव नर्द बहु विधि दुख पाया।

कैसे ब्रह्म हारे और कैसे माया जीती यह तो वह जानते होंगे मैंने जो समझा अपने कर्म भोग वश कहता हूं। आदमी मरने लगता है तो कोई भाग्यशाली ही होता है जिसके सामने प्रकाश आता है, नहीं तो सबके सामने रूप आते हैं किसी के सामने गुरु, गाय, पुत्र, स्त्री चाचा ताया या गांव, भाव यह कि मरने वालों के अन्तर प्राय: रूप ही आते है। भक्त जन को राम या कृष्ण आ गया वह राम कृष्ण तो नहीं थे माया थी। वह कहते हैं कभी कभी ब्रह्म की जीत होती है अन्यथा ब्रह्म हारता है और माया जीतती है। ब्रह्म प्रकाश है। कोई भाग्य-शाली ही होगा जिसके सामने अन्त समय प्रकाश आयेगा और वह प्रकाश में लीन हो जायेगा। अगर रूप आया और उसने उसे सत्य माना तो माया के चक्कर से नहीं निकल सकता जो इच्छा हो करता रहे। मुझे पता नहीं मेरा क्या परिणाम होगा, मैं कोशिश करता रहता हू।

प्र०- क्या सचमुच कोई उपाय है जिससे हम इस चक्कर से बच जायें ?

उ०- मैं दावा तो किसी बात का करता नहीं मगर बुद्धि मानती है और विज्ञान ने सिद्ध किया है कि मरने वाले को एक Sensitive Scale पर रखा। जब उसकी जान निकल गई तो कोई १५, कोई बीस और कोई बच्चीस ग्राम घटा और जो चीज़ अन्तर से निकली उन्होंने बाहर स्क्रीन पर एक विशेष प्रकार का मसाला लगा-कर निकलते हुये देखा। तो सिद्ध हुआ कि जो चीज़ अन्तर से निकली वह भारी थी। जो चीज़ भारी होगी उसे ज़मीन की कशश खींचेगी। अब प्रश्न उठता है कि वह भारी क्यों हुई ? उसका क्या अपना कोई वज़न है ? नहीं ! क्यों कहता हूं कि उसका वज़न नहीं है, क्योंकि जब मैं प्रकाश और शब्द को देखता हुआ दोनों को छोड़ जाता हूं तो मेरी जो अवस्था होती है, उसमें हैपना ही नहीं रहता। अंश कुल में मिल जाती है। अगर वह प्रकाश में भी जायेगी तो ज़मीन की कशश प्रकाश को नहीं खींच सकती

इसलिए जो प्रकाश का ध्यान करते हुये मरते हैं यद्यपि वे सदा के लिए पार नहीं जाते मगर ज़मीन उन्हें नहीं खींच सकती। अगर कोई चाहता है कि मैं आवागवन में न आऊं तो उसे क्या करना चाहिए ? उसे किसी सांसारिक पदार्थ या चीज़ से लगाव नहीं होना चाहिए। सुरत भारी क्यों होती है ? क्योंकि व्यक्ति का लगाव स्थूल चीज़ों, मां बाप, बहन भाई, बेटा बेटी, स्त्री मकान, फकीर वन्द की देह और मन्दिर, राम का देह जो दशरथ के घर पैदा हुआ था, अयोध्या, कृष्ण का देह जो गोकल में पैदा हुये, मुहम्मद जो मक्का में पैदा हुये, है तो जब उस की सुरत शरीर से निकलेगी तो भारी होगी। भारी होने के कारण ज़मीन की कशश उसको अपनी *Gravtty* से बाहर नहीं जाने देगी जो इच्छा है कर लो। लाख तुमने किसी गुरु की सेवा की हुई है और भक्ति की है वे इस चक्कर से नहीं निकल सकते। इस वास्ते ऋषियों ने शब्द ब्रह्म अर्थात शब्द का साधन बताया है अगर एक आदमी प्रकाश को भी देखता और शब्द को भी सुनता

है अगर उसका मोह स्थूल पदार्थ से है तो जब वह शरीर छोड़ेगा उसका सूक्ष्म शरीर भारी होगा और उसे दूसरा जन्म अवश्य मिलेगा। इसे कोई शक्ति नहीं रोक सकती। यह विज्ञान सिद्ध करता है।

इसके अतिरिक्त बाबा सावनसिंह जी कहा करते थे जिनको हरिद्वार से प्रेम है वे हरिद्वार की मछलियां बनेंगे। अब जिन को व्यास या होशियारपुर से प्रेम है वे वहीं पैदा होगे "अन्तमता सोगता" मुझे तो इस एक विचार से असलियत और सच्चाई का पता चला राय सालिगराम जी महाराज जिन्होंने राधास्वामीमत चलाया है, अपनी प्रेम बाणी में साफ लिख गये कि अन्त समय पर फिल्म चलती है: जिस गुरु से नाम लिया हुआ है वह भी आ जाता है, शब्द भी सुना देता है। कुछ समय ऊंचे लोकों में रहने के बाद जब कोई सन्त सत्गुरु आयेगा उसका फिर जन्म होगा और शेष कमाई पूरी करेगा। यही बात सनातन धर्म में लिखी है कि अखिरी आयु में सन्यास धारन करलो। सन्यासी को हुकम है कि एक जगह तीन दिन से अधिक न रहे ताकि उस जगह से मोह

न हो जाये। सब का नियम एक ही है मगर हमारी बुद्धि में यह बात बैठती नहीं। यह मेरी बुद्धि में नहीं बैठी, मैंने सारी आयु खो दी।

कभि कभि ब्रह्म जीत जो होई।
मर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई॥

इसका भाव यह है कि सुरत प्रकाश में चली गई।

चौपड़ से बाहर नहिं होई।
निज घर अपना पाये न कोई॥

इस निज घर ने मुझे मार दिया। वह निज घर क्या है जिसे स्वामी जी और कबीर साहिब ने बताया है? मैं सारी आयु ढूंडता रहा। जब तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है मैं तो होता नहीं, फिर मैं प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता हूं। जब कभी उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है तो फिर क्या हो जाता है? जब मैं वहां जाता हूं तो सब कुछ भूल जाता हूं। न वहां मैं न तू, न राम न कृष्ण और न गुरु न चेला। वह क्या अवस्था है, यह कहने

सुनने की बात नहीं, वहां सुख है। मगर मेरा क्या परिणाम हो मुझे पता नहीं, मैं कोशिश करता रहता हूं।

नथ खसम दे हथ।

मुझे संतमत के भेद का पता चल गया, इस में कोई सन्देह नहीं लेकिन वहां पहुंचना किसी के वश में नहीं मुझसे अभी तक भी वहां ठहरा नहीं जाता। अगर मैं आप से झूठ कहूं तो यह एक पाप और चोखा है।

मैं सोचता हूं जब तू वहां सदा नहीं ठहर सकता तो लोगों को उपदेश क्यों करते हो? एक डाक्टर को किसी बीमारी के इलाज का पता है, वह कई बीमारों को ठीक करता है लेकिन हो सकता है कि वह उसी बीमारी में ग्रस्त हो जाये जिसका वह *Expert* है और मर जाये, मगर उसका इलाज तो ग़लत नहीं है। इस लिए जो कुछ मैंने समझा है वह मेरी नियत अनुसार ग़लत नहीं है। मेरा क्या परिणाम हो, यह उसके हाथ में है मेरे हाथ में नहीं। मैं कोशिश करता रहता हूं। आज मस्तिष्क ठीक है

शायद कल विगड़ जाये। मैं क्या जानूं कल क्या होगा। बातें करना और भाषण देना सीख गया हूं, झूट पटांग बातें करता रहता हूं।

माया, ब्रह्म खिलाड़ी दोई।
खेलें इन नरदन से सोई॥

मैंने आपको बता दिया कि नर्द क्या चीज़ है। आपको प्रमाण दे दिया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। जब से पता लगा कि मेरे अन्तर जो कुछ भी प्रकट होता है चाहे प्रकाश, शब्द, रंग रूप उसकी साक्षी कोई और चीज़ है। वह और चीज़ सुरत है। वह इस शरीर में फंस कर रोती और चिल्लाती है। कभी खुशी आनन्द लेती है और दुख सुख भोगती है :—

भरमे नर्द पिटे और कुटे,
दुख उन का कोई नहिं सुने।
सभी नर्द पछतावें दम दम,
कैसे छूटें इन से अब हम।
करें फर्याद, दाद नहिं पावें,
रोवें झीखें और चिल्लावें।

क्या आप लोग ऐसा नहीं करते ? आज लड़की का विवाह नहीं हुआ, अठाईस साल की हो गई घर नहीं मिलता । किसी के पुत्र नहीं है, अमुक बीमार है । हम सब इन झगड़ों में फंसे हुये हैं । क्या मैं आप बरी हूं ? किसी की कोई नहीं सुनता ।

बार बार भरमें चौरासी,
कोई न काटे उन की फांसी।
श्रुति सिमृत और वेद पुरान,
सब ही मारें इन की जान ।

अब तुम सोचो, ब्राह्मण के घर पैदा हुआ । वे कहते हैं श्रुति शास्त्र वेद और पुराण सब जीवों की जान लेते हैं । मैं रोया करता था कि कहां फंस गया । अब मैं कहता हूं कि यह ठीक है । हमें जितने कर्म दान पुण्य धर्म बताये जाते हैं यह सब काल की फांसी है । अगर तुम आज इस नीयत से दान देते हो कि तुम्हें उसका फल मिले तो तुम्हे उसका फल लेने केलिए दूसरा जन्म लेना पड़ेगा । तुम परोपकार इस विचार सें करते हो कि तुम्हें उसका बदला मिले, उसका बदला लेने के लिए तुम्हें फिर आना पड़ेगा । इस वास्ते सब काम निष्काम होना चाहिए जिस प्रकार हम टट्टी पेशाब

जाते हैं उसी प्रकार दान देना, सहायता करना हमारा कर्तव्य है। उसका बन्धन नहीं होता। इसका प्रमाण मेरे पास अपना जीवन है। मुझे मंदिर, भण्डारी गोपालदास, नारायणदास कभी स्वप्न में नहीं आये मुझे अपने सखा से कितना प्यार है यह कभी स्वप्न में नहीं आया मगर रेल गाड़ी, तार, बीबी साहिबा, माता पिता और कभी २ लड़का, यह सारे अभी तक भी स्वप्न में आ जाते हैं, इससे क्या सिद्ध हुआ ? कि इनके साथ मैंने मोह किया है। अपने भखे पेट के लिए मोह और प्रेम किया हुआ, उसकी फोटो मेरे मस्तिष्क पर बनी हुई है। जब सुरत स्वप्न में अन्तर चली जाती है तो वे फिल्में बनती हैं। ऐसा नहीं कि वे मरे हुये आते हैं। अब जो काम मैं करता हूं यह निष्काम है। इसलिए इसका मुझपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हजारों आदमियों से मिल कर आया हूं जब तक तुम मेरे सामने हो, प्रेम, हंसी से बात करता हू जब तुम चले जाओगे I will forget you. who you are ? I dont know. आप कौन हैं मुझे पता नहीं।

माया काल बिछाया जाल।
अपने स्वारथ करें बेहाल॥

जिस प्रकार काल ने संसार पैदा करके खुशी ली है। उसी प्रकार सन्तान पैदा करके हम खुशी लेते हैं हम प्रातः से सायं तक क्या करते हैं? सोचो, अपने आप से पूछा करो। मैं अपना कर्म भोगता हूं किसी पर उपकार नहीं करता। अगर आप समझते हैं कि मेरी शिक्षा ग़लत है तो आप मत आया करो न मेरी कोई किताब पढ़ा करो।

कोई गोट न जावे घर को,
यहां ही खेल खिलावें सब को।

वह गोट क्या है? वह सुरत है। अगर आप अमल से नहीं जान सकते तो बुद्धि से तो समझ सकते हो। सुरत वह चीज़ है जो हमारे अन्तर प्रकाश को देखती, शब्द को सुनती और मन के खेलों को देखती है। उसका अपना आप घर है। जब वह इस संसार को भूल जाती है तो वह, वह हो जाती है जो पहले थी। इस वास्ते संत कहते हैं कि वह मालिके कुल ही मानव के अन्तर मौजूदा है। अगर तूम मालिक की सेवा करना चाहते हो तो इन्सान इन्सान की सेवा करे क्योंकि मानव के अन्तर ही वह सच्चा मालिक सुरत रूप में रहता है। सब से पहले उनकी सेवा करो जिनको

प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाश्रा हुश्रा है। तुम्हारे बूढ़े मां वाप, विधवा बह्म, कोई गरीब सम्बन्धी उनकी सेवा करो वह सच्चे मालिक की सेवा है।

सत्त पुरुष देखा यह हाल।
काल हुआ जीवन का काल॥
अपने स्वाद जीव भरमावें,
पता हमारा काहु न वतावें।

स्वामी जो को पता होगा कि उन्होंने क्या समझा जब मुझे कष्ट होता है तो मैं अपने आपको अलग समझ कर उस कष्ट को अपने से अलग समझता हूं। हर एक आदमी ऐसा ही समझता है या कि नहीं! ऐसे ही उस शक्ति परमतत्व का मुझे पता नहीं लगा। जब कभी मैं वहां जाता हूं तो न 'मैं; न तू रहता है, न मालिक न ब्रह्म, न गुरु न चेला। क्या रह जाता है? एक Oneness आ। जाती है। यही दाता दयाल ने कहा था :—

फकीरा : रूप तेरा अती प्यारा

मेरा वह रूप कौन सा या? वह रूप जो मेरे अन्तर प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता है।

वह मेरा और वही तुम्हारा रूप है। वह मुझे ज्ञान देने के लिए समझाते थे लेकिन मेरी समझ में नहीं आता था। आपकी दया से मेरी समझ में बात आ गई।

फकीरा : रूप तेरा अति प्यारा

तुम अपने आपको फकीर समझो। केवल फकीर चन्द का रूप ही अति प्यारा नहीं है तुम भी फकीर हो। तुम्हारा रूपसब से ऊंचा है। मैंने तुम्हें सत्संग में बहुत कुछ समझा दिया :-

तू सत चित्त आनन्द की मूरत, तू तीनों से न्यारा।

सत शारीरिक वोधभान को, चित्त मन के बोधमान को और आनन्द आध्यत्मिक वोधमान को कहते हैं। मैंने आप को बताया कि मुझे आप लोगों की दया से पता लगा। पहले मैं अपने आपको शरीर, फिर मन और फिर रूह समझता था। अब जब पता लग गया तो मैं न्यारा भी हूं और इन में भी हूं।

तेरी गती मती बुद्धि न जाने अटक रहे मंझधारा

असल में जो तुम हो जैसा मैंने आपको बताया है वहां तो बुद्धि नहीं जाती। बुद्धि कुछ नहीं कर सकती।

कर्म किया सत की चढ़ा घाटी चित्त में विवेक विचार

मैंने क्या कर्म किया ? दाता के चरणों में जाकर उनकी सेवा की। जो कुछ उन्होंने आज्ञा दी वैसा किया। उससे क्या हुआ ? विवेक और समझ आ गई कि न तू शरीर है न मन, न प्रकाश, तू तीनों से न्यारा है।

कर्म किया सत की चढ़ा घाटी चित्त में विवेक विचारा।
सत चित आनन्द बिलासा चहुंदिस हर्ष पसारा।

जब मानव को ज्ञान हो जाता है तो उसे जीवन्मुक्त अवस्था आ जाती है। क्यों ? क्योंकि वह संसार में रहता हुआ फंसता नहीं इसलिए वह प्रसन्न रहता है। कोई मरे कोइ जिये, किसी को लाभ हो चाहे घाटा पड़े वह चिन्ता नहीं करता। इसका भाव यह है।

तीन त्याग चौथे को धारे सो सब का आधारा।

कौन ? वह जो तुम्हारे अन्तर प्रकाश को देखती है उसका पता नहीं लगता था। ऐ सत्संगियो ! जो मुझे गुरु मानते हैं, मेरे पास देने को कुछ नहीं मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस प्रकार मैं आपकी

दया से आज़ाद हुआ, मालिक करे, तुम भी आज़ाद हो जाओ। इसके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं।

द्वन्द जगत त्रिपुटि की त्रिकुटि छोड़ चला घरबारा।

जब से विवेक हो गया है। तब से घर बार छोड़ जाताहूं। मेरा घर बार मेरा शरीर है। मैं जानता हूं कि यह मेरा घर नहीं है। मन भी मेरा घर नहीं है। मैं इन सबमे अलग हूं।

नहीं तू दोय नहीं तीन चार है नहीं है सहस हज़ारा।
एक एक है एक एक है, जाने जानन हारा॥

केवल इस विचार से कि में किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जीवन बदल गया। इसी परदे को रखकर इन महात्माओं, गुरुओं, धर्मों, पंथों, पण्डितों और मोलविलों ने हमें लूटा है और मूर्ख बनाया है। हम लोग मूर्ख वनने में प्रसन्नता लेते हैं।

राधास्वामी रूप लख अपना तू व्यापक संसारा।

इस रूप का पता नहीं लगता था। इसका पता तुम लोगों से लगा। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। हो सकता है जो कुछ मैंने समझा हो सारा ग़लत हो। मुझे मान प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं है। मैं पिछले

जन्म के कर्म भोगता हूं और खुश रहता हूं। दाता! आपने काम दिया था कर चला। मैंने ठीक किया या ग़लत मेरी नीयत साफ है। ये बेचारे आते हैं इनकी मनोकामनाओं को तू ही पूर्ण कर। मेरे पास सिवाये शुभ भावना के और कुछ नहीं। जिस जिस इच्छा को लेकर ये आये हैं इनकी इच्छायें पूर्ण हो।

सबको राधास्वामी!

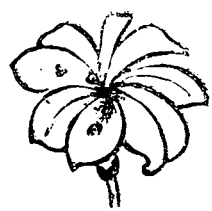

नोट

कर्म भोगवश अथवा गुरु आज्ञा-वश सन्तमत में आने से जो समझा वह कहा। मगर मेरे पास कोई प्रमाण नहीं कि जो इस सन्तमत को समझ के मरे वह कहां गये। कबीर साहिब ने भी लिखा है :-

उत्त ते कोई आया, जा से पूछूं जाय।
इत ते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय।

वह कहते हैं कि किसी ने वहां से लौट कर हम को कुछ बताया नहीं मगर आगे क्या कहते हैं।

उत्त ते सत्गुरु आया, जा की बुद्धि मति धीर।
भव सागर के जीव को, खे लगावे तीर।

हो सकता है कबीर, स्वामी जी, मैं अथवा किसी और महापुरुष ने सब का खण्डन करके किसी उंची अवस्था का ज़िकर अपने निज अनुभव के आधार पर किया हो मगर सिवाये अनुभव के और कोई सबूत नहीं क्योंकि ऐसे महापुरुष मुड़ कर नहीं आये इसलिये ६२ वर्ष की आयु में जो कुछ मैंने सन्तमत को समझा सब भूल रहा है। केवल 'शरणागत' बाकी रह गया। इस ससार का कोई आधार है वह क्या है क्या नहीं! सन्तों ने अपना अनुभव कहा, रिषियों ने अपना अनुभव कहा। वास्तव में

क्या है ? मैं कुछ नहीं कह सकता। इसलिए अब इस बुढ़ापे में अब मेरा साथी केवल 'शरणागतम' रह गया। साधन करता करता, सोचता सोचता अब थक गया। केवल शरणागतम बाकी है और चाहता हूं कि मालिक सामर्थ्य दें जब प्राण निकलें मैं जहां जाऊ, जो कुछ मेरे साथ बीते वह किसी न किसी रूप में संसार को बता जाऊं। बस यह मेरे ९२ वर्ष का अन्तिम अनुभव है।

फकीर

ईमान्दार कौन है

लेखक :— सेठ दुर्गा दास साहिब चन्डीगढ़ ।

परम दयाल जी महाराज, होशियारपुर के हर संत्संग में नये नये नुक्ते, सूक्षम ज्ञान की किरणें और सारगर्भित विचार होते हैं। सुनने वालों को सच्चाई और हकीकत का निश्चय हो जाता है, आखर गुरु का तात्पर्य यही है कि शिष्य को ज्ञान का पूर्ण निश्चय हो जाये, बस इस से अधिक और नहों, वाकी सब बातें मन को आनन्द देने वाली हैं ।

आज के सत्संग में बहुत तर्कपूर्ण भेद प्रकट किये। जिस में से एक नुक्ता मैं लिखना चाहता हूं, ताकि सब भाई इस से लाभ उठा सकें ।

लिखने से पहले मैं अर्ज़ करना चाहता हूं कि महाराज जी का फ़रमान है कि इन का सत्संग हंसों, परम हंसों, सन्तों, परम सन्तों और गुरुओं के लिये है जो समझदार वर्ग के लोग हैं वही इन की बात को ग्रहण कर सकते हैं ।

एक दुकानदार या व्यापारी या कारखानेदार यथा शक्ति काम करता है, साल के बाद वह अपने काम काज का हिसाब लगाता है, घर मकान कारखाना आदि का सब खर्च निकाल कर हज़ारों लाखों रुपये का लाभ निकालता है। लोगों से अपनी आवश्यकताओं से अधिक लाभ उठाना, क्या लूट नहीं है ? क्या यह लूट नहीं है ? आप इस को क्या कहोगे ? क्या यह भ्रष्टाचार नहीं है ? कबीर साहिब फरमाते हैं :-

कबीर सोहे इतना दीजिये जितना कुटुम्ब समाय।
न भूका मैं रहू न भूका साधु जाये ॥

किसी सज्जन को किसी पहाड़ की सैर करते समय एक चशमा का पता लग गया, उसने प्रसिद्ध कर दिया कि यहां पर शिव जी महाराज का निवास्थान था, वह इस कुन्ड में स्नान किया करते थे। जो इस कुन्ड में स्नान करेगा, उस के सब पाप दूर हो जायेंगे। बात ज़ोर पकड़ गई इर्द गिर्द के इलाका में यह बात प्रसिद्ध हो गई, सारे देश में पता चल गया, लोगों का आना जाना स्नान करना शुरू हो गया, आखर यह दुनियां भेड़ चाल तो है। उस सज्जन ने

लाखों का धन लोगों से इक्ट्ठा किया, वहां पर यात्रियों के लिये स्नान के लिये घाट और ठहरने के लिये धर्मशाला बनाये। बड़ी ईमान्दारी से इस सज्जन ने काम किया। स्वाल है, क्या यह भ्रष्टाचार नहीं है? क्या यह लूट नहीं है। लोगों को असलीयत का पता न देकर, इन को भूल में रख कर, इन की अनसमझी का लाभ उठा कर कि नहाने से पाप कट जायेंगे, रुपया इक्ट्ठा किया गया हालांके सचाई यह है कि हर बुरे कर्म की सज़ा ज़रूर मिल कर रहेगी :-

कर्म गति टारे नहिं टरे।

आप कहते हैं और समझते हैं कि यह लड़का आप का पुत्र, आप के हां उसने जन्म लिया, असलीयत से आप अच्छी तरह जानकार हैं कि आप ने इस संसार से कूच कर जाना है और बाप व बेटा का सम्बन्ध सदा के लिये टूट जाएगा। फिर यह रिशता कहां रहा, यह तो बिल्कुल झूठ है, रिश्ता कोई नहीं, अपना कोई नहीं है इस दुनियां में, यह सच्चाई है। पता नहीं कौनसा भुगतान करने के लिये इस ने आप के घर जन्म लिया है। किसी चीज को अपनाना जो

अपनी नहीं, कहां की इमान्दारी है। क्या आप इमान्दार हैं ?

घर आप का नहीं। भले मकान आपने बनाया हो आप का इस पर अधिकार है मगर सच्चाई क्या है, होता क्या है, आप मर गये घर छोड़ गये, यदि सन्तान नहीं है तो इस मकान की खैर न समझो और अगर सन्तान अच्छी न निकले तो भी खैर नहीं। आप का मकान कैसे हुआ, आप तो केवल मुसाफ़िर हैं, अगर आप अपने को मुसाफ़िर समझते हो तो ठीक है नहीं तो यह भी बेईमानी है, जो चीज़ आप की नहीं है, उस पर मन जमाना बेईमानी है।

आप ज़िमींदार हैं, ज़मीन की पैदावार में से घर का खर्च चलाते हो, कमाई में से मकान भी बना लिया और ज़मीन भी खरीद ली। इन्जन लग गया, ट्रैक्टर खरीद लिये, अगर अब भी आप अधिक मूल्य पर धान बेचते हैं तो केवल धन इक्ट्ठा करने के लिये, तो क्या यह लूट नहीं है, क्या यह भ्रष्टाचार नहीं है, आप इस को क्या कहोगे।

आप सरकारी कर्मचारी हैं, पांच छे सौ रुपया मासिक वेतन लेते हो, रहने के लिये मकान है। भाई बहन सब नौकर हैं, बच्चे बढ़िया वेतन प्राप्त कर

रहे हैं, आराम का जीवन आप व्यतीत कर रहे हैं आप ने कभी सेवा कार्य नहीं किया, कभी कुछ दान नहीं दिया, कभी किसी ग़रीब की मदद नहीं की, हर एक को आप से शिकायत है। आप पब्लिक को तंग करते हैं। उन का कभी समय पर आप ने सरकारी काम नहीं किया, कभी पब्लिक का ईमान्दारी से काम नहीं किया, सदा आजकल करते रहे है, देर लगाते रहे, बहाना बाज़ी करते रहे, फिर भी आप हड़ताल में शामिल हैं, वेतन में तरक्की माग रहे हैं आप को कभी इश्वर याद नहीं आया कि हमारे दश में ऐसे इन्सान भी हैं, जो रोटी के लिये तरसते हैं, क्या इन का कोई अधिकार नहीं है, क्या यह (Strike) हड़ताल करना भ्रष्टाचार नहीं हे तो और क्या है ?

कई मज़हबी लीडर, महन्त और आश्रमों के गुरु यह दावा करते हैं कि इन की शरन में आ जाओ इन से नाम ले लो, इन पर विश्वास करो, वह तुम को स्वर्ग ले जायंगे, वहां पर स्वर्ग में नहरें होंगी, वहां पर अंगूर और खजूर के वृक्ष होंगे और हूरें मिलेंगी या यह दावा करते हैं कि आप के पाप नष्ट हो जावेंगे या आप के बुरे कर्मों की सज़ा नहीं मिलेगी

या आप मुक्त हो जावेंगे, सतलोक पहुंच जाओगे। मरते समय आप को लेने आवेंगे (यह सब कुछ सिधान्त के विरुद्ध है) ऐसा कह कर अज्ञानी जीवों को, भोले भाले इन्सानों को अपने पीछे लगा कर उनसे रुपया इकट्ठा किया जाता है मत्थे टिकवाये जाते हैं, उनको अपने अधीन किया जाता है। अपनी जायदादें बनाई जा रही हैं, मोटरें स्वारी के लिये, नौकर चाकर सेवा के लिए है. कीमती वेष भूषा है सुख विलास की सामग्री प्राप्त है। इन के द्वारा किये गये दावों की सच्चाई का पता आसानी से लगाया जा सकता है। ज़रा इन मज़हवी लीडरों की ज़िन्दगियों का अध्ययन करो, यह आप बीमारी से न बच सके, अपने रिश्तेदारों, लड़को और लड़कियों को बुराई से न बचा सके और इन के सामने, इन के सम्बधियों की मौत हो गई यह उनको मौत से न बचा सके।

इन से नाम लेने वालों को देखो, इन की हालत देख कर तरस आता है। इन विचारों ने अपना धन गंवाया, भेंट चढ़ावा देते रहे, अब भेड़ चाल से निकलना कठिन, हो रहा है, खाली हाथ रह गये,

मिला कुछ नहीं, मन में अशान्ति है, आने वाले जीवन की आशायें समाप्त हो रही हैं, यह जन्म असफ़ल रहा, "धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का;;

जा को दर्शन इत हैं, ताको दर्शन उत ।
जा को दर्शन इत नहीं, ताको इत न उत ।'

क्या यह बेईमानी नहीं, क्या यह भ्रष्टाचार *Corruption* नहीं, क्या यह धोखा नहीं, जीवों को भविष्य का लालच देकर, इन के सादापन का लाभ उठा कर, इन के विश्वास का ग़लत लाभ उठा कर, इन को सचाई न बता कर, इन को अन्धकार में रख कर, इन के माल व धन पर दिन दहाड़े डाका डाला जाता है । इन को दीन अधीन बनाया जाता है, इन को स्वतन्त्र नहीं किया जाता। क्या यह *Corruption* नहीं ?

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

जो पत्र श्री गोपाल दास मे हजूर महाराज परम दयाल जी को सन् 1956 में लिखा। ऐ मेरे परम तत्व आधार मालिक-ऐ-कुल के रूप में।

हे दाता तूने जीव को बगैर कर्म के अपनी ख्वाहिश अनुसार जीव को समुद्र से कतरा समुद्र बना करके इस काल रूपी माया के पिंजरे में फंसा दिया तो शास्त्र कहते हैं अथवा बाणी व महापुरुष कहते हैं कि जीव बगैर कर्म मालिक की प्राप्ती नहीं कर सकता। ऐसा क्यों ?

जबकि जीव को अपनी ख्वाहिश अनुसार समुद्र से कतरा समुद्र बना करके जीव को काल रूपी माया के पिंजरे में फंसा दिया तो जीव का पैदायशी हक है कि बगैर कर्म के मालिक की प्राप्ती करे। मैं आस्तिक हूं, नास्तिक नहीं। गुरु परायण हूं। मेरा संशय भी कुछ नहीं परन्तु फिर भी जब सुरत देह में रहती हुई अशांत हो जाती है तो इस अशान्त अवस्था को शान्त

करने के लिये आप के दस्ते मुबारिक की एक लैटर चाहता हूं।

यही संकल्प है दिल मेरे में,
निज रूप मुझे दरसाओ पिया।
मैं कौन हूं, क्या हूं, किस जगह से आया हूं,
क्या काम मेरा यहां आने का।
ज़रा खोल के तुम समझा दो पिया।
जिस देश का मैं प्रीतम, बासी हूं,
वह देश मुझे दरसावो पिया।
भूल भरम में खा भटके,
निज रूप को अपने भूला पिया।

यह पत्र पूज्य परम दयाल जी ने पढ़ कर जो उत्तर दिया वह निम्नलिखित है।

ऊपर के पत्र की नकल अन्य महापुरुषों को भेजी गई। परन्तु इनके सिवा किसी ने जवाब नहीं दिया।

उत्तर परम दयाल जी का :—

अज़ीज़ गोपालियां,

राधास्वामी।

खुश रहो। फारगुल बाग-बासेहत, पत्र तम्हारा मिला, जवाब लिख रहा हूं। अभ्यास के समय बार-

बार पढ़ो, कुछ दिनों के बाद जो अनुभव हो लिखना।

तू हर वक्त मुझ में रहता है,
जैसे मछली पानी में अज़ीज।
भरम व अज्ञान बस क्यों दूर समझे,
मुझ को अज़ीज।

ज्यूं जल में मीन प्यासो, मोहे सुन सुन आवे हांसी,
क्या यह बाणी ठीक कह नहीं रही है मेरे गोपाल अज़ीज।
मैं तुम्हारे जिस्म में हूं, मन में हूं, रूह में हूं,
बाहर भटकना है लिखा कहां बतादे मेरे अज़ीज।
बाहरी चोला मुरशद का, मकसद दरअसल है फक्त ये,
इन्सान को बाहर मुखता से अंतर मुखी बना दे अज़ीज़।
काम कर, काम कर जब तक जिस्म, दिल, रूह साथ है,
दर असल तू आप नवाज़े ज़ात अनामी है अज़ीज।

फकीर चन्द

बार बार इस पत्र को पढ़ने से अभ्यास में जो मुझे अनुभव हुआ, अगले पत्र में पूज्नीय परम दयाल जी को लिख दिया।

पत्र श्री गोपाल दास जी का हज़ूर परम दयाल जी के नाम, अभ्यास के बाद।

समझा न मैं जब दूर समझा, समझ लिया दातार तुझ को।
तू ही है, तू ही है बस पा लिया है दातार तुझ को।

भरम व अज्ञान बस लिख रहा था, रूप का परिचय दिया मुझको।
ठीक हूं मैं ज़ात अनामी, समझा जो आया लिख दिया तुझको।
तमव्वज से पैदा हुआ यह बुलबुला (गोपाल दास) मिट जायेगा।
विश्वास से है आस बनती आस में छिप जायेगा।
आस हो गर विश्व को तो विश्व में ही आयेगा।
ज़ात में है आस गर तो फिर ज़ात में मिल जायेगा।

नोट :—अगर कोई मनुष्य दुनियां के स्थूल पदार्थों से प्यार करेगा या मोह करेगा तो वह आवागवन से नहीं छूट सकेगा।

आप की
गोपालियां

प्रार्थना

मैंने अपने कर्म भोगवश या गुरु आज्ञावश या भगवान की इच्छानुसार बिना किसी निज स्वार्थ यह मानवता मन्दिर बनाया है। मकड़ी का जाला बन गया, ब्राह्मण होने के नाते मैं अपना निज अनुभव जिस का नाम ज्ञान है बेचना नहीं चाहता। यही कारण है कि मानव मन्दिर पत्रिका के प्रकाशन का मैंने कोई मूल्य नहीं रखा। हां! जो पुस्तकें, मनुष्य बनो व दयाल आदि जिनमें मेरे विचार छपते हैं उन का मूल्य अवश्य है किन्तु उस मूल्य का मानवता मन्दिर से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मैंने फ्री हस्पताल गरीबों के लिये खोले। इस पर लग भग चालीस हजार रुपया एलोपैथिक दवाईयों पर खर्च हुआ है और मानव मन्दिर को तीन हजार प्रतियां हर महीने भेजी जाती हैं। मैं बूढ़ा हो गया शारीरिक अवस्था दिन प्रति दिन कमजोर हो रही है। इसलिये प्रार्थना करता हूं कि जिन सज्जनों की

मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने में रुची हो और इस से उनको कुछ लाभ पहुंचता हो केवल वही मंगवायें, और जो इच्छा हो इसके प्रकाशन में सहायता करें।

कर्म भोग है। जब तक चलता है चलाने के लिए विवश हूं। यदि सच पूछो तो मित्रो! मैं यह देखना चाहता हूं कि सच्चाई का क्या परिणाम होता है। मेरी हार्दिक इच्छा यह रहती है कि जीवों को सेहत मिले, खाने को मान प्रतिष्ठा सहित रोटी मिले और मन को शान्ति मिले। रह गई रूहानियत, यह तो किसी किसी के भाग्य में आती है।

फकीर!

प्रार्थना

मैंने अपने कर्म भोगवश या गुरु आज्ञावश या भगवान की इच्छानुसार बिना किसी निज स्वार्थ यह मानवता मन्दिर बनाया है। मकड़ी का जाला बन गया, ब्राह्मण होने के नाते मैं अपना निज अनुभव जिस का नाम ज्ञान है बेचना नहीं चाहता। यही कारण है कि मानव मन्दिर पत्रिका के प्रकाशन का मैंने कोई मूल्य नहीं रखा। हां! जो पुस्तकें, मनुष्य बनो व दयाल आदि जिनमें मेरे विचार छपते हैं उन का मूल्य अवश्य है किन्तु उस मूल्य का मानवता मन्दिर से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मैंने फ्री हस्पताल गरीबों के लिये खोले। इस पर लग भग चालीस हज़ार रुपया एलोपैथिक दवाईयों पर खर्च हुआ है और मानव मन्दिर को तीन हज़ार प्रतियां हर महीने भेजी जाती हैं। मैं बूढ़ा हो गया शारीरिक अवस्था दिन प्रति दिन कमज़ोर हो रही है। इसलिये प्रार्थना करता हूं कि जिन सज्जनों की

मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने में रुची हो और इस से उनको कुछ लाभ पहुंचता हो केवल वही मंगवायें, और जो इच्छा हो इसके प्रकाशन में सहायता करें।

कर्म भोग है। जब तक चलता है चलाने के लिए विवश हूं। यदि सच पूछो तो मित्रो! मैं यह देखना चाहता हूं कि सच्चाई का क्या परिणाम होता है। मेरी हार्दिक इच्छा यह रहती है कि जीवों को सेहत मिले, खाने को मान प्रतिष्ठा सहित रोटी मिले और मन को शान्ति मिले। रह गई रूहानियत, यह तो किसी किसी के भाग्य में आती है।

फकीर!

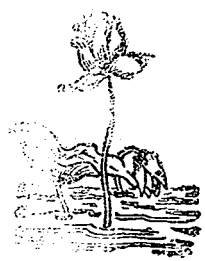

फकीर लायब्रेरी चैरी टेबल ट्रस्ट द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य :-

1. मानव मन्दिर हिन्दी
2. अयम का भेद हिन्दी
3. Essence of Trtuh English.
4. ਪੜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। ਪੰਜਾਬੀ
5. संतमत लेखमाला भाग १ हिन्दी
6. संतमत लेखमाला भाग २ हिन्दी

मिलने का पता

सेक्रेटरी

मानवता मन्दिर

होशियारपुर।

ਪੁਸਤਕ 'ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ ਬਾਰੇ ਕੁਝ ਵਿਚਾਰ।

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਪਰਮ ਦਿਆਲ ਪੰਡਤ ਫਕੀਰ ਚੰਦ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਦੀ ਹਿੰਦੀ ਪੁਸਤਕ "ਪਾਂਚ ਨਾਮ ਕੀ ਵਿਆਖਿਆ" ਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਅਨੁਵਾਦ ਹੈ ਜੋ ਪੰਜਾਬੀ ਪਾਠਕਾਂ ਦੇ ਲਾਭ ਹਿਤ ਛਾਪੀ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਟ੍ਰਸਟ ਵਲੋਂ ਸਾਧਕਾਂ ਅਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਰੂਚੀ ਰੱਖਣ ਵਾਲਿਆਂ ਅਤੇ ਮੁਫਤ ਵੰਡੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਕਿੰਨਾ ਚੰਗਾ ਹੋਵੇ ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੁਫਤ ਲੁਟਾਏ ਜਾ ਰਹੇ ਅਨਮੋਲ ਮੋਤੀਆਂ ਦਾ ਮੁੱਲ ਪਾ ਸਕੇ। ਉਹ ਮੁੱਲ ਕਿਵੇਂ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ? ਕੇਵਲ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਇਸ ਵਿਚ ਵਰਨਣ ਕੀਤੇ ਅਨੁਭਵਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਢਾਲ ਕੇ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਅਨੁਸਾਰੀ ਬਣਾਕੇ।

ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਅੱਖੋਂ ਉਹਲੇ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਅੱਜ ਦੇ ਪੰਥ ਅਤੇ ਸੰਪ੍ਰਦਾਏ ਕਰਮ-ਕਾਂਡ ਅਤੇ ਬਾਹਰੀ ਰਹੁ-ਰੀਤਾਂ ਵਿਚ ਉਲਝ ਕੇ ਧਰਮ ਦੇ ਅਸਲੀ ਸਾਰ ਅਤੇ ਤੱਤ ਨੂੰ ਭੁਲ ਚੁਕੇ ਹਨ। ਧਰਮਾਂ ਦੇ ਬਾਹਰੀ ਸਰੂਪ ਦੇ ਨਿਰੰਤਰ ਅਭਿਆਸ ਨੇ ਉਨਾਂ ਦੇ ਅਨੁਯਾਈਆਂ ਨੂੰ ਇਸ ਹੱਦ ਤੱਕ ਬਾਹਰਮੁਖੀ ਬਣਾ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ

ਧਰਮ ਦਾ ਵਾਸਤਵਿਕ ਤੱਤ ਸਮਝ ਕੇ ਇਸਦੀ ਵੱਖਰਤਾ ਦੇ ਕਾਰਨ ਆਪੋ ਵਿਚ ਲੜ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਧਰਮ ਦਾ ਆਧਾਰ ਲੈਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮਾਨਵ ਬਣਨਾ ਸੀ ਉਹ ਧਰਮ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਾਨਵਤਾ ਦੀ ਡੂੰਘੀ ਖੱਡ ਵਿਚ ਨਿਘਾਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਧਰਮ ਦਾ ਕੋਈ ਦੋਸ਼ ਨਹੀਂ, ਦੋਸ਼ ਹੈ ਮਨੁਖੀ ਸਮਝ ਦਾ।

ਸਭ ਧਰਮਾਂ ਦਾ ਅਸਲੀ ਅਤੇ ਸੱਚਾ ਸਰੂਪ ਅਧਿਆਤਮਕ ਅਨੁਭਵ ਹੈ ਜੋ ਸਾਰੇ ਧਰਮਾਂ ਵਿਚ ਇੱਕੋ ਹੀ ਹੈ। ਉਸ ਪਰਮ-ਤੱਤ, ਪਰਮਾਤਮਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਨੂੰ ਸਾਰੇ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਮਹਾਂ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਅਤੇ ਧਰਮ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਅਤੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮਨੁਖੀ ਆਤਮਾ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦਸਿਆ ਹੈ ਜਿਸਦੀ ਲਖਤਾ ਕਿਸੇ ਤੱਤ-ਦਰਸ਼ੀ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ ਦੀ ਆਗਿਆ ਵਿਚ ਚੱਲਣ ਨਾਲ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ ਸਾਧਕ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਵਹਿਮ ਜਾਂ ਭਰਮ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਫਸਾਉਂਦਾ ਸਗੋਂ ਇਕ ਵਿਗਿਆਨਕ ਸਲਾਈ ਵਾਂਗ ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਤਰੀ ਸਤਿ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਪ੍ਰਤਖ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕਰਵਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬ, ਪਲਟੂ ਸਾਹਿਬ ਆਦਿ ਸੰਤਾਂ ਨੇ ਸੁਰਤ-ਸ਼ਬਦ-ਯੋਗ ਦੇ ਸਹਿਜ-ਮਾਰਗ ਦੁਆਰਾ ਉਸ ਪਰਮ-ਤੱਤ ਨੂੰ ਅਨੁਭਵ ਕਰਨ ਸਬੰਧੀ ਸੰਕੇਤ ਆਪਣੀਆਂ ਬਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਦਿੱਤੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੀ ਸਪਸ਼ਟ

ਰੂਪ ਵਿਚ ਵਿਆਖਿਆ ਰਾਧਾ ਸੁਆਮੀ ਦਿਆਲ ਨੇ 'ਸਾਰ ਬਚਨ' (ਕਾਵਿ ਭਾਗ) ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਹੁੰਦਿਆਂ ਵੀ ਅੱਜ ਕੱਲ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਬੁੱਧੀ ਰੱਖਣ ਵਾਲਿਆਂ ਲਈ ਅਧਿਆਤਮਕਵਾਦ ਇਕ ਮਾਨਵੀ ਖਬਤ ਤੇ ਵਹਿਮ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਪਰਮ ਦਿਆਲ ਪੰਡਤ ਫਕੀਰ ਚੰਦ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਇਸ ਥੁੜ ਨੂੰ ਅਨੁਭਵ ਕਰਦਿਆਂ ਅਤੇ ਵਰਤਮਾਨ ਸਮੇਂ ਦੀ ਮੰਗ ਨੂੰ ਮੁਖ ਰਖਦਿਆਂ 'ਸਾਰ ਬਚਨ' (ਕਾਵਿ ਭਾਗ) ਵਿਚ ਵਰਨਣ ਕੀਤੀਆਂ ਪੰਜ ਅਧਿਆਤਮਕ ਮੰਜ਼ਲਾਂ ਦਾ ਵਿਆਖਿਆ ਆਪਣੀ ਅਦੁਤੀ ਪੁਸਤਕ 'ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ' ਵਿਚ ਬੜੇ ਵਿਸਥਾਰ ਨਾਲ ਅਤੇ ਸਪਸ਼ਟ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਵਿਸ਼ੇਸਤਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਨਵੀਨਤਮ Patest ਵਿਗਿਆਨਕ ਸਿਧਾਂਤਾ ਦੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਵਿਚ ਹਰੇਕ ਅਨੁਭਵ ਦੀ ਨਿਰਖ-ਪਰਖ ਕਿਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ Psychological ਪੱਖ ਦੀ ਸਚਾਈ ਨੂੰ ਵੀ ਅਖੋਂ ਉਹਲੇ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿਤਾ ਅਤੇ ਪੁਸਤਕ ਦੀ ਸਾਰੀ ਸ਼ੈਲੀ ਤਰਕ-ਪੂਰਣ ਅਤੇ ਦਲੀਲ ਕਸੱਵਟੀ ਉਤੇ ਪੂਰੀ ਉਤਰਨ ਵਾਲੀ ਹੈ, ਜਿਹੜੀ ਕਿ ਇਸ 'ਵਿਗਿਆਨਕ ਯੁਗ ਦੇ ਪ੍ਰਾਣੀ ਨੂੰ ਪੂਰਨ ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਦਿੰਦੀ ਹੈ. ਕਿਸੇ ਦਲੀਲ ਪਾਠਕ ਉਤੇ ਠੋਸਿਆ ਨਹੀਂ ਗਿਆ ਅਤੇ ਨਾਂ ਕੋਈ ਗਲ ਜੋਰੀ-ਜਬਰੀ ਮਨਵਾਉਣ ਲਈ ਹੇਠ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਸਗੋਂ

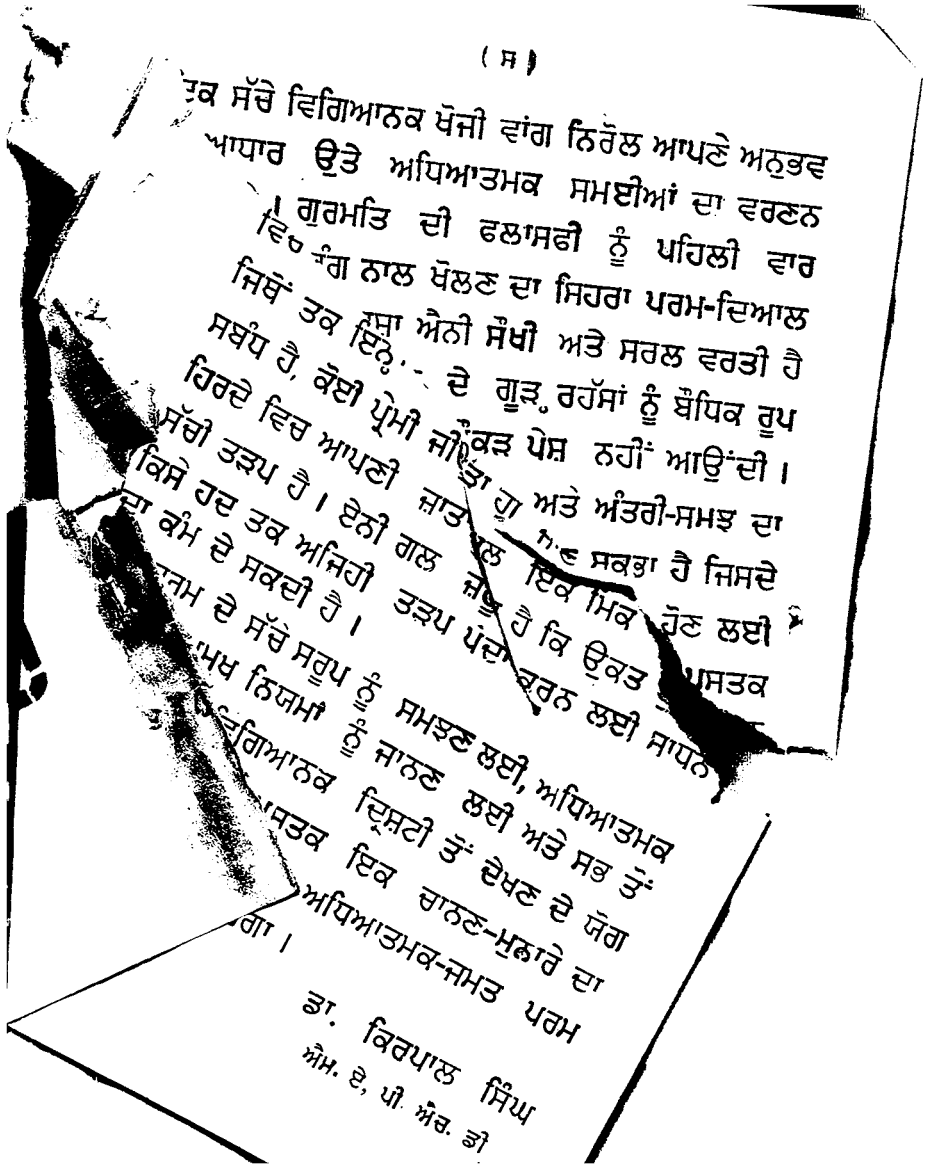

ੲਕ ਸੱਚੇ ਵਿਗਿਆਨਕ ਖੋਜੀ ਵਾਂਗ ਨਿਰੋਲ ਆਪਣੇ ਅਨੁਭਵ ਆਧਾਰ ਉਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਸਮਈਆਂ ਦਾ ਵਰਣਨ । ਗੁਰਮਤਿ ਦੀ ਫਲਾਸਫੀ ਨੂੰ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਵਿ... ਰੰਗ ਨਾਲ ਖੋਲਣ ਦਾ ਸਿਹਰਾ ਪਰਮ-ਦਿਆਲ ਜਿਥੋਂ ਤਕ ਇਨ੍ਹਾਂ ਐਨੀ ਸੌਖੀ ਅਤੇ ਸਰਲ ਵਰਤੀ ਹੈ ਸਬੰਧ ਹੈ, ਕੋਈ ਪ੍ਰੇਮੀ ... ਦੇ ਗੂੜ੍ਹ ਰਹੱਸਾਂ ਨੂੰ ਬੌਧਿਕ ਰੂਪ ਜੀਂਕਰ ਪੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ। ...ਹੂ ਅਤੇ ਅੰਤਰੀ-ਸਮਝ ਦਾ ...ਣ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਹਿਰਦੇ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਜ਼ਾਤ ਨਾਲ ਇਕ ਮਿਕ ਹੋਣ ਲਈ ਸੱਚੀ ਤੜਪ ਹੈ। ਏਨੀ ਗਲ ਜ਼ਰੂਰ ਹੈ ਕਿ ਉਕਤ ਪੁਸਤਕ ਕਿਸੇ ਹਦ ਤਕ ਅਜਿਹੀ ਤੜਪ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸਾਧਨ ਦਾ ਕੰਮ ਦੇ ਸਕਦੀ ਹੈ।

...ਰਮ ਦੇ ਸੱਚੇ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ, ਅਧਿਆਤਮਕ ...ਮੁਖ ਨਿਯਮਾਂ ਨੂੰ ਜਾਨਣ ਲਈ ਅਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ...ਗਿਆਨਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਵੇਖਣ ਦੇ ਯੋਗ ...ਸਤਕ ਇਕ ਚਾਨਣ-ਮੁਨਾਰੇ ਦਾ ...ਗਾ। ਅਧਿਆਤਮਕ-ਜਮਤ ਪਰਮ

ਡਾ. ਕਿਰਪਾਲ ਸਿੰਘ
ਐਮ. ਏ, ਪੀ. ਐਚ. ਡੀ

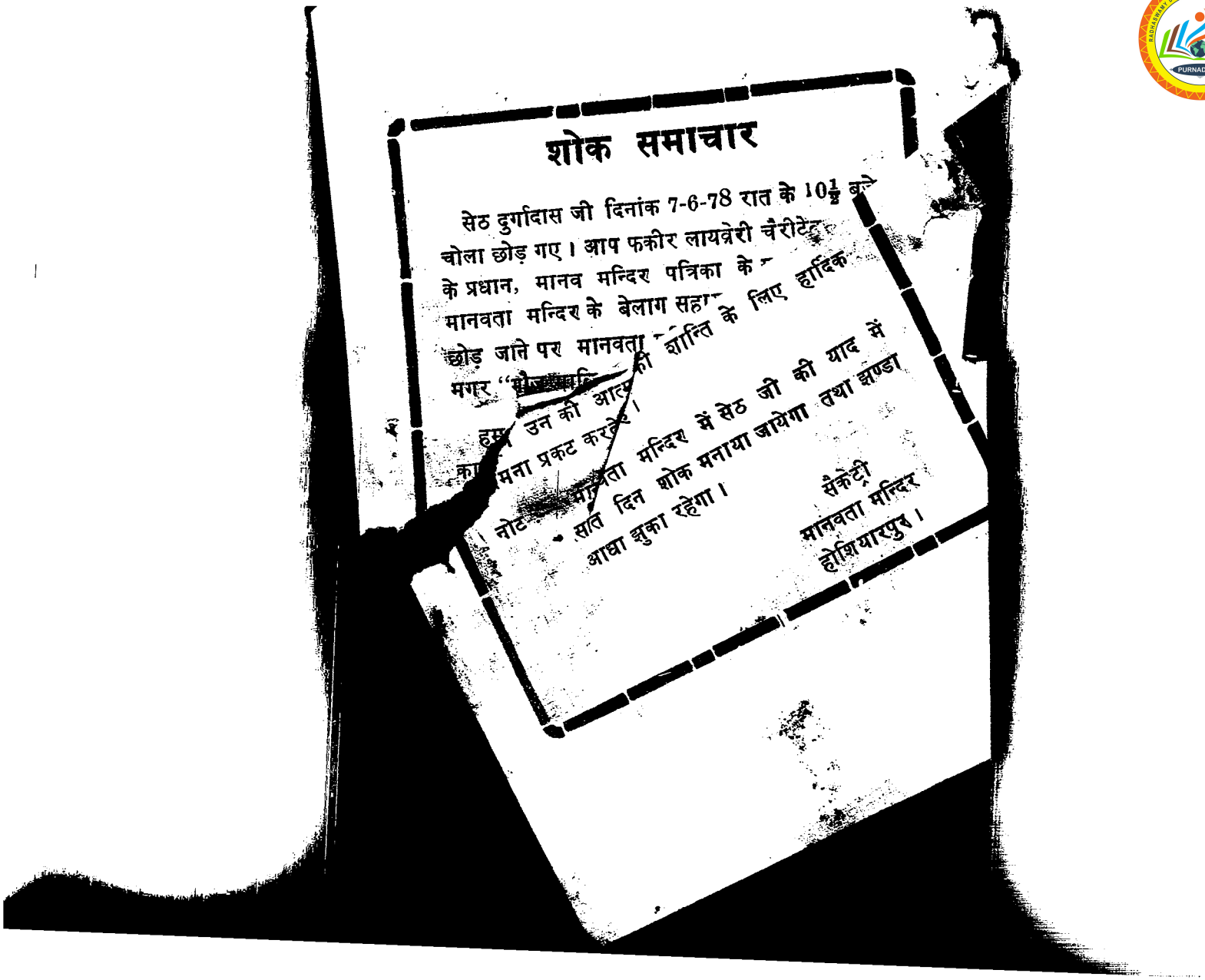
शोक समाचार
सेठ दुर्गादास जी दिनांक 7-6-78 रात के 10½ बजे
चोला छोड़ गए। आप फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल
के प्रधान, मानव मन्दिर पत्रिका के
मानवता मन्दिर के बेलाग सहा
छोड़ जाने पर मानवता
मगर "
हम उन की आत्मा की शान्ति के लिए हार्दिक
कामना प्रकट करते हैं।
नोट - मानवता मन्दिर में सेठ जी की याद में
सात दिन शोक मनाया जायेगा तथा झण्डा
आधा झुका रहेगा।
सैक्रेटरी
मानवता मन्दिर
होशियारपुर।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

ADDRESS

To

415. Sh (Gangadhar)
Presidant Radha Sowami
Satsang Pitlam
via Nizamsagar,
Nisamabad. (A.P.)

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022